04 - लोकसभा चुनाव में नये अध्याय की शुरुआत हो

05 - राजस्थान का लोकोत्सव गणगौर

A Daily News Magazine

भोपाल

गुरुवार, 11 अप्रैल, 2024

06- केवल बसपा प्रत्याशी हेतु होगी नॉमिनेशन प्रक्रिया : कलेक्टर

07- हमारे व्यवहार में राष्ट्र के लिए अधिकार नही अपितु कर्तव्य का भाव होना...

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 214 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

नई कांग्रेस के जन्म की प्रसव पीड़ा से घबराकर भागते एलीट नेता !

पंकज श्रीवास्तव

कुछ दिन पहले बीजेपी के तीन मौजूदा सांसदों ने बीजेपी छोड़कर कांग्रेस का हाथ थाम लिया। हिसार के सांसद बृजेंद्र सिंह, चुरु के मौजूदा सांसद राहुलकास्वां और मुज़फ़्फ़रपुर के सांसद अजय निषाद ने कुछ दिन के अंतर में 'अबकी बार-चार सौ पार' के पीएम मोदी के नारे को हास्यास्पद बताते हुए राहुल गाँधी को देश का भविष्य बता दिया। किसी भी मीडिया चैनल ने इस घटना को महत्व नहीं दिया, लेकिन कांग्रेस के तीन नेताओं के दो दिन के अंदर पार्टी छोड़ने और दो के बीजेपी में जाने से गोदी मीडिया ही नहीं, कथित वैकल्पिक मीडिया में भी हाहाकार मचा हुआ है। जबकि इनमें कोई भी न सांसद था और न विधायक।

कांग्रेस से निष्कासित संजय निरुपम महाराष्ट्र में कांग्रेस की गठबंधन नीति से असंतुष्ट थे। जिस सीट पर उनकी निगाह थी, वह शिवसेना के खाते में चली गयी थी। वे किसी निजी महत्वाकांक्षा के शिकार नेता की तरह बाग़ी हो गए। मुक्केबाज़ विजेंद्र सिंह शाम को राहुल गाँधी ज़िंदाबाद का नारा लगा कर सोये और रात पता नहीं क्या सपना आया कि सुबह बीजेपी दफ़्तर की ओर रुख़ कर गये। इसमें सबसे दिलचस्प मामला कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव वल्लभ का है जिन्होंने सुबह कांग्रेस अध्यक्ष को इस्तीफ़ा देते हए पत्र लिखा और दोपहर को बीजेपी में शामिल हो गये।

कई प्रतिष्ठित संस्थानों में पढ़ाने के बाद राजनीति में कूदे गौरव वल्लभ हमेशा याद दिलाते हैं कि वे कोई आम नेता नहीं वित्त (फ़ाइनेंस) के प्रोफ़ेसर रहे हैं, लेकिन उन्होंने इस्तीफ़ा देने के जो कारण बताये हैं वह किसी प्रोफ़ेसर का अपनी लिखी किताबों में आग लगा देने जैसा है।

प्रो.गौरव वल्लभ ने अपने द्वारा विकसित 'थीसिस' को हास्यास्पद रूप से उलट दिया। उन्होंने कहा कि वे राममंदिर के उद्घाटन में शामिल न होने के पार्टी के फ़ैसले से क्षुब्ध हैं। साथ ही वे सनातन और देश को समृद्ध बनाने वाले पूँजीपतियों को गाली नहीं दे सकते, इसलिए कांग्रेस छोड़ रहे हैं। ये बीजेपी से मिली स्लेट पर स्वार्थ की खड़िया से लिखा गया बहाना है। राम मंदिर के उद्घाटन का बहिष्कार सनातन धर्म के शीर्ष पर बैठे सभी शंकराचार्यों ने किया था। उन्होंने उद्घाटन को शास्त्र विरुद्ध और राजनीतिक आयोजन बताया था। ये बात कल तक प्रो. गौरव वल्लभ खुद तमाम टीवी डिबेट में कहते रहे हैं। सनातन धर्म को गाली देना न कांग्रेस की नीति है और न कोई कांग्रेस नेता ऐसा करता है। अगर उनका इशारा डीएमके की ओर है तो तमिलनाडु की विशिष्ट वैचारिकी और उसकी द्रविड़ राजनीतिक दृष्टि एक हक़ीक़त है। डीएमके अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार को लंबे समय तक समर्थन देती रही है और सनातन को आर्य संस्कृति का पर्याय मानते उसकी भीषण आलोचना करने वाले पेरियार उस एआईएडीएमके के भी आदर्श रहे जिनके साथ हाल तक बीजेपी का गठबंधन रहा है और पर्दे के पीछे अभी भी गलबहियाँ जारी हैं।

यही नहीं, प्रो. गौरव वल्लभ देश के आर्थिक हालात और अडानी-अंबानी के हित में देश के संसाधनों को लुटाने की नीति के आरोप को आँकड़ों के ज़रिए स्थापित करने में सबसे आगे थे। देश में बढ़ती असमानता और एक फ़ीसदी लोगों के हाथ में जीडीपी के चालीस फ़ीसदी संसाधनों के सिमट जाने की भयावहता को वे बड़ी प्रामाणिकता के साथ टीवी डिबेट में रखते रहे हैं। ज़ाहिर है, कल तक जिन्हें वे क्रोनी कैपिटलिज़्म का प्रतीक बताते थे, वे अचानक उन्हें देश के लिए समृद्धि जुटाने वाले लगने लगें तो यह सिर्फ़ बीजेपी की भाषा को ज़ुबान देना है।

लेकिन प्रो. गौरव वल्लभ ने इस पत्र में जिस तरह जाति जनगणना से असहमति जतायी है वह न सिर्फ़ उनके बल्कि कांग्रेस में बैठे तमाम एलीट नेताओं के असहज होने की चुग़ली कर रहा है।

कांग्रेस राहुल गाँधी के वैचारिक नेतृत्व में जिस तरह से अपना सामाजिक रूपांतरण करने में जुटी है वह सवर्ण पृष्ठभूमि से आने वाले विचारहीन नेताओं के लिए मुश्किल पैदा कर रहा है। वे हिंदुत्व और पूँजी के गठजोड़ पर दौड़ रही बीजेपी के साथ ज़्यादा सहज हैं। यह वैचारिक और सांस्कृतिक मामला है। ऐसे नेताओं का नई कांग्रेस के उदय की स्थिति में अप्रासंगिक होना तय है। कांग्रेस से तमाम एलीट नेताओं के नाराज़ होने या पार्टी छोड़ने के पीछे का सच यही है। ग़ौर से देखिए तो कांग्रेस पर अंदर से हमले करने वाले तमाम नेता एक ख़ास सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से आ रहे हैं। ऐसे नेताओं को पार्टी ने बहुत आसानी से बहुत कुछ दिया है। खुद गौरव वल्लभ को पार्टी में आते ही राष्ट्रीय प्रवक्ता बनाया गया और 2019 में जमशेदपुर और 2023 में उदयपुर से विधानसभा चुनाव लड़ाया गया। वे दोनों चुनाव हार गये। स्थानीय कांग्रेस नेताओं में उन्हें पैराशूट की तरह उतारने को लेकर नाराज़गी भी जतायी लेकिन पार्टी अनुशासन को मानते हुए तन-मन-धन लगाकर गौरव वल्लभ को चुनाव लड़ाया। कांग्रेस आलाकमान ने शायद उनकी बौद्धिक प्रतिभा का सम्मान करते हुए ऐसा किया था। उसने यह नहीं सोचा कि प्रोफ़ेसर के आँकड़ों में उनकी आत्मा नहीं, विधानसभा या संसद पहुँचने का स्वार्थ है। ऐतिहासिक रूप से कांग्रेस के लिए विकट परिस्थितियों के बीच राहुल गाँधी एक ऐसे योद्धा की तरह मैदान में डटे हैं जो मानसिक रूप से अपराजेय है। जिसे न डराया जा सकता है और न ख़रीदा जा सकता है। लेकिन वे यह युद्ध निजी उपलब्धि पाने के लिए नहीं लड़ रहे हैं। राहुल गाँधी दरअसल, दलित, पिछड़े, आदिवासी, स्त्री और अल्पसंख्यकों के साथ न्याय का प्रश्नों पर केंद्रित एक 'नई कांग्रेस' को जन्म देने में जुटे हुए हैं। इस प्रसव पीड़ा को बर्दाश्त कर पाना गौरव वल्लभ जैसे 'वित्त' के प्रोफ़ेसर के लिए मुश्किल ही होगा। कांग्रेस की पाँच न्याय योजनाएँ राजनीति को नया मुहावरा दे रही हैं। राहुल गाँधी जानते हैं कि कांग्रेस का नयी भंगिमा और मुहावरे के साथ नयी उम्मीद की तरह भारतीय आकाश में चमकना ऐतिहासिक ज़िम्मेदारी है। संविधान बचाने की यह लड़ाई अथक परिश्रम और क़ुर्बानी माँगती है। थके-हारे-डरे लोगों का इस राह से अलग हो जाना स्वाभाविक ही है।

पुनश्चः गौतम बुद्ध ने कहा था कि 'वैर को वैर से ख़त्म नहीं किया जा सकता। वैर को अवैर से ही ख़त्म किया जा सकता है। यही सनातन धम्म है।' इस तर्क से देखें तो राहुल गाँधी इस समय देश के सबसे बड़े सनातनी नेता हैं जो नफ़रत के बाज़ार में मुहब्बत की दुकान खोलने का आह्वान कर रहे हैं!

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

अदालती फैसलों वाला 'बुधवार'

कइयों को दिखाया आईना

कोलकाता एचसी ने टीएमसी को दिखाई जमीन, दिल्ली में केजरीवाल को झटका

सुप्रीम कोर्ट ने रामदेव को चमकाया, कहा-माफी नहीं मिलेगी, बखिया उधेड़ देंगे

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के संदेशाखाली हिंसा की जांच सीबीआई करेगी। कलकत्ता हाई कोर्ट ने सीबीआई की जांच की मॉनीटरिंग करेगा। हाई कोर्ट ने महिलाओं के खिलाफ कथित अपराध और भूमि पर कब्जे के मामलों की जांच के लिए सीबीआई से कराने का आदेश दिया है। हाई कोर्ट ने यह आदेश संदेशखाली में जमीन कब्जाने और यौन हिंसा से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई करने के बाद दिया है। पिछली सुनवाई में कलकत्ता हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस ने पश्चिम बंगाल सरकार को उसके रवैए पर कड़ी फटकार लगाई थी। टीएमसी से निष्कासित नेता शाहजहां शेख पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न करने और भूमि कब्जाने के गंभीर आरोप हैं। संदेशखाली में ईडी की टीम पर हमले के बाद सामने आया था। शाहजहां शेख के लोगों ने वहां पर मछली पालन के लिए कृषि भूमि को अवैध रूप से बदला और इसके साथ ही स्थानीय लोगों की जमीन पर कब्जे भी किए। इस दौरान शेख और उसके साथियों ने महिलाओं का यौन उत्पीड़न भी किया। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल और केंद्रीय एजेंसियों के दौरे में महिलाओं ने यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए थे। कलकत्ता हाई कोर्ट ने पिछली सुनवाई में कहा था कि महिलाओं के हलफनामें में अगर एक फीसदी भी सच है, तो यह शर्मनाक है।

- संदेशखाली में रेप, जमीन हड़पने की जांच सीबीआई करेगी
- कलकत्ता हाईकोर्ट का सख्त आदेश, मुश्किल में फंसी ममता सरकार

बाबा रामदेव और बालकृष्ण पर गुस्से में 'सुप्रीम' कोर्ट

- माफी ठुकराने के साथ नाराजगी भी जताई, कहा-आप मामले को हल्के में ले रहे हैं

नईदिल्ली (एजेंसी)। बाबा रामदेव और आचार्य बालकृष्ण की मुसीबतें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। पतंजलि आयुर्वेद के भ्रामक विज्ञापन केस को लेकर सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को फिर सुनवाई हई। सुप्रीम कोर्ट ने आज एक बार फिर बाबा रामदेव और आचार्य बालकृष्ण को कड़ी फटकार लगाई है। कोर्ट ने रामदेव की माफी को ठुकराते हुए कहा कि आप हलफनामे में धोखाधड़ी कर रहे हैं। कोर्ट ने बिना शर्त माफी के रामदेव के हलफनामे को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। जस्टिस अमानुल्लाह और जस्टिस हीमा कोहली की बेंच ने इस मामले पर सुनवाई करते हुए कहा कि आपने तीन-तीन बार हमारे आदेशों की अनदेखी की है और इसका नतीजा भुगतना होगा। हम अंधे नहीं हैं। इसके साथ ही बेंच ने इस मामले पर केंद्र सरकार से मिले जवाब से भी संतुष्ट नहीं होने की बात कही। रामदेव और आचार्य बालकृष्ण ने बिना शर्त माफी मांगी थी।

गिरफ्तारी-रिमांड के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंचे केजरीवाल

कहा-जल्द सुनवाई की जाए, सीजेआई ने कहा-हमें ई-मेल भेजिए फिर देखेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। शराब नीति घोटाले में 21 मार्च को हुई मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी को दिल्ली हाईकोर्ट ने मंगलवार को सही ठहराया था। इस फैसले के खिलाफ अब बुधवार को केजरीवाल सुप्रीम कोर्ट पहुंच गए हैं। दिल्ली सरकार में मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि हमें सुप्रीम कोर्ट से राहत मिलने की उम्मीद है। केजरीवाल की ओर से एडवोकेट अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा यह याचिका दिल्ली के मुख्यमंत्री के संबंध में है और अर्जेंट है। गिरफ्तारी का आधार ऐसे दस्तावेज थे, जिन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। इस पर सीजेआई ने कहा- हमें ई-मेल कर दीजिए फिर हम देखेंगे।

हाईकोर्ट के बाद राउज एवेन्यू कोर्ट ने भी दिया झटका- तिहाड़ जेल में बंद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को राउज एवेन्यू कोर्ट से बड़ा झटका लगा है। वह अब हफ्ते में केवल दो बार ही अपने वकीलों से मुलाकात कर पाएंगे। उन्होंने हफ्ते में 5 बार वकीलों से मुलाकात करने की मांग की थी। अरविंद केजरीवाल ने अपनी याचिका में मांग की थी कि पीएमएलए मामले में उन्हें हफ्ते में पांच बार वकीलों से मिलने का मौका दिया जाए। हालांकि कोर्ट ने इसे याचिका को खारिज कर दिया। इससे एक दिन पहले ही मंगलवार को दिल्ली हाई कोर्ट से भी अरविंद केजरीवाल को बड़ा झटका लगा था। अरविंद केजरीवाल ने अपनी गिरफ्तारी को चुनौती दी थी, लेकिन कोर्ट ने उनकी याचिका को खारिजकर दिया था।

सुप्रभात

इस बार
एक सूखा पत्ता
एक हरी पत्ती पर
कुछ इस तरह आया
...छाया
(क़ाबिज़ हुआ)
कि धरती ने देर तक
महसूसा उसका भार
इस बार
हरी पत्ती ने अपने
हरेपन और खुशबू से
किया सूखे पत्ते को
सराबोर
और
सूखे पत्ते के
दृढ़ स्पर्श ने
लौटाया आत्म
और सम्मान
हरी पत्ती को
इस बार
माटी से
महक उट्ठी
और फैल गई
फिज़ाओं में
अलग-अलग उम्र के
अनकहे प्रेम की
दास्तां हवाओं में !

- मोहन सगोरिया

कांग्रेस तो झूठ बोलकर ही राज करती रही है, झूठ बोलना तो इनके खून में है : मुख्यमंत्री

छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर । 45 वर्षों से छिंदवाड़ा को गुलाम बनाकर रखा है। जिस तरह से कांग्रेस सिर्फ एक ही परिवार की जागीर बनकर रह गई है उसी तरह से छिंदवाड़ा को भी एक ही परिवार ने अपनी गुलामी की जंजीरों में जकड़ रखा है, लेकिन अब छिंदवाड़ा की जनता समझदार हो गई है। वह अपना अच्छा क्या है और बुरा क्या है सब जानती है। कमलनाथ कहते हैं कि वे छिंदवाड़ा में 45 वर्षों से तपस्या कर रहे हैं, लेकिन वे छिंदवाड़ा के लिए तपस्या नहीं कर रहे हैं, बल्कि वे तो यहां के लिए समस्या बन गए हैं। कांग्रेस तो हमेशा से झूठ बोलकर ही राज करती रही है। झूठ बोलना तो इनके खून में ही शामिल है। छिंदवाड़ा आकर इतना आनंद आ रहा है, मन इतना खुश है और लग रहा है कि हमारी तो रामनवमीं, होली, दीवाली सब बन गई है। यह बात मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने छिंदवाड़ा लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी श्री विवेक साहू के समर्थन में दमुआ, जुन्नारदेव, परासिया के चांदामेटा में रोड शो एवं जनसभाओं को संबोधित करते हुए कही। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश शासन के मंत्री श्री प्रहलाद पटैल ने नरसिंहपुर जिले की गोटेगांव विधानसभा के मुंगवानी में भी सभा को संबोधित किया।

छिंदवाड़ा में फैले कीचड़ में खिलता दिख रहा है कमल- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि छिंदवाड़ा में 45 वर्षों से फैले कीचड़ में इस बार कमल का फूल खिलता दिखाई दे रहा है। छिंदवाड़ा आकर इतना आनंद आ रहा है और आप सभी को देखकर ऐसा लग रहा है कि कोई बड़ा समुद्र हिलोरे ले रहा हो। सबकी उपस्थिति से निश्चित रूप से इस बार छिंदवाड़ा में कमल का फूल ही खिलेगा। उन्होंने कहा कि अब छिंदवाड़ा की जनता सब समझ गई है कि उन्हें अब तक झूठ बोलकर पागल बनाया जाता रहा है। अब छिंदवाड़ा के लोग क्यों जीवनभर किसी के गुलाम बनकर रहे।

- छिंदवाड़ा को गुलाम बनाकर रखा, इस बार यहां की आजादी का चुनाव है
- कमलनाथ कह रहे हैं कि 45 साल की तपस्या है, ये तपस्या नहीं छिंदवाड़ा के लिए समस्या है
- छिंदवाड़ा की जनता को देखकर ऐसा लग रहा है कि हमारी तो नवरात्रि, होली, दीवाली सब बन गई है

इन्हें उठाते-उठाते लोगों के कंधे टूट गए

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि छिंदवाड़ा के लोगों के 45 सालों में इन्हें उठाते-उठाते कंधे तक टूट गए हैं, लेकिन इन्होंने उन लोगों की सुध तक नहीं ली। क्या छिंदवाड़ा में एक ही परिवार है, जिसको राजनीति करने का अधिकार है? क्या छिंदवाड़ा सिर्फ एक ही परिवार की जागीर बनकर रह गया है। भाजपा में परिवारवाद नहीं चलता है, यहां पर कार्यकर्ताओं को भी उनका अधिकार मिलता है। वे छिंदवाड़ा की जनता से झूठ बोलकर पहले खुद सांसद बनते रहे, फिर परिवारवाद शुरू कर दिया।

कांग्रेस झूठ बोलकर वर्षों तक आपस में लड़ाती रही- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस के लोग वर्षों तक झूठ बोलकर देश-प्रदेश में राज करते रहे। ये झूठ बोलकर सरकार बनाते रहे। आजादी के समय इन्होंने हिन्दुस्तान-पाकिस्तान का बंटवारा करवाया। आजादी के बाद मंदिरों के नाम पर हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाते रहे। वर्षों से हमारे देश में भी मंदिरों में नामों पर हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाते रहे।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 40 °c

न्यूनतम 29°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 11 अप्रैल 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

तृतीय दिवस

तृतीय चंद्रघंटा

देवी मां के तृतीय ईश्वरीय स्वरूप का नाम मां चन्द्रघण्टा है।' चंद्र ' हमारी बदलती हुई भावनाओं, विचारों का प्रतीक है (ठीक वैसे ही जैसे चन्द्रमा घटता व बढ़ता रहता है)।' घंटा' का अर्थ है जैसे मंदिर के घण्टे-घड़ियाल।

राम मंदिर में स्थापित हुई डेढ़ क्विंटल की रामचरितमानस

- पेज-1000, कीमत- 5 करोड़, मध्य प्रदेश कैडर के पूर्व आईएएस ने भेंट की

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या के राम मंदिर में अब भक्त रामलला के साथ-साथ सोने की रामचरितमानस के भी दर्शन करेंगे। नवरात्र के पहले दिन गर्भगृह में इसे विधि-विधान से स्थापित कर दिया गया है। रामचरितमानस

को रामलला की मूर्ति से 15 फीट दूरी पर एक पत्थर के आसन पर रखा गया है। रामचरितमानस को मध्य प्रदेश कैडर के पूर्व आईएएस लक्ष्मी नारायण और उनकी पत्नी ने राम मंदिर ट्रस्ट को भेंट किया है। रामचरितमानस 1000 पेज की है। वजन- 155 किलोग्राम है। इसमें 4 किलो सोने और 151 किलोग्राम तांबे का इस्तेमाल किया गया है। हर पेज पर 24 कैरेट सोने की परत चढ़ाई गई है।

डिंपल के खिलाफ मैनपुरी से योगी के मंत्री मैदान में

- यादवलैंड के दुर्ग में भगवा लहरा पाएंगे ठाकुर जयवीर सिंह!

मैनपुरी (एजेंसी)। 2024 लोकसभा चुनाव के मद्देनजर भारतीय जनता पार्टी ने समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव की पत्नी डिम्पल यादव के सामने प्रत्याशी उतार दिया है। उत्तर प्रदेश के मैनपुरी सीट पर बीजेपी ने जयवीर सिंह ठाकुर को मैदान में उतारा है। योगी सरकार के मंत्री जयवीर के कंधों पर बीजेपी ने मुलायम सिंह यादव के गढ़ रहे मैनपुरी में भगवा झंडा लहराने की जिम्मेदारी है। मैनपुरी सीट पर मुलायम सिंह यादव के निधन के बाद उपचुनाव हुआ।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के समक्ष उज्जैन में कांग्रेस के रतलाम जिला अध्यक्ष सहित कई कांग्रेस नेता भाजपा में शामिल

उज्जैन। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के समक्ष बुधवार को उज्जैन के संभागीय भाजपा कार्यालय में कांग्रेस के रतलाम जिला अध्यक्ष श्री कैलाश पटेल, जोबट अलीराजपुर के वरिष्ठ कांग्रेस नेता श्री सुरपाल सिंह अजनार, कांग्रेस आईटी सेल प्रदेश सचिव शुभम पाटीदार, श्री रघुनंदन शर्मा जोबट, श्री आनंद भाई शाह चंद्रशेखर आजाद नगर ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। मुख्यमंत्री ने सभी नेताओं का अंगवस्त्र पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर प्रदेश सरकार के मंत्री श्री नागर सिंह चौहान, उज्जैन लोकसभा प्रत्याशी श्री अनिल फिरोजिया, विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, उज्जैन नगर अध्यक्ष श्री विवेक जोशी एवं रतलाम जिला अध्यक्ष श्री प्रदीप उपाध्याय मौजूद रहे।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने चेटीचंड पर्व पर कटनी में सिंधी समाज के साथ भगवान झूलेलाल की जयंती और चेटीचंड पर्व मनाकर शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने कहा कि चेटीचंड पर्व श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। भगवान झूलेलाल ने अत्याचारी शासकों से जनता को मुक्ति दिलाते हुए लोक कल्याण का रास्ता दिखाया। उनकी जयंती पर मनाया जाने वाला यह पर्व एकता और भाईचारे की भावना को सुदृढ़ करता है।

2003 से पहले मध्यप्रदेश, 2014 से पहले भारत दुरावस्था के दौर से गुजर रहा था : विष्णुदत्त शर्मा

कटनी। मध्यप्रदेश के साथ खजुराहो लोकसभा क्षेत्र और कटनी जिले के कई युवा बड़े प्रतिष्ठित चिकित्सक बनकर दुनिया भर में भारत का नाम रोशन कर रहे हैं। मध्यप्रदेश के कई चिकित्सक अमेरिका, जर्मनी सहित विश्व के सबसे अधिक चिकित्सा सुविधा वाले देशों में सेवाएं दे रहे हैं। अब कटनी जिले के युवाओं को एमबीबीएस की पढ़ाई करने के लिए दूसरे जिलों में नहीं जाना पड़ेगा। एक वर्ष के अंदर कटनी में मेडिकल कॉलेज की कक्षाएं शुरू हो जाएंगी। साथ ही खजुराहो लोकसभा क्षेत्र में नया कृषि महाविद्यालय और आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज भी जल्द संचालित होगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी 2047 तक भारत को विश्व गुरू बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। वर्ष 2003 से पहले मध्यप्रदेश दुरावस्था के दौर से गुजर रहा था, उसी तरह 2014 में श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने से पहले भारत भी दुरावस्था के दौर से गुजर रहा था। यह बात भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कटनी जिले के बहोरीबंद में नव मतदाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कही।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि 2014 से पहले भारत कई मामलों में विश्व के दूसरे देशों पर निर्भर रहता था। लेकिन श्री नरेन्द्र मोदी जी प्रधानमंत्री बनने के बाद से देश को सभी क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं।

100 देशों को टीका देकर दिखाई विश्व को नई राह- भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि कोरोना के समय विश्व के सभी संपन्न और विकसित देशों में स्वास्थ्य सुविधाएं लड़खड़ाई, लेकिन श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत को बहुत अच्छी तरह से संभाला। देश में कांग्रेस के शासनकाल में किसी बीमारी के इलाज या टीके के लिए भारत विश्व के दूसरे देशों की ओर देखता था। विश्व का कोई देश टीका या दवा बनाए, फिर भारत के दे तब यहां के लोगों का इलाज होता था, लेकिन श्री नरेन्द्र मोदी जी के कार्यकाल में विश्व की सबसे बड़ी महामारी कोरोना आयी तब श्री मोदी जी ने विश्व के दूसरे देशों की तरफ देखने की बजाय देश के वैज्ञानिकों का आह्वान किया और वैज्ञानिकों ने दो टीके तैयार कर दिए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में बने दोनों टीकों से देश की 140 करोड़ जनता की जान कोरोना से बचाई गई। श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विश्व के 100 देशों को भारत में बने कोरोना टीके देकर करोड़ों लोगों की जान बचाई और मानवता की मिशाल पेश करते हुए विश्व को नई राह भी दिखाई है।

तमिलनाडु में पीएम बोले-

डीएमके और कांग्रेस दोनों फैमिली पार्टियां हैं

इनका एजेंडा झूठ बोलकर सरकार में बने रहना, डीएमके के पास करप्शन का कॉपीराइट

चेन्नई (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुधवार को तमिलनाडु पहुंचे। यहां उन्होंने वेल्लोर और कोयंबटूर के मेट्टुपालयम में जनसभा की। मेट्टुपालयम में उन्होंने कहा कि आज मैं देख रहा हूं कि पूरे तमिलनाडु में भाजपा ही छाई हुई है। हर कोई कह रहा है कि डीएमके की विदाई भाजपा और एनडीए के द्वारा ही होगी। उन्होंने आगे कहा कि डीएमके और कांग्रेस जैसी फैमिली पार्टियों का एक ही एजेंडा रहता है कि किसी भी तरह झूठ बोलकर सरकार में बने रहो। कांग्रेस ने इतने दशकों तक गरीबी हटाओ का नारा दिया, लेकिन गरीबी नहीं हटी। ये एनडीए सरकार है जिसने 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है। वहीं, सुबह वेल्लोर में पीएम ने कहा कि डीएमके के पास करप्शन का कॉपीराइट है। पूरी फैमिली मिलकर तमिलनाडु को लूटने का काम कर रही है। पार्टी एक फैमिली की कंपनी बन गई है। इन्होंने एंटी-तमिल कल्चर को भी बढ़ावा दिया है। पीएम मोदी ने कहा कि डीएमके अहंकार में डूबी हुई पार्टी है। जब उनके एक नेता से हमारे युवा नेता अन्नामलाई के बारे में पूछा गया तो उन्होंने अहंकार में कहा- अन्नामलाई, वह कौन हैं और अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया। यह अहंकार तमिलनाडु की महान संस्कृति के खिलाफ है। तमिलनाडु के लोग इस अहंकार को कभी पसंद नहीं करेंगे। पीएम ने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर का भव्य निर्माण होता है, ये लोग उसका भी विरोध करते हैं। मैं तमिलनाडु में भगवान राम से जुड़े स्थानों पर आता हूं, इन्हें उससे भी तकलीफ होती है।

सैटेलाइट नेटवर्क में मस्क को टक्कर देगा ताइवान

अब भारत को मिलेगा सबसे तेज इंटरनेट कनेक्शन!

नईदिल्ली (एजेंसी)। सैटेलाइट नेटवर्क पर हर देश की नजर है। अभी एलन मस्क की कंपनी इस पर काम कर रही है। साथ ही सुपरफास्ट इंटरनेट लाने पर भी पहले से ही काम कर रही है। लेकिन ये खबर एलन मस्क को थोड़ा परेशान कर सकती है और भारत के नजरिये से भी बेहतर हो सकती है। क्योंकि ताइवान अब सैटेलाइट नेटवर्क पर काम कर रहा है। आज हम आपको इस नेटवर्क के बारे में तो जानकारी देंगे ही, साथ ही बताएंगे कि आखिर ताइवान ने ऐसा कदम क्यों उठाया। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध में एलन मस्क की कंपनी ने नेटवर्क प्रोवाइड करने का काम किया था। इस बीच ताइवान बहुत सारे साइबर अटैक का सामना

कर चुका है। इसके अलावा चीनी सेना के द्वारा भी एयरस्पेस बनाया गया है। इन सबके बीच वह काफी मुश्किलों का सामना कर रहा था। यही वजह है कि ताइवान ने अपना सैटेलाइट नेटवर्क स्थापित करने का फैसला किया, जिससे वह ऐसे हमलों से बच सके। इसमें कोई दोराय नहीं है कि अभी सैटेलाइट नेटवर्क में एलन मस्क की कंपनी का दबदबा है। वह चीन के अभी करीबी भी हैं।

शंघाई में उन्होंने टेस्ला प्लांट लगाने का भी फैसला किया है। इस वजह से भी ताइवान ने इस कंपनी से दूरी बनाने का फैसला किया है। वह अपना खुद का सैटेलाइट नेटवर्क स्थापित करने पर विचार कर रहे हैं।

पंजाब के अमृतसर से बीजेपी कैंडीडेट संधू की बढ़ाई गई सुरक्षा

- वाई प्लस कैटेगरी की सिक्योरिटी मिली, किसानों द्वारा लगातार किया जा रहा विरोध

चंडीगढ़ (एजेंसी)। अमृतसर से भाजपा उम्मीदवार व पूर्व आईपीएस अधिकारी तरनजीत सिंह संधू की केंद्र सरकार ने सुरक्षा बढ़ी दी है। अब उन्हें वाई प्लस सिक्योरिटी दी गई है, क्योंकि जब वह अपने चुनाव प्रचार के लिए निकल रहे है तो किसान जत्थेबंदियों द्वारा उनका विरोध किया जा है। इन सब चीजों को ध्यान में रखकर व सुरक्षा एजेंसियों से मिले इनपुट के बाद इस दिशा में फैसला लिया गया है। इससे पहले आम आदमी पार्टी (आप) छोड़कर भाजपा में शामिल हुए जालंधर के सांसद सुशील कुमार रिंकू और विधायक शीतल अंगुराल की भी सुरक्षा बढ़ाई गई थी। उन्हें एक्स कैटेगरी की सुरक्षा दी गई है। 4 दिन पहले तरणजीत सिंह संधू चुनाव प्रचार के लिए अजनाला गए थे। उनके साथ पूर्व अकाली नेता व भाजपा ज्वाइन कर चुके बोनी अजनाला भी थे।

मोबाइल फोन का डाटा गेहूं की जगह आटा

- चुनाव 2024 के लिए सपा का विजन डॉक्यूमेंट जारी

लखनऊ (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए समाजवादी पार्टी ने बुधवार को अपना घोषणा पत्र जारी कर दिया है। इस मौके पर अखिलेश यादव ने कहा कि हमने अपने विजन डॉक्यूमेंट को जनता का मांग पत्र-हमारा अधिकार नाम दिया है। इस विजन डॉक्यूमेंट में मुख्य मांगों में- संविधान की रक्षा का अधिकार, रक्षा का अधिकार लोकतंत्र, मीडिया की स्वतंत्रता का अधिकार और सामाजिक न्याय का अधिकार, देश के विकास के लिए सामाजिक न्याय का अधिकार शामिल है। जातीय जनगणना के

बिना देश का समावेशी विकास संभव नहीं है। अखिलेश ने मुफ्त राशन में गेहूं की जगह आटा देने का ऐलान किया है। इसके अलावा हर राशनधारी परिवार को महीने में 500 रुपये का मोबाइल फोन डाटा मुफ्त दिया जाएगा। अखिलेश यादव ने कहा कि सपा के विजन डॉक्यूमेंट में युवाओं को पेपर लीक से मुक्ति दिलाने, 2025 तक जातिगत जनगणना कराने, किसानों को एमएसपी शामिल है।

अमेरिकी राजदूत बोले-अगर आपको भविष्य देखना है तो भारत आइए

- यहां रहना सौभाग्य की बात, हम भारत उपदेश देने नहीं बल्कि सीखने आते हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में अमेरिका के राजदूत एरिक गार्सेटी का कहना है कि भारत में रहना उनके लिए सौभाग्य की बात है। दिल्ली में आयोजित एक इवेंट में एरिक ने कहा, अगर आप भाविष्य देखना और महसूस करना चाहते हैं तो भारत आइए। अगर आप भाविष्य की दुनिया के लिए काम करना चाहते है तो आपको भारत जरूर आना चाहिए। यहां रहना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। अमेरिका और भारत के रिश्तों का जिक्र करते हुए गार्सेटी ने कहा कि अमेरिकी प्रशासन भारत के साथ रिश्तों को बहुत अहमियत देता है।

संयुक्त राष्ट्र में एक बार फिर दिखा भारत का दबदबा

कई अहम निकायों में हुआ चुनाव, जगजीत पवाडिया फिर बनीं आइएनसीबी की मेंबर

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय स्वापक नियंत्रण बोर्ड समेत संयुक्त राष्ट्र के कई प्रमुख निकायों के लिए भारत का चयन किया गया है। भारत की जगजीत पवाडिया ने अंतरराष्ट्रीय स्वापक नियंत्रण बोर्ड (आइएनसीबी) में तीसरी बार निर्वाचित होकर बड़ी उपलब्धि हासिल की है। पवाडिया को संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद (ईसीओएसओसी) द्वारा आयोजित अत्यधिक प्रतिस्पर्धी चुनाव में सबसे अधिक वोट प्राप्त हुए हैं।

पावडिया को गुप्त मतदान के जरिए मार्च 2025 से 2030 तक पांच साल के तीसरे कार्यकाल के लिए आईएनसीबी में फिर से चुना गया। भारत को ईसीओएसओसी के मतदान करने वाले 53 सदस्यों में से 41 के वोट मिले, जो सभी विजेता सदस्य देशों में सबसे अधिक हैं। पावडिया ने 41 वोट के साथ कठिन चुनाव में शानदार जीत हासिल की, जबकि दूसरे स्थान पर रहे उम्मीदवार को 30 वोट मिले। बोर्ड की पांच सीट के लिए 24 उम्मीदवार थे, जिस

कारण चुनाव अत्यधिक प्रतिस्पर्धी था। उन्हें मई 2019 में 2020 से 2025 के पांच साल के कार्यकाल के लिए परिषद द्वारा फिर से चुना गया था। उन्होंने 2021 से 2022 तक बोर्ड अध्यक्ष के रूप में कार्य किया था। भारत को 2025 से 2029 तक की अवधि के लिए कमीशन ऑन स्टेटस ऑफ विमेन (महिलाओं की स्थिति पर आयोग) के लिए भी चुना गया है।

2025-2027 की अवधि के लिए संयुक्त राष्ट्र बाल कोष के कार्यकारी बोर्ड, 2025-2027 के लिए परियोजना सेवाओं के लिए संयुक्त राष्ट्र कार्यालय और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम एवं संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के कार्यकारी बोर्ड में भी भारत को चुना गया है। इसके अलावा भारत को 2025 से 2027 तक के कार्यकाल के लिए लैंगिक समानता एवं महिला सशक्तीकरण के लिए संयुक्त राष्ट्र इकाई के कार्यकारी बोर्ड और 2025-2027 कार्यकाल के लिए विश्व खाद्य कार्यक्रम के कार्यकारी बोर्ड के लिए भी चुना गया।

प्रदेश के 49 हजार मतदान केंद्रों में ईसी की तीसरी आंख

विवाद और हिंसात्मक एक्टिविटीज पर सख्त आयोग, वोटिंग के लिए बनेंगे 657709 बूथ

भोपाल। प्रदेश में अब 49 हजार से अधिक मतदान केंद्रों में कैमरे लगाकर चुनाव आयोग मतदान की गतिविधियों पर नजर रखेगा। इन मतदान केंद्रों में अंदर और बाहर दोनों स्थानों पर कैमरे लगाए जाएंगे जहां से वेबकास्टिंग के जरिये वहां की गतिविधियों की जानकारी अधिकारी दिल्ली और भोपाल से लेते रहेंगे। इसके साथ ही कलेक्टरों और पुलिस अधीक्षकों से ऐसे मतदान केंद्र वाले भवनों में खास तौर पर इंस्पेक्शन करने के लिए कहा गया है जहां पांच या अधिक मतदान केंद्र बनाए गए हैं। प्रदेश के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने लोकसभा चुनाव के लिए मतदान का समय नजदीक आने के साथ मतदान केंद्रों की सुरक्षा, मतदाताओं को वोट डालने के लिए जागरुक करने और

अधिकतम वोटिंग कराने के लिए कलेक्टर और जिला निर्वाचन अधिकारियों को निर्देश दिए है। इसी कड़ी में वल्नरेबल और क्रिटिकल मतदान केंद्रों की सुरक्षा पर सर्वाधिक फोकस किया गया है ताकि मतदान के दौरान किसी तरह की हिंसात्मक स्थिति पर तुरंत कंट्रोल किया जा सके और ऐसा करने वाले असामाजिक तत्वों की शिनाख्त में आसानी हो। प्रदेश में 65423 मतदान केंद्र सभी 29 लोकसभा सीट के लिए बनाए गए हैं। इसके बाद चुनाव आयोग ने 356 सहायक मतदान केंद्र भी मंजूर कर दिए हैं जिसके बाद कुल मतदान केंद्रों की संख्या 65779 हो गई है। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कलेक्टरों से कहा है कि निर्वाचन आयोग ने अब वेबकास्टिंग के लिये कुल मतदान केन्द्रों की संख्या के 75 प्रतिशत के बराबर कैमरे लगाने की अनुमति दे दी है। बेवकास्टिंग के लिये कैमरे मतदान केंद्र के भीतर और बाहर भी लगाये जा सकेंगे। इसके बाद अब 49334 मतदान केंद्रों में कैमरे लगाकर वेबकास्टिंग कराई जा सकेगी। पहले कुल मतदान केंद्रों में से 50 फीसदी मतदान केंद्रों में कैमरे लगाकर वेबकास्टिंग के जरिये मतदान केंद्रों पर नजर रखने की अनुमति दी गई थी। चुनाव आयोग ने लोकसभा चुनाव में विवाद और हिंसात्मक गतिविधियों पर नियंत्रण के लिए सुरक्षा को लेकर पूर्व में हुए चुनावों का स्टेटस भी ध्यान में रखा है। बताया जाता है कि जिन लोकसभा सीट पर विवादित प्रत्याशी हैं वहां और जिन लोकसभा सीट के अलग-अलग क्षेत्रों में पिछले चुनाव के दौरान विवाद की स्थिति बनी थी, वहां खास तौर पर सुरक्षा के मजबूत इंतजाम रखने के लिए कहा गया है। इसी को देखते हुए अब मतदान के पहले कलेक्टरों और पुलिस अधीक्षकों को ऐसी लोकेशन का स्वयं जाकर निरीक्षण करें, जहां पांच से अधिक मतदान केंद्र हैं।

राजधानी में 'राइड फॉर वोट', जुंबा पर जमकर थिरके लोग

- 45 मिनट में 15 किमी चलाई साइकिल, 200 साइकिलिस्ट हुए शामिल

भोपाल। मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए भोपाल में बुधवार सुबह 'राइड फॉर वोट' हुई। 200 से ज्यादा साइकिलिस्ट ने 45 मिनट में 15 किलोमीटर साइकिल चलाई। इससे पहले जुंबा पर लोग जमकर थिरके। मौके पर ही उन्हें टी-शर्ट, कैप समेत मूवी टिकट भी दिए गए। बुधवार सुबह बिट्ठन मार्केट स्थित दशहरा मैदान में साइकिल रैली का आयोजन किया गया। 7.30 बजे से रैली शुरू हुई। इससे पहले मौजूद लोगों जुंबा किया। वे चुनावी

गीत पर जमकर थिरके। इस दौरान उन्होंने मतदान करने की शपथ भी ली। जिला पंचायत सीईओ ऋतुराज सिंह ने सभी को शपथ दिलाई। सहायक नोडल अधिकारी रितेश शर्मा ने बताया, रैली और जुंबा में प्रथम 200 लोगों को टी-शर्ट और कैप दी गई। साथ ही अन्य सरप्राइज गिफ्ट जैसे 50 लकी ड्रॉ मूवी टिकट, बेस्ट फैंसी ट्रेडिशनल ड्रेस, बेस्ट साइकिल कपल्स, बेस्ट साइकिल डेकोरेशन और बेस्ट स्लोगन के लिए भी पुरस्कार दिए गए। इस मौके पर एडीएम हर्षल पंचोली, एसडीएम एलके खरे, सहायक आयुक्त आदिम जाति विभाग सुधीर श्रीवास्तव, स्वीप आइकॉन डॉ. रेणु यादव, उषा खरे, शिवम पांडे, राहुल सिंह परिहार, डीएसपी ट्रैफिक देवेंद्र सिंह यादव आदि भी मौजूद रहे। रंग-बिरंगी ड्रेस पहनने पर अशोक हिंदुस्तानी को अवॉर्ड दिया गया। बिट्ठन मार्केट से रैली की शुरुआत हुई, जो सात नंबर चौराहा, लिंक रोड नंबर-1, अपेक्स बैंक चौराहा, प्लेटिनम प्लाजा, अटल पथ, डिपो चौराहा, स्मार्ट रोड, पॉलीटेक्निक कॉलेज चौराहा, वीआईपी रोड, कर्बला से होते हुए गौहर महल पहुंची। जहां पर रैली का समापन हो गया। सहायक नोडल अधिकारी शर्मा ने बताया, करीब 15 किलोमीटर रैली रही, जो बिट्ठन मार्केट से गौहर महल तक 45 मिनट में पहुंची।

प्रदेश में झमाझम, कई जिलों में ओलावृष्टि

- भोपाल, उज्जैन समेत कई जिलों में आंधी के साथ गिरा पानी
- मौसम विभाग ने कहा-अगले एक सप्ताह तक ऐसा ही मौसम

भोपाल। मध्यप्रदेश में पिछले तीन दिन से बारिश-ओले का दौर जारी है। ऐसा स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव होने से हो रहा है। बुधवार को भी भोपाल, उज्जैन समेत कई जिलों में तेज आंधी के साथ बारिश हुई। भोपाल, शाजापुर में ओले भी गिरे। मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटों में 21 जिलों में बारिश का अनुमान जताया है। बुधवार दोपहर में शाजापुर, सीहोर, विदिशा, रायसेन में तेज बारिश से लोगों को गर्मी से राहत मिली। आगर, शाजापुर, राजगढ़, सीहोर, नर्मदापुरम के पचमढ़ी, छिंदवाड़ा और सिवनी में मध्यम गरज के साथ बिजली गिरने का अनुमान है। ओलावृष्टि होने और हवा की गति 60 किमी प्रति घंटा तक रहने के भी आसार है। भोपाल में बुधवार दोपहर बाद गरज-चमक के साथ तेज बारिश का दौर शुरू हो गया। पुराने शहर और करोंद के अलावा कुछ इलाकों में ओले भी गिरे हैं। दोपहर करीब 3 बजे काली घटाएं छा गईं। इससे शाम जैसा मौसम हो गया। मौसम विभाग के मुताबिक रात में भी ऐसा ही मौसम रह सकता है। पिछले 24 घंटे के दौरान 23 जिलों- सिवनी, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर, अनूपपुर, उमरिया, कटनी, बालाघाट, शहडोल, दमोह, रीवा, सागर, जबलपुर, भोपाल, हरदा, देवास, खरगोन, रायसेन, विदिशा, नर्मदापुरम, बैतूल, खंडवा, सीहोर और शाजापुर के कुल 74 शहर-कस्बों में बारिश दर्ज की गई। सबसे ज्यादा सिवनी के केवलारी में 32 मिमी यानी, सवा इंच बारिश हुई। छिंदवाड़ा के हर्रई, देवास के खातेगांव में भी 1 इंच से ज्यादा पानी गिरा। ढूस्ठ, राजस्थान और महाराष्ट्र के ऊपर दो साइक्लोनिक सर्कुलेशन भी सक्रिय है। ट्रफ लाइन भी गुजर रही है। सीनियर वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया कि 10-11 अप्रैल को एक और वेस्टर्न डिस्टरबेंस

भोपाल की सीनियर वैज्ञानिक दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि अभी एक पश्चिमी विक्षोभ एक्टिव है। वहीं, एक्टिव हो रहा है। इससे मौजूदा सिस्टम और भी मजबूत हो जाएगा। इस कारण एक सप्ताह तक मौसम ऐसा ही बना रहेगा। भोपाल में बुधवार दोपहर बाद गरज-चमक के साथ तेज बारिश का दौर शुरू हो गया। पुराने शहर और करोंद के अलावा कुछ इलाकों में ओले भी गिरे हैं। मौसम विभाग के मुताबिक रात में भी ऐसा ही मौसम रह सकता है। इससे पहले, सोमवार को कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश हुई। 30 से 40 चद्व प्रति घंटे की रफ्तार से हवा भी चली। मौसम विभाग के अनुसार साइक्लोनिक सर्कुलेशन, ट्रफ लाइन और वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) का असर भोपाल में भी दिखाई दे रहा है। पिछले तीन दिन से बारिश हो रही है। ऐसा ही मौसम 13 अप्रैल तक बना रहेगा। इससे पहले मंगलवार को भी बारिश हुई। जिससे इस दिन अधिकतम तापमान 36.8 डिग्री दर्ज किया गया। सोमवार को दिन का तापमान 35.8 डिग्री रहा था। रात के तापमान में भी मामूली गिरावट हुई है। अप्रैल महीने में भोपाल में तेज गर्मी और बारिश का ट्रेंड है। पिछले 10 साल में टेम्प्रेचर 42 से 43 डिग्री के पार पहुंच चुका है, जबकि 2014 से 2023 के बीच 10 में 7 साल बारिश भी हो चुकी है। वर्ष 2014 से 2023 के बीच 7 साल बारिश हुई है। साल 2016, 2017 और 2022 को बारिश नहीं हुई थी, जबकि पिछले साल 22.6 मिमी यानी, पौन इंच से अधिक पानी गिरा था।

विवेक तन्खा बोले-

देश में तानाशाही, ऐसे प्रजातंत्र में नहीं रहना

चुनाव में पहली बार भोपाल में बड़े कांग्रेस नेताओं की पीसी, नहीं पहुंचे कमलनाथ

भोपाल। लोकसभा चुनाव में पहली बार भोपाल में कांग्रेस के बड़े नेताओं ने जॉइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस की। राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा ने कहा- देश में मानवीय अधिकारों का हनन हो रहा है। यह तानाशाही है। मैं ऐसे प्रजातंत्र में नहीं रहना चाहता। कश्मीर के लोगों की बात करते हो तो वहां चुनाव तो कराओ। देश का पार्लियामेंट लगभग नहीं चल रहा है। चलता भी है तो भी जिस प्रकार से कानून बनते हैं वो प्रजातांत्रिक नहीं है। पार्लियामेंट वन साइड में चलता है। इसको मैं प्रजातांत्रिक नहीं मानता, और मैं इस तरह की व्यवस्था में रहना नहीं चाहता हूं। मैंने यह बात देश के उपराष्ट्रपति को पत्र लिखकर बताई है। उन्होंने कहा था कि 'तन्खा जी मैंने नहीं सोचा आप अपनी पार्टी के लीडर के साथ वेल में आ जाएंगे।' लोग आपके बारे में क्या सोचेंगे। इनमें प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी, पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह, सांसद विवेक तन्खा, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार, पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव, प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष जेपी धनोपिया और विभा पटेल शामिल थीं। इस पीसी में पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ शामिल नहीं हुए। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने कहा, हमें इस बात का दुख है और हम आश्चर्यचकित भी हैं कि क्या कारण है कि जातिगत आधार पर जनगणना नहीं हो पा रही। सामान्य तौर पर हर 10 वर्ष में जनगणना होती है लेकिन 2021 में होने वाली जनगणना नहीं हो पाई। जब तक जातिगत की जनगणना के आंकड़े सामने नहीं आएंगे, पता नहीं लगेगा कि किसकी कितनी हिस्सेदारी है। जब से मोदी सरकार आई है उन्होंने कंप्लीमेंट प्लान और ट्राइबल सब प्लान खत्म कर दिया है। आजकल भाजपा की रैली में जितना खर्च किया जाता है उतना उनके हित के लिए यह खर्च नहीं होता। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा- एससी-एसटी और सर्वहारा वर्ग बैकलॉग के पदों पर भर्ती नहीं हो रही है। बीजेपी घोषणा पत्र में तो लाती है मगर करती कुछ नहीं। अमित शाह मंडला और शहडोल के दौरे पर आए थे। उन्होंने आदिवासी अधिकार की बात कही, लेकिन कई सालों से जंगलों में रहने वाले आदिवासी भाइयों के पास अधिकार नहीं है। कांग्रेस वन अधिकार अधिनियम के लिए कानून स्थापित करेगी। कांग्रेस की सरकार आने पर छात्रवृत्ति दोगुनी की जाएगी। बैकलॉग के पदों पर भर्ती 1 साल के अंदर की जाएगी। 6 अप्रैल को कांग्रेस मुख्यालय नई दिल्ली में लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस ने 48 पेज का घोषणा पत्र जारी किया था। दिल्ली में कांग्रेस मुख्यालय में सोनिया गांधी, राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खरगे और मेनिफेस्टो कमेटी के अध्यक्ष पी चिदंबरम ने 5 न्याय और 25 गारंटी का ऐलान किया है। पार्टी के घोषणा पत्र में मजदूरी 400 रुपए दिन, गरीब परिवार की महिला को साल में 1 लाख रुपए, स्त्रक्क को कानून बनाने और जाति जनगणना कराने का जिक्र किया है।

अब एमपी में एनएसयूआई प्रभारी बदले

- राष्ट्रीय सचिव महावीर गुर्जर और रितु बराला बने मध्य प्रदेश प्रभारी

भोपाल। मध्य प्रदेश में लोकसाभ चुनाव चार चरणों में होने हैं। जैसे-जैसे चुनाव करीब आ रहे हैं वैसे-वैसे कांग्रेस में बदलाव का दौर देखने को मिल रहा है। जहां कांग्रेस ने मितेंद्र दर्शन सिंह को यूथ कांग्रेस का नया प्रदेश अध्यक्ष बनाया था तो वहीं, एनएसयूआई प्रभारी बदले गए हैं। राष्ट्रीय सचिव महावीर गुर्जर और रितु बराला को मध्यप्रदेश एनएसयूआई का प्रभारी बनाया गया है। महावीर गुर्जर छात्र संघ में राजस्थान विश्वविद्यालय में महासचिव रहे हैं। वहीं, रितु बराला छात्र संघ में राजस्थान के महारानी महाविद्यालय में अध्यक्ष रही हैं। एनएसयूआई नेता रवि परमार ने बताया कि लंबे समय के बाद एनएसयूआई के प्रदेश प्रभारी बदले गए हैं। पूर्व प्रदेश प्रभारी नितीश गौड़ का कार्यकाल बहुत बेहतर रहा, उनके कार्यकाल में मध्यप्रदेश एनएसयूआई के कार्यकर्ताओं ने छात्रहितों में सैकड़ों मुद्दों पर लड़ाई लड़ी। नीतीश गौड़ के कार्यकाल काफी सराहनीय रहा और मध्य प्रदेश एनएसयूआई के कार्यकर्ताओं में नई जान फूंकने वाला था। रवि परमार ने नवनियुक्त प्रदेश प्रभारी महावीर गुर्जर और रितु बराला को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मध्यप्रदेश एनएसयूआई के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता नवनियुक्त प्रभारीगण के नेतृत्व में चौगुनी ऊर्जा के साथ छात्रहित में निरंतर लड़ाई लड़ेंगे। नवनियुक्त प्रभारियों को छात्रसंघ चुनाव का भी अनुभव है। क्योंकि महावीर गुर्जर छात्रसंघ में राजस्थान विश्वविद्यालय में महासचिव रहे हैं, वहीं रितु बराला भी छात्रसंघ में राजस्थान के महारानी महाविद्यालय में अध्यक्ष रही हैं तो दोनों प्रभारियों के नेतृत्व में हम सबसे पहले मध्यप्रदेश में छात्र चुनाव करवाने की मांग को लेकर लड़ाई लड़ेंगे।

गोलगप्पे, मुंगौड़े और मक्के की रोटी...

चुनावी रण में दिग्गज नेताओं को पसंद आ रहा देसी खाना

भोपाल। मध्य प्रदेश में पहले चरण के चुनाव में अब कुछ दिनों का वक्त बचा है। इसके लिए तमाम बड़े नेता चुनावी मैदान में हैं। चुनाव प्रचार के दौरान नेताओं के अलग-अलग अंदाज देखने को मिल रहे है। इस दौरान नेता पसंदीदा खाने का स्वाद भी चख रहे हैं। कोई सड़क किनारे खड़े होकर गोलगप्पा खा रहा है तो कोई मुंगौड़े बना रहा है। वहीं, कुछ बड़े नेता लोगों के घरों में जाकर खा रहे हैं। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा खजुराहो लोकसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। खजुराहो के साथ-साथ वह मध्य प्रदेश के अन्य हिस्सों में भी सक्रिय हैं।

दो दिन पहले चुनाव प्रचार के दौरान उन्हें सड़क किनारे गोलगप्पे वाला दिखाई दिया। वीडी शर्मा अपने समर्थकों के साथ गोलगप्पे खाने दुकान पर पहुंच गए। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष ने वहां खड़े होकर गोलगप्पे का स्वाद चखा है। छिंदवाड़ा सांसद और कांग्रेस उम्मीदवार नकुलनाथ भी अपने क्षेत्र में सक्रिय हैं। कांग्रेस में मची भगदड़ के बीच वह दिन भर चुनाव प्रचार में जुटे रहते हैं। वह मंगलवार को रामपुर के चिचोली में एक घर में पहुंच गए। वहां उन्होंने मक्के की रोटी और टमाटर की चटनी खाया है। नकुलनाथ अरबपति उम्मीदवार हैं। वह आराम से जमीन पर बैठकर स्वाद चख रहे थे। वहीं,

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी लगातार चुनावी मैदान में अपने उम्मीदवारों के लिए प्रचार कर रहे हैं। प्रचार के दौरान उनके भी अलग-अलग अंदाज दिख रहे हैं। चुनाव प्रचार के दौरान एक दुकान पर जीतू पटवारी मुंगौड़े तलते दिख रहे हैं। वह दुकान में मुंगौड़े तलकर लोगों को खिला रहे हैं। पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान भी चुनावी क्षेत्र में एक्टिव हैं। वह भी लगातार लोगों से जुड़ रहे हैं। विदिशा लोकसभा पर प्रचार के दौरान शुक्रवार को शिवराज सिंह चौहान फूलमार गांव में एक आदिवासी परिवार के घर पहुंचे। वहां उन्होंने मक्के की रोटी और चने की साग का स्वाद चखा है। गौरतलब है कि पूरे मध्य प्रदेश में चुनाव लड़ रहे नेताओं को देसी अंदाज खूब पसंद आ रहा है। बाजारों से लेकर गांवों तक में जाकर वोटरों के रंग में रंग जा रहे हैं। उनसे जुड़ने के लिए उनके घरों में खाना खा रहे हैं या फिर बाजार में स्ट्रीट फूड का स्वाद चख रहे हैं।

संपादकीय

चर्चा में ये युवा चेहरे

कांग्रेस ने बीच चुनावी रण में अपनी युवा शाखा का घुड़सवार बदल दिया है। पार्टी ने प्रदेश युवक कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. विक्रांत भूरिया की जगह नए चेहरे मितेंद्र सिंह को संगठन की कमान सौंप कर सभी को चौंका दिया है। भाजपा ने इस बदलाव पर तंज करते हुए कहा है कि आदिवासियों की पैरवी करने वाली कांग्रेस ने ऐन चुनाव में युवा मोर्चे के एक आदिवासी अध्यक्ष को पद से हटा दिया है। हालांकि डॉ. विक्रांत भूरिया ने कहा कि उन्होंने खुद इस पद से त्यागपत्र देकर आलाकमान से नई नियुक्ति का आग्रह किया था। मितेन्द्र सिंह का स्वागत करते हुए डॉ. विक्रांत ने कहा कि कांग्रेस का जीतना जितना जरूरी है, उससे ज्यादा देश में लोकतंत्र बचाना है। डॉ. भूरिया झाबुआ से कांग्रेस विधायक हैं और इसी लोकसभा सीट कांग्रेस टिकट पर चुनाव लड़ रहे कांतिलाल भूरिया के बेटे हैं। पेशे से डॉ. विक्रांत को मप्र युवा कांग्रेस का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। डॉ. विक्रांत अनुसार उन्होंने खुद यूथ कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीनिवास बीवी को पत्र लिखकर मप्र युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी किसी और को देने का अनुरोध किया था। चूंकि मेरे पिता कांतिलाल भूरिया रतलाम-झाबुआ लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस के अधिकृत प्रत्याशी हैं, इस कारणवश मुझे अपना अधिकतम समय इस लोकसभा क्षेत्र में देना पड़ रहा है, जिसके चलते मैं मध्यप्रदेश युवा कांग्रेस के अध्यक्ष की भूमिका को पूरे प्रदेश में निभाने में खुद को असहज पा रहा हूं और अपने पद के साथ न्याय नहीं कर पा रहा हूं। भूरिया का पत्र जारी होने के कुछ देर बाद ग्वालियर के मितेन्द्र दर्शन सिंह को एमपी यूथ कांग्रेस का प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है। बताया जाता है कि मितेंद्र सिंह के पिता दर्शन सिंह पूर्व में ग्वालियर के शहर कांग्रेस अध्यक्ष रहे हैं। मितेंद्र की तीन दिन पहले प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष चीफ जीतू पटवारी से मुलाकात हुई थी। मितेंद्र सिंह ओबीसी वर्ग से आते हैं। हालांकि कांग्रेसी हलकों में इस अहम बदलाव को लेकर हैरानी का माहौल है। डॉ. विक्रांत भूरिया ने स्वयं इस्तीफा दिया अथवा उनसे लिया गया, यह भी रहस्य के घेरे में है। लेकिन बीजेपी ने इसे कांग्रेस में आदिवासी नेतृत्व की उपेक्षा के रूप में प्रोजेक्ट करने में जुट गई है। इससे आदिवासी इलाकों में कांग्रेस को कुछ नुकसान हो सकता है। खास बात यह है कि दर्शन सिंह पूर्व में ज्योतिरादित्य सिंधिया के खास रहे हैं। लेकिन सिंधिया की तरह उन्होंने कांग्रेस नहीं छोड़ी। ऐसे में मितेन्द्र सिंह की नियुक्ति को सिंधिया खेमे को कांग्रेस की शह के रूप में भी देखा जा रहा है। मितेन्द्र लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को जिताने के लिए क्या कुछ कर पाते हैं, यह चुनाव नतीजों से पता चलेगा,लेकिन इस तैनाती को राहुल गांधी की नई कांग्रेस तैयार करने के रूप में देखा जा रहा है। वैसे मप्र में एक और युवा चेहरे की चर्चा है। ये हैं ज्योतिरादित्य सिंधिया के बेटे महाआर्यमन सिंधिया। महाआर्यमन गुना शिवपुरी सीट पर अपने पिता के लिए जमकर प्रचार कर रहे हैं। इस नए और युवा चेहरे को लेकर मतदाताओं में काफी कौतुहल है। वो खुद को आम इंसान बताकर लोगों से मिल जुल रहे हैं और अपने पिता को जिताने का आग्रह मतदाताओं से कर रहे हैं। जानकार इसे ज्योतिरादित्य द्वारा अपने पुत्र की अघोषित राजनीतिक लांचिंग के रूप में देख रहे हैं। वैसे ज्योतिरादित्य सिंधिया ने महाआर्यमन को मप्र क्रिकेट एसोसिएशन का सदस्य पहले ही बनवा दिया है। यूं सिंधिया की इस सीट पर समूचे देश की निगाहें लगी हैं कि इस बार वो अपनी यह परंपरागत सीट फिर से जीत पाते भी हैं या नहीं।

कुछ मिथकों को हटाएं भारत बेहतर होगा

सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने के सारे अनुभव यही बात करते हैं कि अपने आप कुछ भी स्थाई बना नहीं रह सकता। समुदाय, तंत्र और समाज राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बल के चलते आंदोलित होते रहते हैं। इनमें से कुछ बल सोद्देश्य लगाए जाते हैं जबकि कुछ अनायास ही काम करते जाते हैं। इनके चलते समूचा तंत्र आसानी से अस्थिरता की ओर जा सकता है। चूंकि समाज और समुदाय मानवों से निर्मित है, जिनका स्वभाव सतत बदलता है अत : इसमें बदलाव के लिए जो कुछ भी किया जाता है, उसे लगातार बाहरी कारकों के द्वारा पोषित और ऊर्जावान बनाए रखा जाना आवश्यक होता है अन्यथा इसके दूसरी दिशा में जाने या वही रुक जाने का खतरा बना रहता है।

अनुराग बेहार
लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सीईओ एवं अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के संस्थापक वाइस चांसलर हैं। अंग्रेजी अखबार मिंट में प्रकाशित आलेख से अनुदित।

सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने वाले दानदाता से लेकर नीति निर्माता और सिविल सोसाइटी संस्थानों के मन पर कुछ मिथकों ने गहरी पकड़ बनाकर रखी है। हमें समाज कार्य के क्षेत्र में और प्रभावी रूप से काम करने तथा लोगों का जीवन स्तर सुधारने के लिए इन मिथकों या भ्रमों को तोड़ना चाहिए और वास्तविकता का सामना करना चाहिए। अतः नई साल की शुरुआत में हम कुछ सर्वव्यापी मगर समस्यामूलक मिथकों को समझने की कोशिश करते हैं।

स्थायित्व का मिथक- यह पर्यावरण के स्थायित्व का मिथक नहीं है। यह धारणा बनी हुई है कि किसी समुदाय में किसी बाहरी कारक के द्वारा आए हुए बदलाव और सुधार हमेशा और अपने आप बने रह सकते हैं। चाहे वह गाँव हो या कोई बड़ा राज्य, भ्रम यही है कि थोड़े समय के बाद सिविल सोसाइटी उस स्थान और कार्य से अलग हो सकती है चूँकि वहाँ जो बदलाव आवश्यक थे, वे हो गए हैं और अब वे स्थाई रूप से वैसे ही बने रहेंगे। इसके पीछे की धारणा यह है कि जो भी अच्छा घटता है उसे एकीकृत किया जा सकता है और वह समाज में स्थाई हो जाता है, रच-बस जाता है, फिर उसे किसी बाहरी घटक की आवश्यकता नहीं होती।

सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने के सारे अनुभव यही बात करते हैं कि अपने आप कुछ भी स्थाई बना नहीं रह सकता। समुदाय, तंत्र और समाज राजनीतिक,आर्थिक और सांस्कृतिक बल के चलते आंदोलित होते रहते हैं। इनमें से कुछ बल सोद्देश्य लगाए जाते हैं जबकि कुछ अनायास ही काम करते जाते हैं। इनके चलते समूचा तंत्र आसानी से अस्थिरता की ओर जा सकता है। चूंकि समाज और समुदाय मानवों से निर्मित है, जिनका स्वभाव सतत बदलता है अतः इसमें बदलाव के लिए जो कुछ भी किया जाता है, उसे लगातार बाहरी कारकों के द्वारा पोषित और ऊर्जावान बनाए रखा जाना आवश्यक होता है अन्यथा इसके दूसरी दिशा में जाने या वही रुक जाने का खतरा बना रहता है। उदाहरण के लिए किसी सिविल सोसाइटी ने किसी दानदाता के प्रकल्पों के अंतर्गत कुछ पंचायतों के साथ जुड़कर काम किया जिनमें बाल विवाह को रोकने या जाति-धर्म के आधार पर हो रहे भेदभाव को रोकने के लिए सघन प्रयास हुए। कुछ समय बाद दानदाता के मुताबिक इस क्षेत्र में पर्याप्त प्रयास हो चुके थे और सिविल सोसाइटी ने वहाँ काम करना बंद कर दिया। ये पंचायतें समाज के बड़े हिस्से में स्थित होती हैं, जो लगातार इस परिवर्तन का विरोध करेंगे और इस बदलाव को वापस पहले वाली स्थिति में लेकर आने की कोशिश करेंगे।

स्थायित्व के इस मिथक के पीछे का कारण यही है कि दानदाता, नीति निर्माता और यहाँ तक कि सिविल सोसाइटी भी इस काम को छोड़कर अगले काम को हाथ में लेने के इच्छुक रहते हैं। यह सोच वास्तविकता से बहुत दूर की सोच है। अच्छे परिवर्तन को बनाए रखने की लड़ाई शाश्वत लड़ाई है चूँकि हरेक चीज़ चाहे वह अच्छे परिवर्तन ही क्यों न हो, दीर्घकालिक नहीं होते।

प्रसार का मिथक- क्या मानवीय सम्बन्धों को प्रसारित किया जा सकता है? क्या सामाजिक और सांस्कृतिक संबंध प्रसारित हो सकते हैं? हम जानते हैं कि प्रसार का मिथक इन संदर्भों में काम नहीं कर सकेगा।

सामाजिक क्षेत्र का सारा ही काम मनुष्यों से संबन्धित होता है। उनके रिश्ते, राजनीतिक और सांस्कृतिक समीकरण, जो उनके समुदाय और समाज को गढ़ते हैं, मनुष्यों पर ही आधारित होता है। संदर्भ की विशिष्टता और आधारभूत मानवीय तत्व के चलते इसे प्रसारित (स्केल अप) नहीं किया जा सकता। अतः सामाजिक क्षेत्र में प्रसार की बात कोरी कल्पना मात्र होगी।

बावजूद इसके बाजार से प्रभावित यह कल्पना लगातार जड़ें जमाती रहती है चूँकि यह अलग-अलग स्थानों और लोगों के भविष्य तेज़ी से बदलते हुए दिखाती है। एक संदर्भ में हुए बेहतर काम का सिद्धान्त अक्सर दूसरे संदर्भ के लिए भी उपयोगी रहता है चूँकि उससे सीखकर इस अनुभव को दूसरे स्थान पर उपयोग में लाया जा सकता है। मगर यह प्रसार यानी स्केलिंग के समान नहीं हो सकता जिसमें इसी पद्धति का उपयोग करते हुए उसे बड़े समुदाय तक ले जाना शामिल हो। यह स्वीकार करना इतना मुश्किल क्यों है कि मानव कोई मशीन नहीं होते और समुदाय कारखाने नहीं होते।

किसी तंत्र में बदलाव लाने का मिथक- तंत्र का आशय किसी संस्था, संरचना, नियम-कायदे और अन्य बातों से होता है जो एक-दूसरे सी जटिलता से जुड़े हुए होते हैं। तंत्र इस शब्द का अक्सर इतना ज्यादा प्रयोग होता है कि हममें छिपी जटिलता और विस्तार को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। दानदाताओं से लेकर सिविल सोसाइटी तक सभी प्रतिभागी यह दावा करते हैं कि वे तंत्र के बदलाव के लिए काम कर रहे हैं। यह दावा वास्तविक आकलन पर निर्भर न होकर इस वृहद तंत्र के उस छोटे से हिस्से के आकलन पर निर्भर होता है जिसके साथ वे वास्तव में काम कर रहे होते हैं।

स्पष्ट बात यह है कि इस तरह के कार्यों से तंत्र के भीतर कोई बड़ा परिवर्तन नहीं होगा, केवल छोटे से हिस्से से जुड़ी किसी समस्या का निदान हो जाएगा। हालांकि ऐसे कई मामले हैं, जिनमें प्रत्यक्ष रूप से यह कहा जाता है कि हमारे कार्यों से प्रणालीगत बदलाव हो गया है, तंत्र बदल गया है। और यह अकसर उन चतुर लोगों का दावा होता है जो किसी बढ़िया-सी जगह पर बैठकर नीति, प्रशासनिक क्रियान्वयन और ज़मीनी कार्य को नियंत्रित कर रहे होते हैं। यह वास्तव में मिथ्याभिमान है और ऐसे सभी दावेदारों को (न केवल सीएसओ और दानदाताओं को, वरन अत्यधिक प्रभावी राज्यों को भी) तंत्र में परिवर्तन के ट्रैक रिकॉर्ड पर ईमानदारी से विचार करने की आवश्यकता है।

बुरे सिविल सोसाइटी संस्थानों का मिथक- एक समय था जब सिविल सोसाइटी संस्थानों को सदुणों का प्रतिमान और इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता था कि लोग अपना जीवन समाज की सेवा में कैसे समर्पित कर सकते हैं। पिछले दो-तीन दशकों में यह धारणा उलट गई है। एक व्यापक धारणा यह बनी है कि छोटे से समूह को छोड़ दिया जाए बाकि सभी अक्षम, अप्रभावी और भ्रष्ट हैं, या इनका कुछ और प्रयोजन है। यह साफ़ तौर पर झूठे है। सीएसओ हमारे समाज में किसी भी अन्य प्रकार के उद्यम से अधिक भ्रष्ट या अप्रभावी नहीं हैं। शैक्षणिक संस्थान, राज्य निकाय और व्यवसाय सभी समान हैं। उन सभी में उनके कार्य और आकार के संदर्भ में प्रभावशीलता और ईमानदारी का वितरण होता है। सीएसओ के साथ भी ऐसा ही है। यह मिथक न केवल उन लाखों लोगों का बहुत बड़ा अपमान करता है जो हमारे समाज को बेहतर बनाने में सक्षम और ईमानदार काम करते हैं, बल्कि उनके काम में बाधा भी डालते हैं।

हालांकि कई सिविल सोसायटी संगठन इन मिथकों के निर्माण में सहयोगी हो सकते हैं, लेकिन असली जिम्मेदारी दानदाताओं, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं पर है कि इन असत्यों के पक्ष से निकलें और वास्तविकता का सामना करें। यदि इन मिथकों को हमेशा के लिए दूर कर दिया जाए तो भारत बेहतर होगा।

राजनीति

- ललित गर्ग
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

लोकसभा चुनाव में नये अध्याय की शुरुआत हो

लोकसभा चुनाव में चुनावी मैदान सज गया है, सभी राजनीतिक दलों में एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोपों का सिलसिला हमेशा की तरह परवान चढ़ने लगा है। राजनीति में स्वच्छता, नैतिकता एवं मूल्यों की स्थापना के तमाम दावों के अनैतिकता, दल-बदल, आरोप-प्रत्यारोप की हिंसक मानसिकता पसरी है। राजनेता दलबदल की ताल ठोक रहे हैं। दलबदलुओं को टिकट देने में कोई दल पीछे नहीं रहा, क्योंकि सवाल, येन-केन-प्रकारेण चुनाव जीतने तक जो सीमित रह गया है। सिद्धांतों और राजनीतिक मूल्यों की परवाह कम ही लोगों को रह गई है। चुनावी राजनीति देश के माहौल में कड़वाहट घोलने का काम भी कर रही है। स्वस्थ एवं मूल्यपरक राजनीति को किनारे किया जा रहा है। राजनीति पूरी तरह से जातिवाद, बाहुबल और धनबल तक सिमट गई है। हालत यह है कि अब तक राजनीति दलों ने जिन प्रत्याशियों को उतारा है, उनमें आधे से अधिक दलबदलू, अपराधी अथवा दागी हैं। ऐसे में राजनीति के स्तर में सुधार की उम्मीद आखिर कौन, किससे करे? इस मुद्दे पर राजनीतिक दलों की चुप्पी तो समझ में आती है, लेकिन चुनाव आयोग की खामोशी समझ से परे है।

लोकसभा चुनाव नेतृत्व चयन का ऐतिहासिक एवं महत्वपूर्ण अवसर है, इस अवसर पर लाओत्जु ताओ ते चिंग की पुस्तक ''द ताओ ऑफ लीडरशिप'' राजनीति एवं राजनेताओं के लिये एक रोशनी है। यह एक अद्भुत, अद्वितीय एवं अप्रतिम कृति हैं जो नये युग के लिए नेतृत्व की रचनात्मक व्यूह रचना प्रस्तुत करती है। आज जबकि देश और दुनिया में सर्वत्र नेतृत्व के प्रश्न पर एक घना अंधेरा छाया हुआ है, निराशा और दायित्वहीनता की चरम पराकाष्ठा ने राजनीति एवं नेतृत्व को जटिल दौर में लाकर खड़ा कर दिया है। समाज और राष्ट्र के समुचे परिदृश्य पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो हमें जिन विषम और जटिल परिस्थितियों से रू-ब-रू होना पड़ता है, उन विषम हालातों के बीच ठीक से राह दिखाने वाला कोई नेतृत्व नजर नहीं आता। यह मान लेने में कोई हर्ज नहीं होना चाहिए कि लोकतंत्र धुंधलका सब देख रहे हैं, लेकिन खामोशी के साथ। शायद सबकी अपनी-अपनी मजबूरियां हैं। मतदाता की मजबूरी यह है कि आखिर उसे मैदान में डटे उम्मीदवारों में से ही एक को चुनना है। इस देश ने महंगाई, बेरोजगारी, महिला अपराध, गरीबी, साम्प्रदायिकता के खिलाफ भी जनता को सड़कों पर उतरते देखा है लेकिन राजनीति में टकराव, अपराध, देश-विरोध और हिंसा की राजनीति के खिलाफ कभी कोई आंदोलन नहीं हुआ। चुनाव आयोग की अपनी सीमाएं हो सकती हैं, लेकिन जेल में बैठे-बैठे लोग चुनाव लड़ भी लेते हैं और जीत भी जाते हैं। खलनायक नायक बनने लगे हैं। चुनाव लड़ने के लिए अधिकतम खर्च की सीमा सरेआम ध्वस्त होती है, लेकिन आयोग कुछ कर नहीं पाता। चुनाव प्रचार के दौरान अपशब्दों का उच्चारण-गालीगलोच खुल्लम-खुल्ला होता है, लेकिन आयोग नोटिस देकर ही अपने दायित्व से मुक्त हो जाता है। मतदाताओं के वोट खरीदने के लिए उन्हें सरेआम पैसे ही नहीं शराब तक बांटी जाती है, लेकिन किसी उम्मीदवार के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं होती। जनता राजनीति के गिरते स्तर से त्रस्त तो है, लेकिन उसके खिलाफ आवाज नहीं उठाती। इन लोकसभा चुनाव में यह चुप्पी टूटनी चाहिए और आजादी के अमृतकाल को अमृममय बनाने वाला नेतृत्व सामने आना चाहिए। ऐसा नेतृत्व जो देश को अग्रणी आर्थिक महाशक्ति के रूप में ले जाये एवं विकास की स्वर्णिम गाथा को गढ़े।

एक सफल, सार्थक, समर्थ एवं चरित्र सम्पन्न विपक्षी नेतृत्व की आवश्यकता हर दौर में रही है, लेकिन आज यह ज्यादा तीव्रता से महसूस की जा रही है। विपक्षी नेतृत्व कैसा हो, उसका अपना साथियों के साथ-साथ सत्तापक्ष के साथ कैसा सलूक हो? उसमें क्या हो, क्या न हो? वह क्या करे, क्यों करे, कब करे, कैसे करे? इत्यादि कुछ जटिल एवं गंभीर प्रश्न हैं जिनके जवाब ढूंढ़े बिना हम एक सक्षम विपक्षी नेतृत्व को उजागर नहीं कर सकते। इन प्रश्नों के उत्तरों की कसौटी पर ही हमें आने वाले सत्ता पक्ष एवं विपक्ष के नेतृत्व को कसना होगा। जिस नेतृत्व के पास इन प्रश्नों के उत्तर होंगे, जो समयज्ञ होगा, सहिष्णु होगा, तटस्थ होगा, दूरदर्शी होगा, निःस्वार्थी होगा, वैसा ही नेतृत्व जिस राष्ट्र को प्राप्त होगा, उसकी प्रगति को संसार की कोई शक्ति बाधित नहीं कर सकेगी। ऐसा ही नेतृत्व नया इतिहास बना सकेगा और भावी पीढ़ी को उन्नत दिशाओं की ओर अग्रसर कर सकेगा। आज चुनाव प्रचार में जिस तरह की आरोप-प्रत्यारोप की हिंसक संस्कृति पनपी है, एक दूसरे पर जूते-चप्पल फेंके जाते है, पत्थर से हमला किया जाता है, छोटी-छोटी बातों पर अभद्र शब्दों का व्यवहार, हो-हल्ला, छींटाकशी और हंगामा आदि घटनाएं ऐसी है जो नेतृत्व को धुंधलाती है।

नेतृत्व को लेकर लोगों की मानसिकता में बहुत बदलाव आया है, आज योग्य नेतृत्व की प्यासी परिस्थितियां तो हैं, लेकिन बदकिस्मती से अपेक्षित नेतृत्व नहीं हैं। जलाशय है, जल नहीं है। नगर है, नागरिक नहीं है। भूख है, रोटी नहीं है-ऐसे में हमें सोचना होगा कि क्या नेतृत्व की इस अप्रत्याशित रिक्तता को भरा जा सकता है? क्या राष्ट्र के सामने आज जो भयावह एवं विकट संकट और दुविधा है उससे छुटकारा मिल सकता है? हाल ही में नेतृत्व के प्रश्न पर एक करारा व्यंग्य पढ़ा था-'देश और ट्रेन में यही अंतर है कि ट्रेन को लापरवाही से नहीं चलाया जा सकता।' यानी देश के संचालन में की गई लापरवाही तो क्षम्य हैं पर ट्रेन के पटरी से उतरने में की गई लापरवाही क्षम्य नहीं, क्योंकि इसके साथ आदमी की जिंदगी का सवाल जुड़ा है। मगर हम यह न भूलें कि देश का नेतृत्व अपने सिद्धांतों और आदर्शों की पटरी से जिस दिन उतर गया तो पूरी इन्सानियत एवं राष्ट्रीयता की बरबादी का सवाल उठ खड़ा होगा।

आज देश में लोकतांत्रिक, सांस्कृतिक, नैतिक जीवन-मूल्यों के मानक बदल गये हैं न्याय, कानून और व्यवस्था के उद्देश्य अब नई व्याख्या देने लगे हैं। चरित्र हासिए पर आ गया, सत्ता केन्द्र में आ खड़ी हुई। ऐसे समय में कुर्सी पाने की दौड़ में लोग जिम्मेदारियां नहीं बांटते, चरित्र बांटने लगते हैं और जिस देश का चरित्र बिकाऊ हो जाता है उसकी आत्मा को फिर कैसे जिन्दा रखा जाए, चिन्तनीय प्रश्न उठा खड़ा हुआ है। आज कौन अपने दायित्व के प्रति जिम्मेदार है? कौन नीतियों के प्रति ईमानदार है? इस संदर्भ में आचार्य तुलसी का कथन यथार्थ का उद्घाटन करता है कि ''ऐसा लगता है कि राजनीतिज्ञ का अर्थ देश में सुव्यवस्था बनाए रखना नहीं, अपनी सत्ता और कुर्सी बनाए रखना है। राजनीतिज्ञ का अर्थ उस नीतिनिपुण व्यक्तित्व से नहीं, जो हर कीमत पर राष्ट्र की प्रगति, विकास-विस्तार और समृद्धि को सर्वोपरि महत्व दें, किन्तु उस विदूषक-विशारद व्यक्तित्व से है, जो राष्ट्र के विकास और समृद्धि को अवनति के गर्त में फेंककर भी अपनी कुर्सी को सर्वोपरि महत्व देता है।'' राजनैतिक लोगों से महात्मा बनने की उम्मीद तो नहीं की जा सकती, पर वे पशुता पर उतर आएं, यह ठीक नहीं है।

वर्तमान विपक्षी नेतृत्व की सबसे बड़ी विसंगति और विषमता यह है कि वह परदोषदर्शी है, जो सत्तापक्ष की अच्छाई में भी बुराई देखने वाले हैं। यह नेतृत्व कुटिल है, मायाबी है, नेता नहीं, अभिनेता है, असली पात्र नहीं, विदूषक की भूमिका निभाने वाला है। यह नेतृत्व सत्ता- प्राप्ति के लिये कुछ भी करने से बाज नहीं आता, यहां तक जिस जनता के कंधों पर बैठकर सत्ता तक पहुंचने के लिये जैसी राजनीति यह कर रहा है, घोषणा-पत्रों में जनता को ठगने एवं लुभाने के जो प्रयास हो रहे हैं, वे एक तरह से जनता की पीठ में भी सबसे पहले छुरा भोंकते हुए प्रतीत होते हैं। इससे भी अधिक घातक है इस नेतृत्व का असंयमी, अपराधी और चरित्रहीन होना, जो सत्ता पर काबिज होने के लिये राष्ट्र से भी अधिक महत्व अपने परिवार को देता है। देश से भी अधिक महत्व अपनी जाति और सम्प्रदाय को देता है। चुनाव जीतना जिनके लिये सेवा का साधन नहीं, विलास का साधन है। नेतृत्व का चेहरा साफ-सुथरा बने, इसके लिये अपेक्षित है कि इस क्षेत्र में आने वाले व्यक्तियों के चरित्र का परीक्षण हो। आई-क्यू टेस्ट की तरह करेक्टर टेस्ट की कोई नई प्रविधि प्रयोग में लाई जाये तो यह लोकसभा चुनाव का संग्राम अधिक सार्थक होगा।

कई जरूरी सवाल पर गैरजरूरी बवाल और...

सवाल पर बवाल करते हैं,इश्क़ को बे-सवाल करते हैं। सवालीराम के पोटली में ढेरों सवाल भरे हैं। यह सवाल समाज में भारी हैं। लेकिन उनको पूछता कौन है। इस बात पर बुद्धजीवी मौन हैं। आज मीडिया में सवाल का गैरजरूरी कचरा फैला है। लाइव डिबेट में गैरजरूरी सवालों का गलचौउरा होता है। न्यूज़ टीवी डिबेट में गैरज़रूरी सवालों का रायता चटखारे के साथ श्रोताओं में परोसा जाता है। मुफ्त मीडिया को स्वादिस्ट समोसा मिल जाता है। समोसा के त्रिकोण में मीडिया उलझ जाता है। जिससे उत्तर दायित्व का गणित गड़बड़ा जाता है। डिबेट में शोषण को पोषण मिल जाता है, जिससे समाज को कुपोषण हो जाता है।

कटाक्ष

सूर्यदीप कुशवाहा
लेखक व्यंग्यकार हैं।

कुपोषित समाज क्या विश्व गुरु बना सकता है?

सवालीराम ने पूछा कि पूरा देश ही परिवार है तो हिंदू-मुस्लिम का क्यों वार किया जाता है? सवाल वाज़ीब था तो ख़ामोशी छा गई। जाति-पाति से देश का बंटाधार, केवल हो भारतीय आधार। जरूरी सवाल का स्वागत होना चाहिए, जबकि उल्टा हाय -हाय और विरोध का सुर समझ लिया जाता है। सवाल समाज से साक्षात्कार करता है, उनकी की आलोचना करता है, विसंगतियों, अत्याचारों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है। बड़े साहब ने बड़ा उपकार किया। ऐसी आदत डाली कि आगे की ज़िंदगी में भी तरह-तरह के लोग माननीय के नीचे उधम करते रहे हैं। हरियाली बड़े साहब को जमता है, मगर गरीब खटिया पर बिन बिछोना सोता है।

सवाल से जुमलाबाज़ी की चीर-फाड़ की जाती है, नेताओं के चौबीस घंटे वाली सेवा की पोल खोलती है। सवाल सत्ता के मुंह पर तमाचा मारती है। लोकतंत्र को बचाने वाली हर आवाज के साथ खुद को खड़ा कर सवाल करना होता है।अरे हमने तो बस सुना था कि सवाल अपने आप में बवाल है। कुछ दिनों से सवाल आम आदमी को कुरेद रहे थे। इसी से माननीय के करियर पर 'बैरियर' लग जाता है। लोकतंत्र में पांच साल में सत्ता से मुक्ति की युक्ति जरूरी है। विपक्ष भी सवाल उठाकर ही बवाल काट सकता है। खोई कुर्सी पा सकता है। कुर्सी का खेल निराला, समझे लाला। कई जरूरी सवाल पर गैरजरूरी बवाल और.. पाखंड को ढोकर लोग धर्मात्मा बन चुके हैं। इससे लोकतंत्र की आत्मा खतरे में पड़ती है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

आशीष दशोत्तर

अधबीच : आमंत्रण की आस में मानस का राजहंस

खुशी के खुमार में कोई इतना खुदग़र्ज़ होता है क्या? खुशी के चार पल क्या आ गए , उन्हें ही भूल गया जिनकी वजह से उसकी ज़िन्दगी में खुशियां आई हैं। खुश होने के अपने पास भी सौ बहाने हैं पर उसकी खुशी में भी अपन शामिल होते तो उसका क्या बिगड़ जाता ? वो ज़रा याद तो करे ! इस खुशी को लाने वाला कौन है? अगर अपन नहीं होते तो उसकी ज़िन्दगी में यह खुशी भी नहीं आती । मुहूर्त की शुभता से लेकर आयोजन की शुचिता तक सब कुछ अपन ने ही किया। खुशी के मारे बदहवास होकर वो अपन को ही विस्मृत कर गया?

निष्ठुर इतना भी भूल गया कि जब उसके यहां ब्याह की तैयारी चल रही थी, उसे कुछ सूझ नहीं रहा था, तब इस नाचीज़ ने ही बताया था कि क्या करना है और क्या नहीं । पंगत से पंडाल तक, धर्मशाला से मैरिज गार्डन तक, बिछात से शामियाने तक के इंतज़ाम किसने किए? इस नाचीज़ ने। खुद से तो आमंत्रण पत्र भी तैयार नहीं हो रहा था। तब इन्हीं हाथों से इन पंक्तियों की रचना हुई थी, 'प्रेषित है यह आमंत्रण अब, प्रियवर तुम्हें बुलाने को, ओ मानस के राजहंस, तुम भूल न जाना आने को।'

एहसान फरामोश अब इस राजहंस को ही भूल गया ? इतना भी याद नहीं कि जब घर बनवा रहा था एक-एक ईंट का प्रबंध इस खाक़सार ने ही किया था। भवन बन गया तो नींव के पत्थर को ही भुला दिया? घर ही क्या, चम्मच से लेकर चारपाई और खूंटी से लेकर खिड़की तक सब कुछ इन्हीं हाथों का किया धरा है। खुद के हाथों में तो था ही क्या? जब आया था तब हाथ में एक अटैची थी और अब देखिए । अटैचियों की दुकान ही खोल बैठा है। इतना बड़ा व्यापार जमाने में अपनी क्या भूमिका थी उसे याद नहीं? इतना भी उसे याद नहीं रहा कि अपन नहीं होते तो उसके आयोजन में एक भी चांद नहीं लगता। इतने सितारे न जगमगाते । अपनी वजह से उसके आयोजन में चार चांद लगे और वह अपन को ही अंधेरी रात के हवाले कर गया ! कृतघ्न कुछ तो लिहाज करता, कुछ तो मान रखता। अरे, अपन नहीं होते तो उसकी दीवार पर एक कील तक नहीं ठुकती। अब वही अपनी ही ज़िंदगी में यह कील ठोक गया !

जब यहां आया था तो उसे जानता ही कौन था? अपन ने उसे सबसे मिलवाया। परिचय करवाया। आज जितने भी उसके आमंत्रण बंटे हैं न , यह सब अपने परिचय की बदौलत ही बंटे हैं। अपन नहीं होते तो उसके यहां आने वाला कौन था? भुलक्कड़ अपनी उपेक्षा कर इतना बड़ा आयोजन कर कैसे पाया? उपेक्षा क्या कहें,साहब जान बूझकर नहीं बुलाया होगा । नींव के ईंट को आख़िर याद कौन रखता है। शिखर पर पहुंचते ही लोग उसे भूल जाते हैं । जो मील का पत्थर राह दिखाता है मंज़िल पर उसकी याद किसे आती है। जिस सीढ़ी पर चढ़कर ऊपर तक पहुंचते हैं, ऊपर पहुंचते ही उसे सीढ़ी को धक्का दे देते हैं। जिनके कंधों पर बैठकर दुनिया देखते हैं, उन्हीं कंधों को कमज़ोर करने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

एक-एक चीज़ याद रख पूरी करवाई वरना खुशी का यह अवसर इतना खुशनुमा नहीं बनता । दिन-रात दौड़ धूप कर सारी व्यवस्थाएं कीं। उसकी ख़ातिर अपन ने क्या-क्या सितम सहे, मत पूछिए। मगर अपन को मिला क्या उपेक्षा, अनादर !

उपेक्षा के ये कड़वे घूंट अपन तो पी लें लेकिन श्रीमती जी ने जब हाथ हिलाते हुए कहा, 'देख लिया मेहनत करने का नतीजा। जिसके लिए तुम रात-दिन एक करते रहे आज उसी ने तुम्हें आमंत्रित नहीं किया ।' श्रीमती जी के इस उलहाने पर ऐसा लगा कि अपन धरती में ही समा जाएं। मतलबपरस्त ने अपने घर में भी मुंह दिखाने लायक नहीं छोड़ा।

कोई बात नहीं बच्चू। चार दिन की खुशी को समेट ले, उसके बाद आना तो अपने चंगुल में ही है । तब अपन भी बताएंगे कि अपने वालों को भूलने का क्या अंजाम होता है। अपनी नाराज़गी को देख कह देगा, तू तो घर का ही था तुझे बुलाने की क्या ज़रूरत ! या फिर कहेगा कि मैं तो समझा तुझे आमंत्रण मिल ही गया होगा, और कुछ नहीं तो कह देगा सब कुछ तो तेरे ही हाथ में था। अब मैं तुझे आमंत्रण क्या देता ? अपनी गलती को सही साबित करने के लिए वह चाहे जितने तर्क दे मगर अपन नहीं मानने वाले। अब की साफ़ साफ़ से कह देंगें कि हम ऐसे वैसे राजहंस नहीं है जो बगैर आमंत्रण के कहीं चले जाएं। अपन ईंट से ईंट जोड़ना जानते हैं तो ईंट से ईंट बजाना भी।

राजस्थान का लोकोत्सव गणगौर

कला-संस्कृति
रमेश सर्राफ धमोरा

राजस्थान का नाम सुनते ही मन खुशी से झूम उठता है। राजस्थान के पर्व त्यौहार अपने आप में अलग ही महत्व रखतें हैं। राजस्थानी परम्परा के लोकोत्सव अपने में एक विरासत को संजोए हुए हैं। राजस्थान को देव भूमि कहा जाय तो गलत नहीं होगा। यहां सभी सम्प्रदाय फले फूले हैं। यहाँ के शासकों ने विश्व कल्याण की भवना से अभिभूत होकर लोक मान्यताओं का सम्मान किया है। इसी कारण यहां सभी देवी देवताओं के उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाये जाते हैं। गणगौर का उत्सव भी ऐसा ही लोकोत्सव है। जिसकी पृष्ठ भूमि पौराणिक है। समय के प्रभाव से उनमें शास्त्राचार के स्थान पर लोकाचार हावी हो गया है। परन्तु भाव भंगिमा में कोई कमी नहीं आई है।

गणगौर भी राजस्थान का ऐसा ही एक प्रमुख लोक पर्व है। लगातार 17 दिनों तक चलने वाला गणगौर का पर्व मूलतः कुंवारी लड़कियों व महिलाओं का त्यौहार है। राजस्थान की महिलाएं चाहे दुनिया के किसी भी कोने में हो गणगौर के पर्व को पूरी उत्साह के साथ मनाती है। विवाहिता एवं कुंवारी सभी आयु वर्ग की महिलायें गणगौर की पूजा करती है।

गणगौर शब्द भगवान शिव और पार्वती के नाम से बना है। गण यानि भगवान शिव और गौर यानि पार्वती। इसलिए शिव-पार्वती की पूजा के रूप में इस त्यौहार को मनाया जाता है।

होली के दूसरे दिन से सोलह दिनों तक लड़कियां प्रतिदिन प्रातः काल ईसर-गणगौर को पूजती हैं। जिस लड़की की शादी हो जाती है वो शादी के प्रथम वर्ष अपने पीहर जाकर गणगौर की पूजा करती है। इसी कारण इसे सुहागपर्व भी कहा जाता है। कहा जाता है कि चैत्र शुक्ल तृतीया को राजा हिमाचल की पुत्री गौरी का विवाह शंकर भगवान के साथ हुआ था। उसी की याद में यह त्यौहार मनाया जाता है। गणगौर व्रत गौरी तृतीया चैत्र शुक्ल तृतीया तिथि को किया जाता है। इस व्रत का राजस्थान में बड़ा महत्व है। कहते हैं इसी व्रत के दिन देवी पार्वती ने अपनी उंगली से रक्त निकालकर महिलाओं को सुहाग बांटा था। इसलिए महिलाएं इस दिन गणगौर की पूजा करती हैं।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में गणगौर उत्सव दो दिन तक धूमधाम से मनाया जाता है। सरकारी कार्यालयों में आधे दिन का अवकाश रहता है। ईसर और गणगौर की प्रतिमाओं की शोभायात्रा राजमहल से निकलती है। इनको देखने बड़ी संख्या में देशी-विदेशी सैनानी उमड़ते हैं। सभी उत्साह से भाग लेते हैं। इस उत्सव पर एकत्रित भीड़ जिस श्रृद्धा एवं भक्ति के साथ धार्मिक अनुशासन में बंधी गणगौर की जय-जयकार करती हुई भारत की सांस्कृतिक परम्परा का निर्वाह करती है उसे देख कर अन्य धर्मावलम्बी भी इस संस्कृति के प्रति श्रृद्धा भाव से ओतप्रोत हो जाते हैं। ढूंढाड़ की भांति ही मेवाड़, हाड़ौती, शेखावाटी सहित इस मरुधर प्रदेश के विशाल नगरों में ही नहीं बल्कि गांव-गांव में गणगौर पर्व मनाया जाता है एवं ईसर-गणगौर के गीतों से हर घर गुंजायमान रहता है।

कामदेव मदन की पत्नी रति ने भगवान शंकर की तपस्या कर उन्हें प्रसन्न कर लिया तथा उन्हीं के तीसरे नेत्र से भस्म हुए अपने पति को पुनः जीवन देने की प्रार्थना की। रति की प्रार्थना से प्रसन्न हो भगवान शिव ने कामदेव को पुनः जीवित कर दिया तथा विष्णुलोक जाने का वरदान दिया। उसी की स्मृति में प्रतिवर्ष गणगौर का उत्सव मनाया जाता है। गणगौर पर्व पर विवाह के समस्त नेगचार व रस्में की जाती है।

होलिका दहन के दूसरे दिन गणगौर पूजने वाली लड़कियां होली दहन की राख लाकर उसके आठ पिण्ड बनाती हैं एवं आठ पिण्ड गोबर के बनाती हैं। उन्हें दूब पर रखकर प्रतिदिन पूजा करती हुई दीवार पर एक काजल व एक रोली की टिकी लगाती हैं। शीतलाष्टमी तक इन पिण्डों को पूजा जाता है। फिर मिट्टी से ईसर गणगौर की मूर्तियां बनाकर उन्हें पूजती हैं। लड़कियां प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में गणगौर पूजते हुये गीत गाती हैंः-

गौर ये गणगोर माता खोल किवाड़ी, छोरी खड़ी है तन पूजण वाली।

गीत गाने के बाद लड़कियां गणगौर की कहानी सुनती है। दोपहर को गणगौर के भोग लगाया जाता है तथा कुएं से लाकर पानी पिलाया जाता है। लड़कियां कुए से ताजा पानी लेकर गीत गाती हुई आती हैं :-

म्हारी गौर तिसाई ओ राज घाट्यारी मुकुट करो,
बीरमदासजी रो ईसर ओराज, घाटी री मुकुट करो,
म्हारी गौरल न थोड़ो पानी पावो जी राज घाटीरी मुकुट करो।

लड़कियां गीतों में गणगौर के प्यासी होने पर काफी चिन्तित लगती है एवं गणगौर को जल्दी से पानी पिलाना चाहती है। पानी पिलाने के बाद गणगौर को गेहूं चने से बनी घूघरी का प्रसाद लगाकर सबको बांटा जाता है और लड़कियां गीत गाती हैं-

म्हारा बाबाजी के माण्डी गणगौर, दादसरा जी के माण्ड्यो रंगरो झूमकड़ो,

ल्यायोजी - ल्यायो ननद बाई का बीर, ल्यायो हजारी ढोला झुमकड़ो।

रात को गणगौर की आरती की जाती है तथा लड़कियां नाचती हुई गाती हैं। गणगौर पूजन के मध्य आने वाले एक रविवार को लड़कियां उपवास करती हैं। प्रतिदिन शाम को क्रमवार हर लड़की के घर गणगौर ले जायी जाती है। जहां गणगौर का ''बिन्दौरा'' निकाला जाता है तथा घर के पुरुष लड़कियों को भेंट देते हैं। लड़कियां खुशी से झूमती हुई गाती हैं-

ईसरजी तो पेंचो बांध गोराबाई पेच संवार ओ राज म्हे ईसर थारी सालीछां।

गणगौर विसर्जन के पहले दिन गणगौर का सिंजारा किया जाता है। लड़कियां मेहन्दी रचाती हैं। नये कपड़े पहनती हैं, घर में पकवान बनाये जाते हैं। सत्रहवें दिन लड़कियां नदी, तालाब, कुए, बावड़ी में ईसर गणगौर को विसर्जित कर विदाई देती हुई दुःखी हो गाती हैं-

गोरल ये तू आवड़ देख बावड़ देख तन बाई रोवा याद कर।

गणगौर की विदाई का बाद कई महिनो तक त्यौहार नहीं आते इसलिए कहा गया है-''तीज त्यौहारा बावड़ी ले डूबी गणगौर''। अर्थात् जो त्यौहार तीज (श्रावणमास) से प्रारम्भ होते हैं उन्हें गणगौर ले जाती है। ईसर-गणगौर को शिव पार्वती का रूप मानकर ही बालाऐं उनका पूजन करती हैं। गणगौर के बाद बसन्त ऋतु की विदाई व ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत होती है। दूर प्रान्तों में रहने वाले युवक गणगौर के पर्व पर अपनी नव विवाहित प्रियतमा से मिलने अवश्य आते हैं। जिस गोरी का साजन इस त्यौहार पर भी घर नहीं आता वो सजनी नाराजगी से अपनी सास को उलाहना देती है। ''सासू भलरक जायो ये निकल गई गणगौर, मोल्यो मोड़ों आयो रे''।

हमें आज आवश्यकता है इस लोकोत्सव को अच्छे वातावरण में मनाये। हमारी प्राचीन परम्परा को अक्षुण बनाये रखे। इसका दायित्व है उन सभी सांस्कृतिक परम्परा के प्रेमियों पर है जिनका इससे लगाव है। जो ऐसे पर्वो को सिर्फ पर्यटक व्यवसाय की दृष्टि से न देखकर भारत के सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से देखने के हिमायती हैं। अब राजस्थान पर्यटन विभाग की वजह से हर साल मनाए जाने वाले इस गणगौर उत्सव में शामिल होने कई देशी-विदेशी पर्यटक भी पहुँचने लगे हैं।

कस्तूर गांधी की ताजी स्मृतियाँ

स्मृतियां
चित्रा माली
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

'द फ़ॉरगाटन वुमन' यह किताब अरुण गांधी और उनकी पत्नी सुनन्दा गांधी ने अपनी दादी (कस्तूर गांधी) के जीवन के हर पहलू पर गहराई से लिखी है। कहीं न कहीं शायद उनको भी यह खला हो कि उनकी दादी का उनके उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन में योगदान और भूमिका की उपेक्षा की गई है। इसके पूर्व वनमाला पारिख और सुशीला नैयर ने भी गुजराती में कस्तूर पर एक किताब 'हमारी बा' लिखी थी जिसमें कस्तूर के पारिवारिक जीवन और राजनीतिक जीवन की कर्मठता को दिखाया गया है। इतिहास लेखन की परंपरा भी कास्ट,क्लास और जेंडर की अवधारणा से परे नहीं है यहां भी महिलाओं के कार्यों को वर्णित करने में विभेद किया गया है और यह विभेद आज भी जारी है। सबाल्टर्न इतिहास लेखन के बाद ही कस्तूर गांधी और अन्य महिलाओं पर विमर्श की शुरुआत हुई है। पश्चिमी देशों में जब गांधी के ब्रह्मचर्य व्रत पर चर्चा होती है तो लोगों में अक्सर गुस्से और क्रोध की भावना पाई जाती है कि गांधी ने ऐसा करते समय अपनी पत्नी (कस्तूर) की राय या सहमति क्यों नहीं ली ? वे एक तरफा यौन संबंध का परित्याग कैसे कर सकते थे ? उस स्थिति में क्या होता अगर वो उसे जारी रखना चाहती ? यह प्रतिक्रिया बहुत ही आधुनिक और पश्चिमी है। संभवतः ऐसा नहीं था कि कस्तूर, गांधी के ब्रह्मचर्य व्रत के फैसले से विचलित थी। उन्हें जो बात सता रही थी वो ये कि गांधी के इन व्रतों का कहीं विस्तार न हो जाए और वे परिवार और बच्चों से भी दूर न चले जाएं। कस्तूर, गांधी से शारीरिक रूप से दूर रहने से शायद असहज नहीं थी लेकिन उनकी चिंता मानसिक और भावनात्मक दूरी की थी। कस्तूर, गांधी और हरिलाल (पिता-पुत्र) के संबंधों को लेकर चिंतित थी क्योंकि वे आरंभ से ही सामान्य और सहज नहीं थे। हरिलाल के जन्म के कुछ दिनों बाद ही गांधी लंदन चले गए थे। इसके बाद गांधी मुंबई में थे तो बच्चे राजकोट में,जब बच्चे उनसे मिलने आए, तो उसके तुरंत बाद गांधी ने दक्षिण अफ्रीका जाने का निर्णय कर लिया। वर्ष 1896 में पूरा परिवार फिर से एकत्रित हुआ और उन्होंने साथ - साथ डरबन की यात्रा की। लेकिन वर्ष 1902 में वे फिर से अलग हो गए। गांधी हरिलाल की शिक्षा को लेकर अत्यंत चिंतित थे क्योंकि हरिलाल जिस भी स्कूल में पढ़ने गए उसमें असफल रहे। हरिलाल औसत छात्र थे और अस्थिर भी थे। गांधी ने कस्तूर से कहा कि वे सभी बेटों को लेकर दक्षिण अफ्रीका आ जाएं। लेकिन हरिलाल मैट्रिकुलेशन की परीक्षा के चलते दक्षिण अफ्रीका नहीं गए,वे भारत में ही रहे और यहीं से पिता पुत्र के रिश्ते खराब होने लगे थे,28 दिसंबर 1905 को गांधी द्वारा लिखे पत्र से कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है। इस पत्र में गांधी ने लिखा था कि वे उन्हें लगातार पत्र न लिखे जाने की वजह से असंतुष्ट हैं। उन्होंने आगे लिखा कि जब वह किसी अन्य से खबर पाते हैं और उसमें तुम्हारे क्रियाकलापों की आलोचना होती है। गांधी ने शिकायत की कि अपने माता - पिता के प्रति तुम्हारे आचरण से उनके प्रति तुम्हारा कोई प्रेम नहीं झलकता। जब गांधी को पता चला कि हरिलाल उनके दोस्त हरिदास वोरा की बेटी चंचल से प्यार करते है तो पिता - पुत्र के बीच के रिश्ते और खराब हो गए। गांधी की राय में हरिलाल और चंचल दोनों उस समय विवाह योग्य नहीं थे लेकिन राजकोट में रहने वाले गांधी के भाई लक्ष्मीदास ने दोनों की शादी करवा दी। जब हरिलाल की शादी की खबर गांधी को लगी तो उन्होंने अपने भाई लक्ष्मीदास को पत्र लिखा कि 'ये अच्छा है कि हरिलाल का विवाह हो गया,न भी होता तो भी अच्छा होता। क्योंकि मैंने अपने बेटे के तौर पर उसके बारे में सोचना बंद कर दिया है'। उस पत्र की भाषा और उसकी कठोरता इस बात से आंशिक रूप से ही प्रतिध्वनित होती है कि हरिलाल के द्वारा कई अवज्ञाएं की गई है,न ही वे ठीक से पढ़ाई करते हैं और न ही वे नियमित रूप से पत्र लिखते हैं, वे कस्तूरबा के साथ जोहान्सबर्ग भी नहीं आए और सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण बात कि विवाह के बारे में उन्होंने अपने पिता की राय भी नहीं मानी। पिता - पुत्र के बीच के इस संबंध से कस्तूर अत्यंत परेशान और चिंतित थी। एक (भारतीय) मां के रूप में शायद वह हरिलाल की गलतियों को माफ करने में ज्यादा उदार थीं। लेकिन उन्होंने ये भी देखा कि गांधी का व्यवहार भी बहुत सरल - सहज नहीं था कि वे कभी तो हरिलाल के प्रति काफी उपेक्षा का भाव रखते तो कभी उस पर हावी होने का प्रयास करते। पिता - पुत्र के बीच सुलह कराने का प्रयास लगातार कस्तूर ने किया और हरिलाल को दक्षिण अफ्रीका आने को भी कहा। कस्तूर पिता और पुत्र के बीच एक धुरी की तरह थी। हरिलाल के विद्रोही स्वभाव को वह पिता का सान्निध्य न मिल पाना और पिता के प्रेम से वंचित होने को मानती थी। दक्षिण अफ्रीका में गांधी के प्रयोगों में से एक प्रयोग बच्चों की शिक्षा को लेकर भी था जिससे कस्तूर नाखुश थी। कस्तूर का स्पष्ट मानना था कि पढ़ाई स्कूल में ही होनी चाहिए। इस बात को लेकर गांधी और कस्तूर में कहा - सुनी होती रहती थी। डरबन में बच्चों की शिक्षा का जिम्मा गांधी ने खुद लिया और बच्चों को अपने साथ दफ्तर ले जाकर पढ़ाने लगे। एक दिन मणिलाल चश्मा ले जाना भूल गए जब गांधी ने उन्हें किताब नजदीक लेकर पढ़ते देखा तो उन्होंने मणिलाल को घर से चश्मा लाने के लिए कहा ताकि वह भविष्य में कभी भी चश्मा लाना न भूले। डरबन में गांधी के घर और दफ्तर की दूरी बहुत अधिक थी कस्तूर ने जब अकेले मणिलाल को बेसमय आया देखा तो वे चकित हो गई उन्होंने मणिलाल से पूछा इस समय अकेले कैसे आए ? गर्मी से बेहाल मणिलाल ने बताया कि वह चश्मा ले जाना भूल गया था,बापू ने लेने भेजा है। लेकर फौरन लौट जाना है। कस्तूर ने गांधी के आदेश पर कोई टिप्पणी नहीं की ओर जल्दी से खाना तैयार कर मणिलाल को खिलाया। जब तक मणिलाल ने खाना खाया वह लगातार सोचती रही कि अपने बारह साल के बेटे को वह उसके पति के अपरिवर्तनीय सिद्धान्तों के बारे में कैसे समझाए कि वे कठोर लगते हुए भी मानवीय हैं। उनके साथ जुड़ने के बाद ही उन्हें समझा जा सकता है। मुझे भी उन्हें समझने के लिए जद्दोजहद करनी पड़ रही है। कस्तूर ने मणि से कहा 'मैं समझ सकती हूं कि तुमको बापू की इस बात से कैसा लगा होगा'। तुम्हारे बापू ऊपर से भले ही जिद्दी लगें पर वे अच्छे इंसान हैं। वे चाहते हैं, तुम उनके अच्छे बेटे बनो,इसलिए श्रम - साध्य काम करने को कहते हैं। श्रम शरीर को ही नहीं मस्तिष्क को भी मजबूत बनाता है। दक्षिण अफ्रीका में कस्तूर लगातार गांधी के कार्यों को जिनको वे करते है या करने को कहते हैं, उसके पीछे की भावना को समझने की कोशिश करने लगी लेकिन साथ ही कस्तूर ने मन ही मन यह भी तय कर लिया कि वह अपने पति की बात तब तक नहीं मानेगी जब तक वह उनके तर्क को न समझ ले,पहले समझेगी फिर अनुसरण करेगी। कस्तूर का यह प्रतिरोधी स्वभाव प्रारंभ से ही था, वे अपने गर्विष्ठ पति को आवश्यकता होने पर चेतावनी देने में दायित्व और अधिकारों के प्रति चेताने में भी पीछे नहीं रही। कस्तूर के मन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पारिवारिक जिम्मेदारियों को लेकर कोई द्वंद नहीं था। उन्होंने अपने अधिकारों का बेझिझक प्रयोग किया और अपना पत्नी धर्म भी पूरी निष्ठा और सहजता के साथ निभाया। गांधी लगातार सार्वजनिक जीवन को आत्मसात करते जा रहे थे और उनके लिए परिवार व व्यक्तिगत हित गौण होते जा रहे थे जबकि कस्तूर सार्वजनिक जीवन के साथ साथ अपने पारिवारिक जीवन में भी तारतम्य स्थापित कर जीवनयापन कर रही थी।

गांधी जैसे विराट व्यक्तित्व के सामने हर कोई बौना ही साबित होगा लेकिन गांधी के विशाल और विराट व्यक्तित्व के पीछे एक कर्मठ और दृढ़ निश्चयी महिला उनकी पत्नी कस्तूर को नकारा नहीं जा सकता है। गांधी पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त हो सामाजिक और राजनीतिक कार्य करने में मसरूफ थे लेकिन वहीं कस्तूर दोहरी जिम्मेदारियों के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही थीं। गांधी जैसे व्यक्तित्व की पत्नी के रूप में एक स्त्री का स्वयं अपने और साथ ही देश की आजादी के आंदोलन से जुड़े दोहरे संघर्ष को जानना समझना कस्तूर और कस्तूरबा के अलग-अलग अस्तित्व और व्यक्तित्व को जानना समझना है जिसमें वह पत्नी,मां और देश की आजादी के लिए एक समर्पित कार्यकर्ता के रूप में दिखाई देती है। जिनकी अपनी स्वतंत्र सोच और विचार हैं, जो निर्णय लेने में समर्थ है। आज कस्तूरबा का जन्मदिन है उन्हें शत शत नमन।

मप्रः अल्पसंख्यकों का शून्य होता प्रतिनिधित्व

चुनाव-चक्रम
डॉ. सुधीर सक्सेना
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

मध्यप्रदेश की औद्योगिक राजधानी और सर्वप्रमुख शहर इंदौर की आबादी यूं तो मिश्रित है, किंतु वहां पारसी समुदाय की संख्या उंगलियों पर गिने जाने योग्य है। ऐसे में कौन यकीन करेगा कि आज से 40 से भी अधिक साल पहले सन् 1962 के मे जन्मना पारसी होमी दाजी ने इंदौर से लोकसभा के लिये विजय हासिल की थी।

होमी दाजी श्रमिक नेता थे। गोल्ड मेडल के साथ वकालत की सनद। पिता कपड़ा मिल में कॉटन सेलेक्टर थे। स्नेहलतागंज में रहते थे। होमी ओजस्वी वक्ता थे। मजदूरों के रहनुमा। इंदौर शहर ने सन् 1957 में उन्हें एमएलए चुना था। वह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के लीडर थे। चुनाव बतौर निर्दलीय शेर छाप से लड़ा। कांग्रेस के राम सिंह भाई को मात दी। यह एक राष्ट्रीय प्रसंग था। देश के शीर्ष नेतृत्व ने उनकी केंद्र की। तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने उन्हें कोलंबों में आयोजित वर्ल्ड पीस कांफ्रेंस में भारत का प्रतिनिधि बनाकर भेजा।

सन् 1972 के विधानसभा चुनाव में होमी की कीर्तिमान मतों से जीतकर एमएलए बने। दाजी को आज भी पुरानी पीढ़ी ससम्मान याद करती है, लेकिन यह परंपरा अब टूट चुकी है। पारसी तो क्या सियासी पार्टियां संसदीय चुनाव में मुस्लिम उम्मीदवार तक खड़ा करने से परहेज बरत रही हैं। ध्रुवीकृत मध्यप्रदेश में दोनों प्रमुख राष्ट्रीय दलों ने सन् 2008 के बाद से कोई भी मुस्लिम प्रत्याशी खड़ा नहीं किया।

लगभग साढ़े सात करोड़ की आबादी के मध्यप्रदेश में मुस्लिमों की जनसंख्या लगभग 6.6 फीसद है। ईसाई, बौद्ध और सिख आबादी दशमलव में है और तीनों समुदाय मिलकर करीब एक प्रतिशत का विन्यास रचते हैं। सांप्रदायिक आधार पर वर्तुल विभाजन के इस अपूर्व और आवेशित दौर में अल्पसंख्यक-प्रतिनिधित्व के नाम पर अतीत के पन्ने फड़फड़ाते हैं, अन्यथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री और हॉकी के सितारा खिलाड़ी असलम शेर खां तो यहां तक कहते हैं कि जब तक राजीव गांधी जीवित थे, कांग्रेस सेक्यूलर मार्ग पर चली, किंतु उनके जाने के बाद कांग्रेस भी इस राह से विचलित हो गयी।

पीवी नरसिंहा राव के प्रधानमंत्री काल में केंद्रीय मंत्री रहे असलम का जुमला 'मुसलमानों को बाबरी नहीं, बराबरी चाहिये' बड़ा चर्चित रहा था। आदिवासी नेता दिलीपसिंह भूरिया के साथ संसद में उनकी जोड़ी खूब सुर्खियों में रही थी। सतपुड़ा की उपत्यका में स्थित बैतूल में मुस्लिमों की आबादी विरल है और वह कोई निर्णयक समीकरण नहीं रचती, लेकिन असलम ने बैतूल से चार चुनाव लड़े। सन् 85, 89, 91 और 96 में वह कांग्रेस के उम्मीदवार थे। बैतूल को इस मान से मध्यप्रदेश के संसदीय क्षेत्रों में अलग खाने में वर्गीकृत किया जा सकता है कि बैतूल ने कांग्रेस के अल्पसंख्यक प्रत्याशियों को फिर-फिर चुनकर संसद में भेजा। सन् 81 में बैतूल ने गुफराने आजम को अपना सांसद चुना। और पहले के कालखंड में जाएं तो सन् 1967 और 71 के लोकसभा चुनाव में यहां से बतौर कांग्रेस प्रत्याशी एनकेपी साल्वे ने विजयश्री दर्ज की। साल्वे थे तो नागपुर के और ईसाई थे, लेकिन बैतूल का औदार्य कि उसने उन्हें दो बार वरा।

मप्र में एक और संसदीय क्षेत्र है सतना। बघेलखंड में स्थित सतना भी अपने उदार लोकतांत्रिक-चरित्र के लिए जाना जाता है। इसने गुलशेर अहमद और अजीज कुरैशी को चुनकर संसद में भेजा। बाद में ये दोनों क्रमशः हिमाचल और उत्तर प्रदेश के राज्यपाल रहे। सिखों की बात करें तो सरदार सरताज सिंह इकलौते सिख है, जो होशंगाबाद से जीतकर संसद में पहुंचे और मंत्री बने। साल्वे के निर्वाचन के बाद ईसाइयों का शून्य प्रतिनिधित्व तब खंडित हुआ, जब सन् 90 के दशक में कांग्रेस ने भोपाल की सुश्री मेबेल रिबेलो को राज्यसभा में भेजा।

अल्पसंख्यक-प्रतिनिधित्व के मान से भोपाल का अतीत किंचित समृद्ध रहा है। सन् 57 और 62 के चुनाव में कांग्रेस ने यहां से मैमूना सुल्तान को टिकट दिया और वह चुनी गयीं। सन् 77 के ऐतिहासिक चुनाव में बतौर जनता उम्मीदवार आरिफ बेग जीते। इसके बाद यह परंपरा खंडित हो गयी और कुछ ही बरसों में भोपाल इस कदर भगवा रंग में रंग गया कि दिग्विजय सिंह जैसा नेता साध्वी प्रज्ञा से भारी मतों के अंतर से हारा। कांग्रेस ने यहां से मंसूर अली खां (नवाब पटौदी) और साजिद अली पर दांव लगाया, लेकिन बात बनी नहीं। अब यहां से किसी अल्पसंख्यक को प्रत्याशी बनाने की क्षीण आवाज भी नहीं उठती।

इस सारी गाथा के साथ एक रोचक क्षेपक यह भी जुड़ा हुआ है कि मध्यभारत की बहुचर्चित गुना-शिवपुरी सीट से आजाद हिन्द फौज फेम के कर्नल ढिल्लन ने सन् 1977 में भाग्य आजमाया। उन्होंने युवा माधवराव सिंधिया को कड़ी चुनौती दी, लेकिन करीब 77 हजार मतों से मात खा गये। बताते हैं कि कर्नल ढिल्लन को एकदा ट्रेन में शिवपुरी के बड़े कारोबारी शीतल प्रकाश जैन के पिताश्री घासीराम जैनचंद्र कवि मिल गये थे और उनके आग्रह पर वे शिवपुरी के उपांत में आकर बस गये। पत्रकार प्रमोद भार्गव के मुताबिक मुस्लिम जागीरदार हाफिज निसार ने उन्हें एक रुपया प्रति बीघा के प्रतीक मूल्य पर करीब सौ बीघा जमीन प्रदान की थी। उनके बेटे के स्वामित्व का फार्म हाउस आज भी शिवपुरी में है। ऐसे ही केपीएस गिल का फार्म हाउस भी शिवपुरी में है। बहरहाल, मध्यप्रदेश के अल्पसंख्यकों के लिए डेढ़ दशक से टिकटों का टोटा है। असलम मियां ने सन् 2008 में सागर से अंतिम चुनाव लड़ा था और हारे। जहां तक दावेदारी का प्रश्न है, बीजेपी को उससे कोई सरोकार नहीं और कांग्रेस भी उनकी अर्जियां खारिज कर रही है। फलतः अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व शून्य हो चला है।

आधुनिक भारत के जनक : महात्मा फुले

दृष्टिकोण
अमित राय
लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं

भारत के इतिहास में गांधी से पहले केवल दो ही महात्मा हुए, पहले महात्मा थे तथागत गौतम बुद्ध और दूसरे महात्मा थे ज्योतिरावफुले। सन् 1827 में महात्मा ज्योतिरावगोविंदरावफुले का जन्म हिंदू धर्म की परंपरा में शूद्र मानी जाने वालीमाली नामक किसान जाति में हुआ थाऔर चूँकि भारतीय समाज में जाति व्यवस्था गहरे तक अवस्थित थी इसलिए ज्योतिरावको शिक्षा ग्रहण करने के लिए एक ओरसे ब्राह्मण पुरोहित-वर्ग से और दूसरी ओर पारंपरिक घरानों के स्थापितों के खिलाफसंघर्ष करना पड़ा। भारत में ब्रिटिशों की राजनीतिक सत्ता के कारण शिक्षा के सार्वजनीकरणका रास्ता खुलने लगा था, इसलिए पुणे की मिशनरी शाला में उन्हें अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त हुई।महज़ बीस वर्ष की उम्र में थॉमस पेन के लेखन से उनका परिचय हुआ। विशेषकर उनकी 'राइट ऑफ मैन' पुस्तक पढ़कर वे काफीप्रभावित हुए और सशस्त्र क्रांति केप्रशंसक बने। भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद को समाप्त करने के लिए और देश को स्वतंत्र करने के लिए उन्हें सशस्त्र क्रांति का मार्ग उचित लग रहा था, इसलिए उन्होंने श्रीलहुजी उस्ताद नामक मातंग जाति के महान व्यक्ति द्वारा शुरू किए गए अखाड़ों में सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। सन् 1847 तकवे थॉमस पेन के स्वतंत्रता संबंधी विचार और लहुजी उस्ताद से प्राप्त कसरत की शिक्षासे राष्ट्रवादी विचारों से ओत-प्रोत हो गए थे।लेकिन एक वर्ष बाद ही उन्हें उच्चवर्णीय जातियों से शोषण का जो अनुभव प्राप्त हुआ,उससे उनके मन में तीव्र संघर्ष शुरूहुआ। वेअपने एक दोस्त की शादी में शरीक हुए थे,परंतु उन्हें शूद्र होने के कारण बारात सेबाहर निकाल दिया गया। इस अपमान को वे सह नहीं पाए। इस घटना से वे अंतर्मुखी हो गए और यह विचार करने लगे कि भारत के अस्पृश्यों और शूद्रों के वास्तविक शत्रु कौन है।क्या भारत पर राज करने वाले ब्रिटिश उनके शत्रु हैं या जिस ब्राह्मण पुरोहित-वर्ग ने बहुजन समाज कोधर्म के नाम पर हज़ारों वर्षों तक गुलामी में रखा, वे शत्रु हैं? गहन वैचारिक संघर्ष के बाद उन्हें सामाजिक दृष्टि से प्रगतिशील ब्रिटिश शासन की सहायता से ब्राह्मण पुरोहित-वर्ग से आज़ादी पाना उन्हं ज़्यादा उचित महसूस हुआ। गुलामी चाहे अपने लोगों की हो या पराये लोगोंकी, उसमें कोई गुणात्मक अंतर नहीं होता। भारतीय अस्पृश्य और स्त्रियां धर्मशास्त्र द्वारा लादी गई सामाजिक गुलामी में हज़ारों साल से दबे हुए हैं। इसीलिए फुले ने थॉमसपेन को आदर्श मानकर हिंदू धर्म और धर्मशास्त्र की कठोर आलोचना की। उन्होंने यहआलोचना कभी पूरी हिम्मत के साथ, तो कभी उपहास के साथतो कभी गाली-गलौज में तो कभी ठेठअंदाज़ में की। जिस वर्ष पश्चिम में कार्लमार्क्स औरएंगेल्स का कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणा-पत्र प्रकाशित हुआ,उसी वर्ष सन्1848 में उन्होंने अस्पृश्य लड़कियों के लिए पहली शाला आरंभ की। उनका स्पष्ट मानना था कि शिक्षा के बिनाअस्पृश्यों और स्त्रियों की गुलामी समाप्त नहीं हो सकती।

सन् 1873 में लिखी 'गुलामगिरी' नामक पुस्तक में शूद्रों को सावधान करते हुए वे स्पष्ट रूप से कहते हैं कि 'अंग्रेज़ लोग आज हैं, कल नहीं रहेंगे। वे जनम भर हमारा साथ देंगे, यह नहीं कहा जा सकता, इसलिए जब तक वे यहां है, तब तक हम सब शूद्रों को जल्दी से जल्दी इन पुरोहितों की पैतृक दासता से मुक्त होजाना चाहिए, यही समझदारी होगी।'

भारत में क्रांति को लेकर किये जाने वाले विचार कि हम सब लोग एक हुए बिना अमेरिकन, फ्रेंच और रूसी लोगों की बराबरी नहीं कर सकते। इस एकता को लेकर किये जाने वाले दावों को लेकर महात्मा फुले कहते हैं कि 'मेरे बचपन में मैं भी इस तरह का पागलपन करता था, परंतु जब मैंने कुछ वर्षों बाद उसी पुस्तक का बारीक़ी से अध्ययन किया तब इन सुधरे हुए भट ब्राह्मणों की मतलबी चालों का वास्तविक अर्थ मुझे पता चला'।वे सोचते थे कि ब्रिटिशों को इस देश से हटाकर और अपना शासन हासिल करकेशूद्रों को हमेशा के लिए गुलाम बनाकर कैसे रखा जाए!

नारायण मेघाजी लोखंडे महात्मा ज्योतिराव फुले के सत्य शोधक आंदोलन का एक महत्वपूर्ण नाम थे। लोखंडे जी फुले जी को 'इंसानों में संत पुरुष और संतों में वीर पुरुष' मानते थे। उन्होंने 11 मई, 1888 ई. में मुंबई के कोलीवाड़ा में फुले जी के बड़े सम्मान का आयोजन किया,इसके लिए पूरे महाराष्ट्र से भारी संख्या में अस्पृश्य और शूद्र उपस्थित थे। इसी भव्य समारोह में,ज्योतिराव गोविंदराव फुले जी को हजारों मेहनती लोगों की उपस्थिति में 'महात्मा' की उपाधि से सम्मानित किया गया।यह महत्वपूर्ण है कि फुलेको दी गई 'महात्मा' की उपाधि के पीछे न तो कोई शासक था और न ही कोई पूँजीपति। इसके पीछे हिंदू धर्म पीड़ित शूद्र, अतिशूद्र और महिलायें थीं। फुले उनकी गरीबी, अर्थहीनता और बोरियत भरे जीवन से बेहद परेशान थे। इसलिए उन्होंने हिंदू धर्म की आलोचना करने वाली गुलामगिरी, शेतक-याचाआसुड, किसान का कोड़ा, ब्राह्मणों का कसब आदि रचनाएं लिखी और अखंड में पद्य रचना की। उनके पूरे लेखन में सामाजिक, आर्थिक विषमता से ग्रसित धर्म, रूढ़ियों की गुलामी में रखे हुए और सिर्फ अपना पेट भरने के लिए और जीवित रहने के लिए किया हुआ आक्रोश, व्यवस्था के प्रति अस्वीकार दिखाई देता है।

फुले आस्तिक थे और गांधी की तरह वे अपने सत्य को,'सत्य ही ईश्वर है' न कहकर 'निर्माता' कहते थे,उनका विश्वास था 'निर्माता' ने पृथ्वी के संसाधनों का,सुख साधनों का निर्माण सभी के लिए किया है उन तक सभी की पहुँच बराबरी से हो ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए,क्योंकि ऐसा किये बगैर बिना मानव जीवन सार्थक और सुंदर नहीं हो सकता,इसी तरह के विचारों से महात्मा फुले जी का लेखन व्यापक है।ऐसा नहीं है कि फुले केवल हिंदू धर्म की खामियों कीओर इशारा कर रहे थे, बल्कि वे सभी धर्मों की सीमाएं भी बता रहे थे। वह लिखते हैः'पृथ्वी पर मनुष्यों ने जो भी शास्त्र लिखे हैं, उनमें से किसी भी ग्रंथ में शुरुआत से लेकर आखिर तक सार्वजनिक सत्य नहीं है। क्योंकि प्रत्येक शास्त्र में, कुछ लोगों के उस समय की परिस्थितियों के अनुसार रुकावट बनने के कारण वह धर्म समग्र रूप से सभी मनुष्यों के लिए समान रूप से लाभप्रद न होकर आसानी से टुकड़े बनकर एक दूसरे से ईर्ष्या और घृणा करने लगता है।'

महात्मा ज्योतिरावफुले के दिमाग में, दुनिया के सभी मनुष्यों को खुश करने के सवाल का जवाब 'सत्य' है। उन्होंने जो सत्य पाया वह एकान्त कारावास के माध्यम से प्राप्त नहीं हुआ था। इसलिए यह केवल बहस या चर्चा का विषय नहीं था, यह व्यवहार में लाने का विषय था। सत्य को जीवन का एक मार्ग समझना चाहिए।सत्यधर्म के संबंध में प्रश्न कि 'सत्यधर्म' क्यों? फुले ने जवाब देते हैं, 'खुशहाल जीवन जीने के लिए।' इसलिए उन्होंने सत्य को सांसारिक जीवन के सुख से जोड़ा। एक खंड में वह लिखते हैं- 'सत्य सभी का मूल घर है। सभी धर्मों का पालनहार। दुनिया के सभी सुख विशेष सत्य का स्रोत है। सत्य ही सुख का आधार है। शेष सब अंधकार है। जब तक सत्य का वर्चस्व है, दे धूर्त लोगों को वो जवाब'।

ज्योतिराव के समय तक विज्ञान में क्लासिकल विज्ञान ही प्रमुख था। उस समय न्यूटन और उनके गति के नियमों का प्रभाव व्यापक था और थॉमस पेन न्यूटन से काफी प्रभावित थे न्यूटन की तरह थॉमस पेन का मानना था कि ईश्वर ने विश्व का निर्माण किया,उसे गति के नियम दिए और ऐसा करके वह इससे अलग हो गया,उन्होंने उसके बाद उसमें हस्तक्षेप नहीं किया, इसलिए ज्योतिराव के लिए उनका 'निर्माता' भी वैसा ही था। फुले का ईसाई धर्म के बारे में भी जबरदस्त आकर्षण था।

ज्योतिरावफुले भारतीय ज्ञानोदय के प्रमुख टिप्पणीकार थे, इसीलिए उनके विचारों में भी सुधारों और आलोचना का अधिक महत्व था। चूंकि उनका निर्माता अमूर्त है, इसलिए उसके साथ व्यक्तिगत संबंध बनाने का कोई भी प्रयास निरर्थक है। ज्योतिराव के दृष्टिकोण से, केवल निर्माता के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता रखना पर्याप्त है।

महात्माफुले का सत्य का विचार व्यवहारिक है। उन्होंने उनके सत्य धर्म का वर्णन करते समय लिखा है, कि 'सृष्टि के निर्माता ने सभी स्त्री-पुरुषों को जन्मतः स्वतंत्र और उनके मानवीय अधिकारों के धनी के तौर पर बनाया है। सृष्टिकर्ता की उपासना करने का सच्चा तरीका यह है कि प्राणीमात्र के उपभोग के लिए निर्माता ने जिन चीजों का निर्माण किया है उनका उपभोग सृष्टिकर्ता के प्रति कृतज्ञता रखकर करना और दूसरों को भी उस तरह का उपभोग करने देना ही सत्य धर्म है, अर्थात् सत्य धर्म के अनुयायियों को किसी भी प्राणी मात्र को व्यर्थ परेशान नहीं करना चाहिए और किसी भी अन्य व्यक्ति को उसके अधिकारों, राजनीतिक और धार्मिक स्वतंत्रता से वंचित नहीं करना चाहिए और उन पर जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए'। फुले जी के विचारों के अनुसार, निर्माता ने सभी मनुष्यों को कुछ समान और अपरिहार्य अधिकार दिए हैं। इसलिए सभी मनुष्यों समान हैं और कोई एक दूसरे के समान अधिकारों के साथ हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए,इस तरह से स्वयं के सुख को प्राप्त करने का प्रयास करना ही सत्य धर्म का पालन करना है। इस तरह न्यायपूर्वक आचरण करना सत्यधर्म का सार है। इसलिए जो व्यक्ति नीतिशील है, वह स्वयं के सुख के लिए दूसरों पर अन्याय करके खुद सुखी होने का प्रयास नहीं करेगा। स्वयं के अधिक सुख की कीमत दूसरों को चुकानी नहीं पड़ेगी। उसके पास इससे आगे जाकर अपनी खुशी की कीमत पर दूसरों को खुश करने की कोशिश करने का कोई कारण नहीं होगा। क्योंकि सत्यधर्म की व्यवस्था में कोई भी व्यक्ति सुख से वंचित नहीं रहेगा। ज्योतिरावफुलेजी के ये विचार आज एक वैकल्पिक समाज और संस्कृति का दर्शन करने वाले हैं।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद का मूल्यांकन उस समय के सैद्धांतिक आग्रहों पर न करते हुए भारत के तत्कालीन सामाजिक यथार्थ पर करने का विचार न केवल महात्मा फुले, बल्किराजा राममोहन राय से लेकर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जैसे सभी समाज-सुधारकों तक ने किया। आश्चर्यजनक है कि बीसवीं सदी के प्रथम तीन दशकों में भारत में जो प्रगतिशील आंदोलन हुए, चाहेव समाजवादी हों या साम्यवादी, उन्होंने महात्मा फुले की सामाजिक दृष्टि से क्रांतिकारी आंदोलन की विरासत को आगे क्यों नहीं बढ़ाया? यह प्रश्न अभी भी कई लोगों को परेशान करता है। महात्मा ज्योतिरावफुले को उनकी जयंती पर हार्दिक नमन।

निर्वाचन आयोग के निर्णय से स्टेंडिंग कमेटी के सदस्यों को कराया अवगत

केवल बसपा प्रत्याशी हेतु होगी नॉमिनेशन प्रक्रिया : कलेक्टर

●संसदीय क्षेत्र बैतूल हेतु मतदान की नई तिथि 7 मई

बैतूल। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार लोकसभा निर्वाचन 2024 के अनुक्रम में संसदीय क्षेत्र बैतूल-29 में 7 मई को मतदान किया जाएगा। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने कलेक्ट्रेट सभागार में स्टेंडिंग कमेटी के सदस्यों के साथ चर्चा करते हुए बताया कि निर्वाचन आयोग द्वारा बैतूल संसदीय क्षेत्र में बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी के लिए नॉमिनेशन प्रक्रिया का बिन्दुवार कार्यक्रम घोषित किया है। उल्लेखनीय है कि बैतूल संसदीय क्षेत्र के लोकसभा प्रत्याशी स्व. अशोक भलावी के निधन हो जाने पर जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा बैतूल में आगामी आदेश तक मतदान स्थगित

किया गया था। इसके पश्चात निर्वाचन आयोग को मतदान स्थगित किए जाने की सूचना दिए जाने के बाद ईसीआई द्वारा नॉमिनेशन एवं मतदान तिथि की घोषणा की गई। इस अवसर पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी पंचायत अक्षत जैन, पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया, एडीएम जयप्रकाश सैय्याम, एडीएम राजीव नंदन श्रीवास्तव, संयुक्त कलेक्टर अनिल सोनी, सहायक रिटर्निंग अधिकारी राजीव कहार उपस्थित थे।

बसपा प्रत्याशी के लिए नॉमिनेशन प्रक्रिया-

जिला निर्वाचन अधिकारी ने निर्वाचन आयोग द्वारा घोषित नॉमिनेशन कार्यक्रम से अवगत कराते हुए बताया कि नॉमिनेशन प्रक्रिया केवल बहुजन समाज पार्टी द्वारा नामांकित प्रत्याशी के लिए ही होगी। नॉमिनेशन के संबंध में शुक्रवार 12 अप्रैल 2024 को अधिसूचना जारी की जाएगी। नॉमिनेशन की अंतिम तिथि 29 अप्रैल 2024 निर्धारित की गई है। 20 अप्रैल को नामांकन प्रपत्र की संवीक्षा की जाएगी। 22 अप्रैल को नाम वापसी की अंतिम तिथि निर्धारित की गई है। स्टेंडिंग कमेटी की बैठक में भाजपा के बसंत बाबा माकोड़े एवं कैलाश धोटे, आईएनसी हेमंत पगारिया एवं देवेन्द्र वाद्य, बसपा के रमेश कुमार उबनारे, निर्दलीय उम्मीदवार भागचरण वरकड़े एवं जादोराव सूर्यवंशी, आम आदमी पार्टी के जिलाध्यक्ष शैलेश वाईकर, निर्दलीय उम्मीदवार भूरेलाल बैठेकर एवं निर्दलीय रूपेश जावलकर तथा बीएपी के अनिल उईके उपस्थित थे।

बसपा प्रत्याशी का हुआ अंतिम संस्कार

कांग्रेस प्रत्याशी रामू ने अर्थी को दिया कंधा, दूसरे दलों के नेता भी हुए शामिल

बैतूल। बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी अशोक भलावी की मंगलवार की दोपहर हार्ट अटैक से मौत के बाद आज उनके पैतृक गांव सोहागपुर में अंत्येष्टि की गई। मुखाग्नि उनके बड़े बेटे ने दी। इस मौके पर कई राजनैतिक दलों के नेता और प्रत्याशी मौजूद रहे। वहीं कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम ने उनकी अर्थी को कंधा दिया। बीएसपी ने अशोक भलावी को बैतूल लोकसभा क्षेत्र से पार्टी उम्मीदवार बनाया था। उन्होंने पार्टी प्रत्याशी के तौर पर 5 अप्रैल को अपना नामांकन भी दाखिल कर दिया था। फॉर्म की स्कूटनी और नाम वापसी की प्रक्रिया भी पूरी हो चुकी थी। इसी बीच मंगलवार को अचानक अशोक भलावी का निधन हो गया। बुधवार को उनके गृह ग्राम सोहागपुर में उनकी अंत्येष्टि की गई। गांव के करीब सांपना बांध के वेस्ट वेयर पर पाठा नाला में उन्हें मुखाग्नि दी गई। इस मौके पर बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, निर्वतमान सांसद और भाजपा प्रत्यासी डीडी उइके, कांग्रेस प्रत्याशी रामू टेकाम, बीएसपी के जिला संगठन के उपाध्यक्ष इंदरकुमार शेषकर समेत कई दलों के पदाधिकारी नेता और उनके रिश्तेदार अंतिम यात्रा में शामिल हुए।

इस मौके पर पार्टी के जिला उपाध्यक्ष इंद्रकुमार शेषकर ने बताया कि पार्टी अगले प्रत्याशी को लेकर विचार कर रही है। अशोक भलावी की पार्टी में सहभागिता और उनके राजनैतिक सफर को देखते हुए विचार किया जा रहा है कि उन्हीं के परिवार से किसी को उम्मीदवार बनाया जाए। इस पर पार्टी प्रदेश अध्यक्ष से चर्चा की जा रही है।

नटराज डांस एकेडमी में कन्याभोज करा कर मनाया गुड़ी पड़वा पर्व

बैतूल । बैतूल शहर के नटराज डांस एकेडमी में 9 अप्रैल को हिंदू नव वर्ष गुड़ी पड़वा का पर्व एकेडमी के कन्याओं को भोज करा कर नव वर्ष का स्वागत किया। नटराज एकेडमी की संचालिका श्रीमती शीतल निरापुरे एवं संयोजक दुर्गेश निरापूरे तथा भाभी खातरकर ने बताया कि हमारे सनातनी धर्म के अनुसार गुड़ी पड़वा से ही नव वर्ष की शुरुआत होती है। इस दिन भगवान ब्रह्मा ने ब्रह्मांड की रचना की थी, इसलिए इस दिन की खास महत्व है।

उन्होंने बताया कि मान्यताओं के अनुसार गुड़ी पड़वा सत्य और धार्मिकता के युग सतयुग की शुरुआत का प्रतीक है। इस दिन का ऐतिहासिक महत्व भी है। उन्होंने बताया कि इस दिन छत्रपति शिवाजी महाराज ने मुगलों को हराकर राज्य को मुगलों से मुक्त कराया था। यही प्रमुख कारण है कि लोग इस दिन गुड़ी पड़वा को पर्व के रूप में मनाते हैं। खास तौर से महाराष्ट्र में इनका प्रचलन ज्यादा है। इन्होंने बताया कि 9 अप्रैल को गुड़ी पड़वा का पर्व एकेडमी के बच्चों ने बड़े ही उत्साह के साथ डांस आदि करके मनाया और नववर्ष का स्वागत किया जो की देखने और स्वागत योग्य रहा है । इस उत्सवी मौके पर विशेष अतिथि के रूप में बैतूल नगर पालिका के सेवानिवृत्त ऑडिटर बंटी वासनिक मौजूद थे। श्री वासनिक ने नटराज डांस एकेडमी द्वारा आयोजित गुड़ी पड़वा पर कार्यक्रम की मुक्त कंठ से प्रशंसा की ।

इन बच्चों ने किया डांस: गुड़ी पड़वा पर इस एकेडमी में आयोजित कार्यक्रम में रत्नमाला, सौम्या, हूनर, नूतन, निशिता, आदिरा, ईकवीरा, प्रियल, रूही, श्रेया , सुरभि, समृद्धि, आरोही, तेजस्वी,आदित्य विश्व, ओजस्वी, स्मिता, किरण, अमित, संगीता, आन्या, नीलम, सरिता आदि ने नयनाभिराम डांस प्रस्तुत किया।

सरस्वती शिशु मंदिर आचार्य दीदियों की अभिनव पहल, विक्रम संवत् 2081 के आगमन पर तिलक लगाकर अभिवादन

हीरालाल गोलानी

सोहागपुर। विघाभारती मध्यप्रान्त प्रांत के तत्वावधान में प्रदेश के सरस्वती शिशु मंदिर हमेशा पढ़ाई के साथ भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्य करती रहती है।इसी तारतम्य में आज नूतन वर्ष विक्रम संवत 2081 तथा युगाब्द 5126 के अवसर पर सरस्वती शिशु मंदिर के प्राचार्य के नेतृत्व में नगर के प्रमुख मंदिरों पर नगरवासी महिलाओं एवं नागरिकों को तिलक लगाकर नववर्ष मनाकर शुभकामनाएं देकर सभी को सुखी रहने एवं निरोगी काया रहने की कामना की। सरस्वती शिशु मंदिर के प्राचार्य अशोक दुबे ने सुबह सवेरे संवाददाता को बताया कि शाला के

आचार्य एवं दीदियों ने मंदिर परिसर की स्वच्छता करके आकर्षक रांगोलीया बनाई गई। आपने आगे बताया कि सनातन संस्कृति में वर्ष प्रतिपदा नूतन वर्ष आज ही के दिन विक्रम संवत प्रारम्भ हुआ, युगाब्द (युधिष्ठिर संवत) का प्रारंभ हुआ था ।

गुरु अंगद देव तथा सभी प्रकार के शक संवत् का प्रारम्भिक दिन आज ही है । इसी क्रम में आज के दिन ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आद्य सरसंघचालक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का जन्मदिन भी हुआ था । आज के दिन ही पृथ्वी मां का जन्मदिन भी है इसी कारण आज का दिन सनातन संस्कृति के लिए महत्वपूर्ण है। इस अभिनव पहल में संतोष पटेल, सुधीर मीना, मुकेश साहू, प्रदीप देवलिया, लाल साहब, संतोष देवलिया, सत्येन्द्र दुबे, जीवन दुबे, पंचम नागवंशी, संजय वानवंशी, राजेन्द्र गिरि, हेमन्त वाला, संतोष चौरसिया, मुकेश यादव, श्रीमति ममता यादव, श्री मति कल्पना शर्मा, कीर्ति चौरसिया, नीता भावसार, कृष्णा मालवीय, सीता विश्वकर्मा, जूही शर्मा,सुश्री श्रष्टि साहू, दीपशिखा पुरोहित आदि ने सहभागिता निभाई।

दाऊदी बोहरा समाज ने मनाई ईद, अमन चैन की मांगी दुआ

सुबह सवेरे सोहागपुर। आज दाऊदी बोहरा समाज ने जमाली मस्जिद में ईद का उत्सव मनाया।इस अवसर पर दाऊदी बोहरा समाज के इमाम मुल्ला ताहा जिन वाला ने ईद नमाज अदा कराई। जिसमें ईद का कुतुबा पढ़ा गया। इस अवसर पर दाऊदी बोहरा समाज ने देश की उन्नति शांति अमन चैन की भाईचारे की दुआ की। दाऊदी बोहरा समाज की ईद के अवसर शेख शब्बीर हुसैन, शेख सफदर अली, डॉ जोएब अली, अब्बास अली, मुफद्दल हुसैन, अलीअसगर अली, यूसुफ अली, मुर्तजा भारमल, जुजार अली, होजेफा हुसैन आदि उपस्थित थे।

भाजपा प्रत्याशी सावित्री ठाकुर ने सादलपुर और कानवन मंडल में किया सघन जनसपंर्क

मोदीजी के नेतृत्व में पूरी दुनिया में भारत शक्तिशाली बनकर उभरा है : सावित्री ठाकुर

धार। धार महू लोकसभा क्षेत्र की भाजपा प्रत्याशी सावित्री ठाकुर ने बुधवार को बदनावर विधानसभा क्षेत्र के सादलपुर और कानवन मण्डल में सघन जनसंपर्क किया। दौरे के दौरान पूर्व कैबिनेट मंत्री राजवर्धनसिंह दत्तीगांव, भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी, पूर्व विधायक खेमराज पाटीदार, पूर्व राज्यमंत्री महेंद्रसिंह सक्तावत, विधानसभा प्रभारी दिलीप पटोदिया, सादलपुर मंडल अध्यक्ष मुन्नालाल पटेल, कानवन मंडल अध्यक्ष धर्मेंद्र राठौड मौजूद रहें। गांव खेरोद में संबोधित करते हुए भाजपा प्रत्याशी ने कहा कि देश में जितने भी दल राजनीति में सक्रिय हैं, उनमें से भारतीय जनता पार्टी सबसे अलग है। भाजपा कार्यकर्ताओं पर आधारित दल है और कार्यकर्ता ही उसे चलाते हैं। कार्यकर्ताओं की बदौलत ही भारतीय जनता

पार्टी आज दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बन सका है। उन्होंने कहा कि भाजपा का हर कार्यकर्ता पार्टी का निष्ठावान सिपाही है। पार्टी और उसकी विचारधारा के लिए हर कार्यकर्ता दिन-रात सक्रिय रहता है। कार्यकर्ताओं ने डबल इंजन सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाया है और हर पात्र व्यक्ति को इन योजनाओं का लाभ मिल सके, यह सुनिश्चित किया है। पूर्व मंत्री दत्तीगांव ने कहा कि यह लोकसभा चुनाव देश की दशा व दिशा को तय करेगा। पीएम मोदी के नेतृत्व में पूरी दुनिया मे भारत शक्तिशाली बनकर उभरा है। हमे इस चुनाव में हर बूथ पर पार्टी को प्रचंड वोटों से जीताना है। भाजपा जिलाध्यक्ष सोमानी ने भी संबोधित कर भाजपा के पक्ष में अधिक से अधिक मतदान का आव्हान किया। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि भाजपा भाजपा प्रत्याशी श्रीमती ठाकुर ने सादलपुर मंडल ग्राम खेरोद से नुक्कड़ सभा कर आरम्भ किया। वहां जनसंपर्क करने के पश्चात सादलपुर, बिजूर, केसुर, कंडारिया, सरवनिया होते हुए कानवन मंडल ग्राम ढोलानाखुर्द, खाचरोदा पायकुंडा, मुरडका, नागौरा पलवाड़ा, मनासा व माकनी में जनसंपर्क किया। इस दौरान भाजपा नेता समंदरसिंह पटेल, जनपद अध्यक्ष प्रतिनिधि प्रहलादसिंह सोलंकी, विधानसभा सह संयोजक शिवराम रघुवंशी, ओमप्रकाश दय्या, संजय शुक्ला, जिला कार्यालय मंत्री जगदीश जाट, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, चतरसिंह ठाकुर बिजुर, मलखानसिंह बिजुर, ईश्वर कटारा, अनामिका ठाकुर, रतन लाल पाटीदार, राजेश वर्मा, विवेक पाटीदार, जसवंतसिंह नवासा, नारायण सिंह पटेल, विकास शर्मा, गोवर्धनसिंह गोहिल, नरवरसिंह लववंशी, राजेंद्र छटिया, रामसिंह पटेल, रामेश्वर दांगी, अनोपसिंह, कपिल यादव, शैलेंद्रसिंह गोहिल पिंजराया, शोभाराम कामदार, जितेंद्र मंडलोई, नरेशचंद सिसोदिया, राजेश रघुवंशी, सतीश यादव, निर्भयसिंह सरपंच, महेंद्र, कमल सोलंकी, कैलाश चौहान, किशोर,सुरेन्द्र जाट जनपद सदस्य माचकदा,दीपक राठौड़ केसूर, अशोक चौधरी केसुर, आशीष जैन ,राहुल अग्रवाल, राहुल परमार,फूल सिंह वर्मा, समेत बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

प्रशासन दायित्व निर्वहन नहीं कर पा रहा क्या..?

नर्मदापुरम। प्रशासनिक कार्य-प्रणाली को लेकर एक बार फिर प्रशासन सुर्खियों में है। लोकसभा चुनाव के लिए 26 अप्रैल को मतदान होगा निश्चित है। पर नगर में आज भी सार्वजनिक क्षेत्रों में नेताओं के पोस्टर और उनकी क्रियान्वित योजनाओं के कसीदे नियम की खिल्ली उड़ाते हैं। बस स्टैंड के

सामने वक्रतुंड काम्प्लेक्स में लगे ये होर्डिंग उसका उदाहरण है।

कोतवाली पुलिस ने चार मामलों में फरार स्थायी वारंटी को किया गिरफ्तार

बैतूल। वर्ष 2019 के प्रकरण क्रमांक 110/2019 धारा 138 एनआईए एक्ट में न्यायालय द्धारा 7.12.2019 में आरोपी अरुण येवले पिता रामू येवले उम्र 45 साल निवासी खंजनपुर का स्थायी वारेंट जारी किया गया था। आरोपी के विरुद्ध अन्य 03 प्रकरणों में 178/19 धारा 138 एनआईए एक्ट में दिनाँक 8.4.23 को, प्रकरण क्रमांक 169/2019 धारा 138 एनआईए एक्ट में दिनाँक 08.04.23, प्रकरण क्रमांक 227/2018 में दिनाँक 11.1.2024 को जारी। किया गया था। आरोपी किराया के मकान में कालीचट्टन में छुप कर रह रहा था। कोतवाली पुलिस को मंगलवार 9 अप्रैल 24 को गिरफ्तार करने में सफलता मिली है। उक्त वारण्टी को गिरफ्तार करने में देवकरण डेहरिया थाना प्रभारी कोतवाली के निर्देशन में सउनि अजय अजनेरिया, प्रआर. विनय पांडे, आर दिनेश मोरी, आर. शशांक, आर. अभिषेक, सैनिक नितिन साहू का विशेष योगदान रहा।

एफएसटी एवं भैंसदेही पुलिस की संयुक्त टीम ने 12 लाख 30 हजार के सोना-चांदी के आभूषण किए जप्त

बैतूल। पुलिस अधीक्षक निश्चल झारिया एवं अति पुलिस अधीक्षक कमला जोशी तथा एसडीओपी भैसदेही भूपेन्द्र सिह मौर्य, एसडीएम भैंसदेही शैलेन्द्र हनोतिया, तहसीलदार भैसदेही चन्द्रपाल इवनाती के निर्देशन एवं थाना प्रभारी भैंसदेही अंजना धुर्वे के नेतृत्व में थाना भैंसदेही क्षेत्रान्तर्गत एफएसटी टीम गुदगांव एव थाना भैंसदेही पुलिस की संयुक्त टीम ने ग्राम सावलमेंढा के पास जडवाली ढावा के सामने दिनाँक 9.4 2024 को शाम को ग्राम सावलमेंढा की ओर से परतवाडा रोड पर आ रही एक सफेद रंग की कार को रोक कर चैकिंग की, तो कार की पीछे डिग्गी में रखे बैग से 20 ग्राम सोना कीमत 1 लाख 30 हजार एव 13949 ग्राम चांदी कीमत 11 लाख कुल कीमत 12 लाख 30 हजार रूपये मिले जिसके सवध में कोई बैध दस्तावेज नही पाये जाने से विधिवत जप्त किया गया।

भगवान झूलेलाल जयंती का पर्व धूमधाम से मना

हुए विभिन्न आयोजन, शोभायात्रा का जगह-जगह भव्य स्वागत

●समाज के लोगों द्वारा बढ़-चढ़ कर किया रक्तदान

बैतूल। पूज्य सिंधी पंचायत बैतूल के तत्वाधान में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी मंगलवार 9 अप्रैल एवं बुधवार 10 अप्रैल को भगवान झूलेलाल की जयंती का पर्व पूरे धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर बैतूल शहर में प्रतिवर्षनुसार इस

वर्ष भी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें सर्वप्रथम प्रातः 9.30 बजे मोहन कालोनी गंज क्षेत्र से वाहन रैली निकाली गई। जिसमें समाज के युवाओं सहित वाहन रैली में सिंधी समाज के सैकड़ों श्रद्धालु शामिल हुए। जय झूलेलाल का जयकारा लगाते हुए रैली गंज, कॉलेज चौक, थाना चौक, लल्ली चौक, बस स्टैंड, शिवाजी चौक होते हुई गंज स्थित सिंधी कालोनी पहुंची, जहां वाहन रैली का समापन किया गया। इसके

बाद दोपहर में रक्तदान का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें सिंधी पंचायत बैतूल के सदस्यों द्वारा बढ़चढ़कर रक्तदान किया गया। समाज के धीरज हिरानी ने बताया कि दोपहर 1 से 3 बजे तक सिंधी कॉलोनी गंज में भंडारे का आयोजन किया गया था। भंडारे में समाज के श्रद्धालुओं समेत हजारों की संख्या में शामिल श्रद्धालुओं ने प्रसादी ग्रहण की। शाम 5 बजे विजय तलेड़ा के निवास से भगवान झूलेलाल बहराणा साहिब की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। यात्रा में समाज के वरिष्ठों के अलावा युवा, महिलाएं, बच्चे शामिल हुए। यात्रा गंज मैकेनिक चौक, गुरुद्वारा रोड, डॉ अशोक साबले चौक होती हुई काशी तालाब पहुंची, जहां देर शाम पवित्र ज्योत का विसर्जन किया गया। जगह-जगह शोभायात्रा का स्वागत फूलों की वर्षा, जलपान द्वारा किया गया। साथ ही इस अवसर पर समाज की प्रतिभाओं का सम्मान किया गया एवं अन्य क्षैत्र में भी प्राप्त उपलब्धियों के लिए भी प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर पूज्य सिंधी पंचायत के नरेंद्र हिराणी, चंदूमल थारवानी, बंटी मोटवानी, गिरीश करेरा, धीरज हिरानी, बलराम जसूजा, अन्नू जसूजा, सागर हिराणी, गणेश आहूजा, जितेंद्र पेसवानी समेत समाज के लोग बड़ी संख्या में मौजूद रहे। अंत में पूज्य सिंधी पंचायत बैतूल द्वारा सभी समाज संगठनों, गणमान्य नागरिकों, प्रबुद्धजनों से मिले सहयोग के लिए उन सभी का आभार व्यक्त किया है।

कुनबी समाज की महिलाओं ने हाथ में गुड़ी एवं राम दरबार की झांकी बनाकर निकाली शोभायात्रा

बैतूल। लोणारी कुनबी महिला संगठन बैतूल की महिलाओं ने महाराष्ट्रीयन वेशभूषा में सज धज कर हाथ में गुड़ी लेकर एवं राम दरबार की शोभायात्रा निकाली। नव वर्ष गुड़ी पड़वा के अवसर पर यह शोभायात्रा निकाली गई। नगर पालिका अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर ने पूजन करके शोभायात्रा को रवाना किया। शोभायात्रा महाकाल मंदिर चौक से लल्ली चौक, कलेक्ट्रेट होते हुए शिवाजी चौक पहुंची। शोभायात्रा में मतदाता जागरूकता का संदेश भी दिया गया। एक दूसरे को बधाई प्रेषित की गई। संगठन की अध्यक्ष श्रीमती रेखा बारस्कर, रैली प्रभारी माधुरी मस्की, सह प्रभारी सोनू धोटे ने आगंतुको का आभार व्यक्त किया। कोषाध्यक्ष लता कनाठे, सह

कोषाध्यक्ष मनीषा कनाठे, सह उपाध्यक्ष वंदना काले, संयुक्त सचिव कल्पना चढ़ोकार, पूर्व उपाध्यक्ष अलका ताई साबले, अर्चना बर्डे ने सुंदर गुड़ी बनाने का कार्य एवं राम दरबार की झांकी के कार्य को अपने हाथों में लेकर कार्य को बखूबी से पूर्ण किया। नीलम वागद्रे, जमुना पंडागरे ने सभी का हृदय से आभार व्यक्त किया। समापन के अंत में भंडारा प्रसादी वितरित कर कार्यक्रम समाप्त हुआ। ममता कुबडे, लता माकोड़े, योगिता गायकवाड़, गीता कुबडे ने शोभा यात्रा को अनुशासन पूर्वक बनाते हुए व्यवस्था संभाली। शोभायात्रा में जिलाध्यक्ष दिनेश मस्की, सचिव प्रवीण ठाकरे, सेवा संगठन के अध्यक्ष शिव शंकर चढ़ोकर, समाजसेवी मुन्ना मानकर, गोलू उघडे, कृष्णा वागद्रे, गीतेश बारस्कर, भीम धोटे, अकलेश वाघमारे, नामदेव बारस्कर, संतोष बारस्कर ने सहयोग प्रदान किया। संरक्षक मंडल में वंदना ताई देशमुख, चंद्रकांताआई लिखितकर, अलकताई लिखितकर, माधुरी ताई साबले आदि उपस्थिति रही।

हमारे व्यवहार में राष्ट्र के लिए अधिकार नहीं अपितु कर्तव्य का भाव होना चाहिए

संघ के शताब्दी वर्ष में नगर का प्रकटोत्सव कार्यक्रम संपन्न

धार। शहर का किला मैदान अनुशासन और एकता का एक बार फिर से साक्षी बना। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर प्रकटोत्सव का करीब दो माह से लगातार अलग-अलग 14 व्यवसायिक, 8 बाल तथा 2 महाविद्यालीन विद्यार्थी शाखाओं में तैयारी कर रहे सैकड़ों स्वयंसेवकों ने मंगलवार शाम होते ही संघ की शाखाओं में होने वाले शारीरिक कलाकृतियों का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सर्वप्रथम आरएसएस के संस्थापक परम पूज्यनीय डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार के सम्मुख अतिथियों द्वारा पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया । संघ के संस्थापक परम पूज्यनीय डॉक्टर केशवराव बलिराम हेडगेवार जिनको वर्ष में एक बार प्रत्येक स्वयंसेवक द्वारा प्रणाम किया जाता है । वह प्रणाम ठीक तय समय पर स्वयंसेवकों द्वारा किया गया। उसके पश्चात प्रत्युत प्रचलनम, ध्वज प्रदिक्षणा, गण समता, विशेष दंड प्रयोग, नियुद्ध, सामूहिक समता, मनोरा, विशेष योगासन एवं घोष वादन से संपन्न हुआ। जिसके बाद सामूहिक योग का प्रदर्शन सभी स्वयंसेवकों द्वारा किया गया। तत्पश्चात शिक्षक की आज्ञा पर कदम से कदम मिलाकर विभिन्न आकृतियों का प्रदर्शन किया गया। एक शिक्षक की आज्ञा पर कदमताल करते हुए एक साथ आना आकर्षण का केंद्र रहा। पांचवे गण द्वारा नियुद्ध का प्रदर्शन किया गया। नियुद्ध देसी कला है। इसमें एक निहत्था व्यक्ति भी आक्रमणकारी को आसानी से धराशायी कर सकता है। समाज की सुरक्षा के लिए शाखा में स्वयंसेवकों को इसका अभ्यास कराया जाता है। इस कला से स्वयंसेवक समाज की रक्षा कर सकता है। वही दंड का प्रदर्शन स्वयंसेवकों द्वारा किया गया। सामान्य दंड द्वारा स्वयंसेवकों ने चारों दिशा में प्रहार लगाते हुए किस प्रकार भीड़ का सामना करना एवं कैसे अपनी व समाज की सुरक्षा की जाती है उसका प्रदर्शन किया और अंत में दंडधारी स्वयंसेवकों ने भूमि वंदन कर अपना प्रदर्शन समाप्त किया। कार्यक्रम हेतु आरएसएस के जिला संघचालक बाबूलाल हामड़, कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व कार्यपालन यंत्री एवं समाज सेवी स्वयं प्रकाश सोनी ने की। मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मध्य क्षेत्र के शारीरिक प्रमुख जितेंद्र पवार रहे। मुख्य वक्ता ने कहा की संघ एक आदर्श व्यक्ति निर्माण करने वाली संस्था है। किसी को संघ को समझना है तो संघ में आना पड़ेगा। प्रकटोत्सव कार्यक्रम के माध्यम से समाज संघ को थोड़ा सा समझने का प्रयास कर सकता है। साथ ही वक्ता ने कहा की 1925 में डॉक्टर केशव बलिदान हेडगेवार जी ने जो संघ रूपी बीज बोया था आज वह संघ दुनिया का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है। जिस प्रकार से अगरबत्ती जलकर पूरे वातावरण को सुगंधित कर अपना अस्तित्व समाप्त कर पूरे वातावरण में घुल जाती है उसी प्रकार राष्ट्र को परम वैभव प्राप्त होते ही संघ भी पूरी तरह अपने आप को समाज में ही विलय कर लेगा। संघ की स्थापना को आज 99 वर्ष होने जा रहे हैं। स्वयंसेवकों के अथक प्रयासों से आज समाज में परिवर्तन दिखाई दे रहा है। भारतीय संस्कृति की परंपराओं को जीवन मूल्यों को हमको अपने जीवन में लाने की आवश्यकता है । हम सबको अपने जीवन में कुछ बातों का विचार करना पड़ेगा । हमारे परिवार में जो विखंडन की स्थिति है तो हमारा परिवार संयुक्त परिवार बने इसके लिए सप्ताह में एक दिन हमारे परिवार के सब परिवार जनों को 1 घंटे के लिए या महीने में 1 दिन आपस में बैठकर भोजन, भजन और संकीर्तन करने की आवश्यकता है । जिस से निश्चित परिवार में आ रही दूरियां खत्म होगी । साथ ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति हमारी जिम्मेदारियां तय करना होगी। प्लास्टिक का उपयोग बंद करके कपड़े की थैलियों का इस्तेमाल करना , पानी बचाने के लिए वाटर रिचार्ज सिस्टम लगाना। साथ ही सामाजिक समरसता , नागरिक कर्तव्य के प्रति हमारी जिम्मेदारी के प्रति भी विचार करने के आवश्यकता है । नगर प्रकटोत्सव में नियुद्ध कला से लेकर दंड प्रहार आदि का प्रदर्शन किया। समाज जब इस तरह के आयोजन देखता है तो निश्चित रूप से वह गौरवान्वित होता है। इस आयोजन में शहर के प्रमुख लोग शामिल हुए। सबसे अहम बात यह थी कि स्वयंसेवकों ने जिन 14 शाखाओं में प्रशिक्षण में पसीना बहाया था, उसी तैयारी से किला मैदान के प्रकटोत्सव में साकार करके दिखाया।

घोष दल द्वारा घोष के शिक्षक के संकेत पर अलग

अलग धुनों का वादन किया। वाह्य बजाते हुए अलग-अलग आकृतियों का निर्माण किया। इस वादन ने आगंतुकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रदर्शन के पश्चात सामूहिक प्रदर्शन प्रारंभ हुआ। इसमें सैकड़ों स्वयंसेवकों द्वारा सामूहिक व्यायाम योग एवं आसन का प्रदर्शन किया गया। यह प्रदर्शन श्लोकों के साथ किया गया। अंतिम प्रदर्शन सामूहिक गीत का हुआ। कार्यक्रम देखने आया समाज कार्यक्रम देख कर बहुत ही उत्साही नजर आया ।

वैश्य महासम्मेलन द्वारा गुड़ी पड़वा महोत्सव वैश्य समाज सम्मेलन के स्थापना दिवस के रूप में मनाया गया

धार। समस्त वैश्य समाज के घटक परिवारों द्वारा सामूहिक रूप से गुड़ी पड़वा उत्सव को एक साथ एकत्रित होकर वैश्य दिवस के रूप में धूमधाम से मनाया गया। प्रातः से ही सभी वैश्यजन कार्यक्रम की तैयारी को लेकर उत्साहित हो रहे थे,शाम को सामूहिक रूप से सभी वैश्य घटक परिवार एकत्रित होकर विशाल वैश्य एकता शोभायात्रा का आयोजन किया गया। शोभायात्रा कार्यक्रम के संयोजक एवं जिला उपाध्यक्ष प्रवीण गुप्ता के नेतृत्व में आगे बढ़ रही थी उनके द्वारा संपूर्ण शोभा यात्रा के दौरान मीना गर्ग विट्ठल गर्ग के सहयोग से शानदार 10 लकी ड्रा का आयोजन रखा गया, जो शोभायात्रा के मार्ग में वैश्य घटक दल के समाज अध्यक्षों द्वारा लकी ड्रा निकालकर सभी विजेताओं को पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम में वैश्य घटक परिवार के श्वेतांबर समाज से प्रकाश बाफना ,वर्धमान सुराणा, अग्रवाल समाज से योगेश अग्रवाल, माहेश्वरी समाज से राकेश बाहेती,लाड समाज से जगदीशचंद्र गुप्ता, विजयवर्गीय समाज से राधेश्याम विजयवर्गीय, दिगंबर समाज से श्रेणिक गंगवाल, सुगंधी समाज से प्रेम नारायण सुगंधी, नीमा समाज के समाजजन इस प्रकार उक्त सभी अध्यक्षों ने सामूहिक रूप से इस कार्यक्रम में महिला पुरुषों के साथ सम्मिलित होकर वैश्य एकता शोभायात्रा को सफल बनाया। शोभायात्रा में पधारे सभी समाज जनों का जिला अध्यक्ष विजय मेहता ने स्वागत अभिनंदन किया। महिला जिला अध्यक्ष रेखा मेहता द्वारा सभी महिलाओं का स्वागत वंदन अभिनंदन किया। इस कार्यक्रम में प्रदेश महामंत्री महेश माहेश्वरी, प्रदेश मंत्री योगेश अग्रवाल, जिला प्रभारी डा विजयवर्गीय, नगर अध्यक्ष परिणय अग्रवाल ,युवा अध्यक्ष मोहित तातेड, महिला सम्भाग अध्यक्ष सरोज सोनी, प्रभारी हर्षा रूनवाल की भी सहभागिता रही कार्यक्रम के अंत में सभी समाज जनों का शिकंजी प्रसाद वितरण कर प्रसाद वितरण कर सभी का जिला उपाध्यक्ष श्री विनय छाबड़ा द्वारा आभार माना गया। जिला अध्यक्ष श्री मेहता ने संपूर्ण कार्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न करने पर कार्यक्रम संयोजक प्रवीण गुप्ता को धन्यवाद दिया गया। जानकारी जिला महामंत्री गोपाल गुप्ता द्वारा दी गई।

जिले में सी-विजिल एप के माध्यम से प्राप्त 66 शिकायतों का किया गया त्वरित निराकरण

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री मिश्रा ने किया जिला पंचायत सभागार में स्थापित कंट्रोल रूम का अवलोकन

धार। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी प्रियंक मिश्रा ने जिला पंचायत सभागार में लोकसभा निर्वाचन के मद्देनजर स्थापित किए गए कंट्रोल रूम का अवलोकन किया। यहां उन्होंने मीडिया मॉनिटरिंग कमेटी, कंट्रोल रूम पर प्राप्त शिकायतों और सी विजिल एप पर प्राप्त शिकायतों के निराकरण के संबंध में उपस्थित स्टाफ से जानकरियां ली। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी प्रियंक मिश्रा को जानकारी दी गई कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में निर्वाचन संबंधी शिकायतों का त्वरित और समय-सीमा में निराकरण सुनिश्चित किया जा रहा है। निर्वाचन संबंधी शिकायतों के त्वरित निराकरण में सी-विजिल एप बेहद मददगार हो रहा है। जिले में लोकसभा चुनाव के मद्देनजर लागू आचार संहिता के बाद से सी-विजिल एप के माध्यम से अब तक प्राप्त 66 शिकायतों का त्वरित और निर्धारित समय-सीमा में निराकरण किया गया। जिला पंचायत कार्यालय में स्थापित यह कंट्रोल रूम 24ङ्क7 कार्य कर रहा है। प्रदेश में 16 मार्च से आदर्श चुनाव आचरण संहिता लागू होते ही सी-विजिल एप पर शिकायतें प्राप्त होने लगी हैं। आज दिनांक तक जिले में उक्त एप के माध्यम से कुल 66 शिकायतें प्राप्त हो चुकी हैं। इन सभी शिकायतों का त्वरित निराकरण कर दिया गया है। साथ ही हृतस्क्क पोर्टल, 235143 पर, 1950 कॉल सेंटर और ऑफलाइन पर भी प्राप्त शिकायतों का निराकरण किया जा रहा है। नागरिकों से अनुरोध किया गया है कि यदि वे निर्वाचन में आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन से जुड़ी किसी भी प्रकार की सीधी शिकायत करना चाहते हैं, तो वे सी-विजिल एप के माध्यम से कर सकते हैं।

साइकिलिंग एक जुनून ये जानने की जिज्ञासा

नर्मदापुरम। नगर को बाढ़ से बचाने के लिए सरकार द्वारा करोड़ों की भारी-भरकम राशि से बाढ़ रोधी पिचिंग निर्माण में आखिर क्या चल रहा यह जानने की उत्कंठा भले ही नगर के जिम्मेदारों को न हो लेकिन नगर के भविष्य को लेकर नव युवक की बैचेनी ध्यान देने योग्य है। यह परिस्थिति शायद नर्मदा की बाढ़ से पहले निर्माणाधीन पिचिंग को देखने उसे जानने समझने की कवायद की यह छोटी शुरुआत हो जो सुबह सुबह नर्मदा किनारे बन रहे पिचिंग निर्माण को देखने की ललक उस ओर युवकों का ध्यान आकर्षित कर रही है।

भाजपाई उम्मीदवार पर उनके ही नारे से होने लगे सीधे प्रहार

नर्मदापुरम। होशंगाबाद नरसिंहपुर संसदीय क्षेत्र में फिलहाल होने वाले लोकसभा चुनाव को लेकर चुनाव हलचल, चुनावी चक्कलस, चुनावी चर्चाएं, चुनावी पोस्टर, चुनावी स्लोगन, चुनावी किस्से, चुनावी कविताएं जैसे पहले मुखरित हुआ करती थी मुखरित नहीं है जो एहसास करा सके आने वाले दिनों चुनाव आपेक्षित है। वैसे दो प्रमुख राजनीतिक दल सहित अन्य 10 उम्मीदवारों ने यहां मैदान में अपना भाग्य आजमाने के लिए नामांकन पत्र दाखिल कर दिया लेकिन चुनाव प्रचार की कोई गरमी दिखाई नहीं देती। अलबत्ता आने वाले दिनों प्रधानमंत्री के चुनाव प्रचार में आने की चर्चा जरूर आम है। होशंगाबाद नरसिंहपुर संसदीय क्षेत्र में इस बार भाजपा और कांग्रेस प्रत्याशी में कड़ा मुकाबला समझ आ रहा है। जबकि कांग्रेस उम्मीदवार संजय शर्मा का भाजपा के दर्शन सिंह से सीधा मुकाबला नहीं बल्कि खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से होगा तय है। मतदाताओं की भाजपाई मानसिकता को संजय शर्मा अपनी रणनीति से कितना बदल पाते यह आने वाला समय तय करेगा। बहरहाल भाजपा उम्मीदवार दर्शन सिंह चौधरी की मुखालफत खुद उन्हें अपने सूबे में उन भाजपाई नेताओं से झेलना होगी जो किसी भी तरह क्षेत्र में राजनीति की बड़ी दुकान खुलने नहीं देना चाहेंगे। उसी कड़ी की लड़ाई एक तरह से नरसिंहपुर जिले से आने लगी। कुछ वर्ष पहले भाजपा सरकार की मुखालफत करने वाले नेता दर्शन सिंह जो अब खुद भाजपा से चुनाव लड़ रहे है वर्ष 2016 में नरसिंहपुर के पीजी कॉलेज में उस समय अध्यापक हितों के लिए लड़ने वाले राज्य अध्यापक संघ के प्रदेश महासचिव दर्शन चौधरी ने नारा बुलंद किया था। पहले लड़े थे चोरों से अब लड़ेंगे गोरो से... यह नारा भाजपा सरकार के खिलाफ था और नारा बुलंद करने वाले दर्शन सिंह आज भाजपा के लोकसभा उम्मीदवार हैं .. वर्ष 2016 में प्रकाशित अग्निबाण की चर्चित खबर क्षेत्र में एक बार फिर इस चुनावी माहौल में सामने उभर आई।

पहले 15 दिन, फिर एक माह अब दो माह के अंतराल से हो रही है सफाई, मच्छरों की भरमार से बीमारियों का बढ़ा खतरा

नगर पालिका स्वच्छता विभाग की लापरवाही से लोगों को रहीं मुश्किलें

आमला। शहर के लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं में शामिल पानी बिजली सड़क सफाई के लिए लोगों को अब नगर पालिका से जूझना पड़ रहा है, हालत यें है कि लोगों को अब यें भी समझ में नहीं आ रहा है कि आखिर अब अपनी फरियाद लेकर जाए तो जाएं कहां। खासकर पेयजल और सफाई जैसे मामलों की लगातार शिकायतें बढ़ रही है, और सुनने वाला कोई नजर नहीं आ रहा है शहर के ऐसे प्रभावित वार्डों के पार्षद भी नगर पालिका की नीति और जिम्मेदारों के सामने पस्त नजर आ रहे हैं,जिस तरह से हमारे पास जानकारी है कि शहर के ज्यादातर वार्डों में इन दिनों सड़क सफाई पानी का मामला ही सुर्खियों में बना हुआ है यहां सवाल यही है कि स्थानिय नगर पालिका प्रशासन तमाम योजना और करोड़ों रुपए खर्च करके भी शहर के लोगों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं करा पा रही है,जिससे लोगों को खासी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

कई इलाकों में दो माह से नहीं हुई है सफाई: दरअसल नगर पालिका स्वच्छता विभाग की लापरवाही का आलम कुछ ऐसा है कि कुछ महीनों पहले तक तो वार्डों में 15 दिन के अंतराल से नालियों की सफाई की जा रही थी, फिर यह अंतराल एक माह और अब दो माह तक भी नालियों की सफाई नहीं हो पा रही है, इसके अलावा शहर की नालियों में कीटनाशक पाउडर आदि का छिड़काव भी नहीं किया जा रहा है, जिससे इलाकों में पसरी गंदगी, बदबू और मच्छरों की भरमार से लोगों का जनजीवन प्रभावित हो

रहा है, शहर के लोगों द्वारा शिकायतों के बाद भी नगर पालिका इस ओर ध्यान नहीं दे रही है, इस समय शहर में कई त्यौहार भी चल रहे हैं इसके बाद भी नगर पालिका का ध्यान नहीं दिया जाना, नगर पालिका की घोर लापरवाही को उजागर करता है।

कहां-कहां है ज्यादा दिक्कतें : यूं तो शहर के लगभग सभी वार्ड गंदगी की चपेट में है इसमें भी शहर के वार्ड क्रमांक 2, 3, 5, 6, 7, 8, और वार्ड 9 के इलाक़े भारी गंदगी की चपेट में है अगर यहां के लोगों की माने तो वार्ड में दो माह से भी ज्यादा समय से नालियों की सफाई नहीं किए जाने से लोगों को गंदगी और बदबू के बीच जीने को मजबूर होना पड़ रहा है, हैरानी इस बात की है कि तमाम शिकवे शिकायतों के बाद भी नगर पालिका इस ओर को ध्यान नहीं दे रही है।

सफाई कर्मचारियों की घटती संख्या से भी हो रही परेशानी: इधर शहर के 18 वार्डों के लिए सफाई विभाग में लगभग एक सैकड़ा कर्मचारियों की आवश्यकता है किंतु नगर पालिका के पास इस समय लगभग आधा सैकड़ा कर्मचारी ही काम कर रहे हैं,इनमें से भी ज्यादातर सफाई कर्मचारियों की उम्र 50 वर्ष से ज्यादा हो गई है, शहर की सफाई व्यवस्था बिगड़ने का एक यह भी बड़ा कारण है जानकारी है कि बीते लंबे समय से पार्षदों द्वारा दैनिक वेतनभोगी के पद पर 10 सफाई कर्मचारियों को रखने की मांग की जा रही है, किंतु नगर पालिका के जिम्मेदारों द्वारा इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है, इस मौके पर हमारे द्वारा शहर के कई पार्षदों से बात हुई तो लगभग सभी का यही कहना था कि आने वाले दिनों में कोई बड़ा फैसला किया जाएगा।

इनका कहना है

नगर पालिका में जब-जब बैठक होती है तब मेरे द्वारा शहर की सफाई व्यवस्था के मामले को जोर शोर से उठाया जाता है, किंतु नगर पालिका द्वारा कोई सुनवाई नहीं की जाती है, नगर पालिका में स्वच्छता विभाग के प्रभारी को बार-बार बोलने पर भी वो ध्यान नहीं देते हैं और आम जनता की पार्षदों को सुनना पड़ता है।

दीक्षा सूरजेकर सभापति,
स्वच्छता विभाग नगर पालिका परिषद आमला

मेरे द्वारा जानकारी बुलाई जाएगी कहां-कहां ऐसी दिक्कतें हैं, इस पर शीघ्र काम किया जाएगा।

वीरेंद्र तिवारी मुख्य नगर पालिका अधिकारी आमला

इनरव्हील क्लब

सेवा के प्रकल्प में एक कड़ी और जुड़ी..

नर्मदापुरम। इनरव्हील डिस्ट्रिक्ट 304 की सदस्याओं ने दृष्टिबाधित सहयोग संस्था में मंडल अध्यक्ष बीना शाह के साथ छात्रावासी बच्चों को नए कपड़े एवं बिस्किट देकर सेवा प्रकल्प में एक कड़ी और जोड़ ली.. इस समय बच्चों ने संगीत के साथ सरस्वती वंदना की प्रस्तुति देकर आगंतुक अतिथियों का मन मोह लिया.. इनरव्हील क्लब की अध्यक्ष वंदना समैया ने जानकारी देते हुए बताया पिछले कई वर्षों से इस संस्था के साथ इनरव्हील सदस्याओं को लगाव था समय-समय पर वे आकर उनके साथ समय व्यतीत करती थी साथ ही उनकी जरूरत के हिसाब से उन्हें सामग्रियां भेट करती थी। इस बार सहयोग संस्था की आरती राय से जानकारी लेकर क्लब ने सभी बच्चों के साइज के अनुसार कपड़े दिए.. जिन्हें पाकर बच्चे बेहद खुश हुए । इस मौके पर निकिता मालवीय ने गीत की प्रस्तुति दी, रश्मि का कोड़िया, रीना, मीना मीना, ऋषिका, लीला ने सामूहिक नृत्य की प्रस्तुति किया। लीला ने एकल नृत्य की प्रस्तुति दी।

नालछा के श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर (जुग्गा) पर

कलश यात्रा व गौ पूजन के साथ 11 कुंडीय शिव शक्ति महायज्ञ का हुआ श्री गणेश

11 से 15 अप्रैल तक प्रतिदिन होगा पूजन,रुद्राभिषेक एवं यज्ञ अनुष्ठान,संत महात्माओं सहित बड़ी संख्या में शामिल होंगे श्रद्धालु

निखिल ग्वाल सुबह सवेरे

नालछा। नालछा नगर के चंदलाव तालाब के बीचों बीच टापू पर विराजित श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर (जुग्गा) पर 11 कुंडीय शिव शक्ति महायज्ञ का शुभारंभ बुधवार को कलश यात्रा निकालकर व गौ पूजन कर किया गया. प्रातः मां कालिका माता मंदिर टेकरे पर माताराणी के पूजन और महाआरती के पश्चात कलश यात्रा प्रारंभ की गई जो बस स्टेंड व पंडित चंद्रशेखर आजाद मार्ग से होती हुई नगर भ्रमण कर श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर पहुंची जहां प्रसादी का वितरण कर यात्रा का समापन किया गया .यात्रा में आगे- आगे घोड़ी पर बैठे व भगवा पताका हाथ में लिए युवा मोजूद थे वही यात्रा में बैंड बाजे व ढोल नगाड़े भी शामिल थे यात्रा में बग्घी पर श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर पर निवासरत श्री पंचायती निरंजनी अखाड़ा के संत श्री श्री 1008 श्री राजेंद्र पूरी जी महाराज भी शामिल थे.यात्रा का ग्रामवासियों द्वारा रास्ते भर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया . श्रद्धालुओं द्वारा संत श्री के चरण वंदन कर आशीर्वाद लिया गया . क्षेत्र में पहली बार भव्य स्तर पर किए जा रहे अनुष्ठान को लेकर पूरे क्षेत्र में उत्साह देखा गया.इस दौरान नगर के वरिष्ठ मोहनलाल शर्मा,अरविंद चौहान, नटवर यादव,सुनील

शर्मा,सुभाष चौहान, मनोहरलाल शर्मा,ओमप्रकाश शर्मा,महेश त्रिवेदी, कमल पंवार,महेंद्र जैन,संतोष मिरदवाल,सुभाष यादव, पंडित धीरज शर्मा,मनोज मोदी,पवन कुशवाह,मोहन डावर,विनोद इंदुरकर,मनोज ग्वाल, राजेश राठौड़,सुरेश कुलकर्णी,दिलीप यादव,मोहन नामदेव,तुलसीराम कुशवाह सहित नगर के वरिष्ठ व युवाओं के साथ बड़ी संख्या में शक्ति स्वरूपा कन्या व मातृशक्ति मौजूद रही।

सुंदरकांड के साथ होगा अन्य धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन: पांच दिवसय धार्मिक अनुष्ठान के दौरान 11 अप्रैल की रात्रि में 8 बजे से संगीतमय सुंदरकांड पाठ का आयोजन होगा वही 12 अप्रैल की रात्रि में क्षेत्र के कलाकारों द्वारा तंबूरा भजन की प्रस्तुति दी जाएगी साथ ही 13 अप्रैल की

रात्रि में महिलाओं द्वारा धार्मिक भजनों की प्रस्तुति दी जाएगी।

बाबा खाटू श्याम का सजेगा दरबार होगा भव्य कीर्तन: आयोजन के तहत 14 अप्रैल को रात्रि 8 बजे से बाबा खाटू श्याम के कीर्तन का आयोजन होगा जहां बाबा का दरबार आकर्षक स्वरूप से सजाया जाएगा वही बाबा खाटू श्याम के मंगलमय भजनों की प्रस्तुति दी जाएगी।

संत समागम में देश भर से 100 से अधिक संत होंगे शामिल: आयोजन में देश भर से 100 से अधिक संतो के आगमन की भी संभावना है कई संतो को आमंत्रण दिया जा चुका है संत महात्माओं की प्रेरणा से ही श्री सिद्धेश्वर महादेव भक्त मंडल द्वारा अनुष्ठान का यह आयोजन किया जा रहा है।

संतों के कर कमलों से होगा पौधारोपण,

पर्यावरण संरक्षण को लेकर दिया जाएगा हरियाली का संदेश: आयोजन के अंतिम दिन देशभर से पधारे सभी संतो महात्माओं के कर कमलों से मंदिर परिसर में अलग-अलग प्रजाति के पौधों का रोपण किया जाएगा और पर्यावरण संरक्षण को लेकर हरियाली का संदेश भी दिया जाएगा।

कन्या पूजन के साथ होगा समापन: 15 अप्रैल को संत महात्माओं के चरण वंदन व सम्मान के साथ महायज्ञ की पूर्णाहुति एवं कन्या पूजन व कन्याभोज के साथ भंडारे का आयोजन किया जाएगा जिसमें बड़ी संख्या में नालछा सहित आसपास के क्षेत्र से श्रद्धालु शामिल होकर महाप्रसादी ग्रहण करेंगे। जानकारी श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर के मुख्य पुजारी प्रसिद्ध भगवताचार्य पंडित निर्मल इंदुरकर द्वारा दी गई।

शहर में सफेद साड़ी वाली 'रहस्यमयी' महिला का खौफ

● रात को पार्क में झूलती है झूला... देखकर कांप जाते हैं लोग ● विद्यानगर कॉलोनी में दहशत का माहौल, पुलिस ने समझाया

भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल स्थित एक कॉलोनी में अजीब सा दहशत का माहौल है। इस कॉलोनी एक सफेद साड़ी वाली महिला रात में दिखती है। यह महिला कभी कॉलोनी के पार्क में जाकर झूले पर बैठ जाती है तो कभी रॉड लेकर टहलते रहती है। अंधेरे में वह अकेले झूला झूलती दिखती है। सफेद साड़ी वाली रहस्यमयी महिला को देखकर लोग दहशत में आ जाते हैं। यह पूरा मामला विद्यानगर कॉलोनी का है। कॉलोनी के कई लोगों ने सफेद साड़ी वाली महिला को देखा है। अब घटना का वीडियो भी सामने आ गया है। इसके बाद मामले से पर्दा उठा है। दरअसल, विद्यानगर कॉलोनी में सफेद साड़ी वाली महिला का दहशत बीते 10 दिनों से है। कॉलोनी के लोग बीते सप्ताह से ही यह देख रहे थे कि एक महिला देर रात सफेद साड़ी में घूमती है। उसका लुक काफी डरावना होता था। ऐसे में लोग अकेले तो उसके आसपास भटकने की हिमाकत भी नहीं कर पाते थे। कॉलोनी के कई लोगों ने ऐसा देखा। साथ ही वह महिला कॉलोनी के पार्क में आकर झूला झूलती है। पास के घर में लगे सीसीटीवी कैमरे में महिला का झूला झूलते हुए वीडियो कैद हो गया। कॉलोनी में डर ऐसा कि बच्चों ने पार्क में जाना बंद कर दिया। सफेद साड़ी वाली महिला को देखकर लोगों के मन में कई तरह से सवाल उठ रहे हैं। कुछ लोगों को लग रहा था कि सफेद साड़ी वाली महिला चुड़ैल हो सकती है। कॉलोनी के लोगों को यही डर सता रहा था। वहीं, कुछ जगहों पर ऐसे भी मामले सामने आए हैं, जहां महिला चोरों का गैंग भी ऐसे घूमती है। गैंग के मेंबर रेकी करने के लिए इस तरह के कपड़े पहनकर निकलते हैं। ऐसे में कॉलोनी के लोगों ने कॉलोनी में पोस्टर लगा दिए हैं। हालांकि कॉलोनी के लोगों ने सीसीटीवी वीडियो को पुलिस को सौंपा है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। मामले की जांच के दौरान महिला पकड़ में आई है। इस दौरान पता चला है कि वह मानसिक रूप से बीमार है। महिला का नाम कलावती राजपूत बताया जा रहा है। वह 50 साल की है। महिला का पति यहां गार्ड का काम करता है। महिला रात को अपने घर से गार्ड बनकर कॉलोनी से निकल जाती है। साथ ही विद्या नगर में पहुंच जाती है। पुलिस ने कहा है कि लोगों को डरने की जरूरत नहीं है।

महाकाल के गर्भगृह में झुलसे सेवक की हो गई मौत

● मुंबई में 16 दिन बाद दम तोड़ा, धुलेंडी पर गुलाल से लगी आग में 14 लोग झुलसे थे

भोपाल। धुलेंडी के दिन उज्जैन के महाकाल मंदिर के गर्भगृह में आग लगने से झुलसे सेवक सत्यनारायण सोनी (80) की मौत हो गई। उन्होंने बुधवार सुबह मुंबई के अस्पताल में अंतिम सांस ली। सत्यनारायण गंभीर रूप से झुलसे थे। पहले उन्हें इंदौर के अरबिंदो अस्पताल में भर्ती कराया गया था। हालत बिगड़ने पर 8 अप्रैल को मुंबई के नेशनल बर्न यूनिट में भर्ती कराया गया था। महाकाल मंदिर में 25 मार्च की सुबह 5.49 बजे भस्म आरती के दौरान गर्भगृह में आग से 14 लोग झुलस गए थे। घायलों में 13 को इंदौर रेफर किया गया था। 1 का इलाज उज्जैन में ही चला। पुजारी पुत्र मनोज शर्मा (43), पुजारी संजय शर्मा (50) और सेवक चिंतामण (65) अभी इंदौर के अरबिंदो अस्पताल में भर्ती हैं। महाकाल मंदिर के गर्भगृह में झुलसे 13 लोगों को इंदौर के अरबिंदो अस्पताल रेफर किया गया था। सेवक सत्यनारायण सोनी को 8 अप्रैल को इंदौर से मुंबई रेफर किया गया था। वे 40 प्रतिशत झुलसे थे। अरबिंदो अस्पताल से 8 लोगों को डिस्चार्ज कर दिया गया है। 3 लोगों का इलाज चल रहा है। इनमें से मनोज शर्मा और संजय पुजारी बर्न यूनिट में भर्ती हैं। एक अन्य घायल को वार्ड में शिफ्ट कर दिया गया है। घटना की जांच में सामने आया था कि आग केमिकल वाला गुलाल फेंकने से भड़की थी। कलेक्टर सिंह ने मजिस्ट्रियल जांच के आदेश दिए थे।

भोपाल में केंद्रीय मंत्री रूपाला का पुतला फूंका

एमपी नगर में काले कपड़े पहनकर जुटे क्षत्रिय लोग

लोकसभा चुनाव में की टिकट वापस लेने की मांग

भोपाल। केंद्रीय मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला के विवादित बयान को लेकर गुरुवार को क्षत्रिय समाज ने भोपाल में प्रदर्शन किया। वे काले कपड़े पहनकर जुटे थे। नारेबाजी करते हुए उन्होंने केंद्रीय मंत्री का पुतला फूंक दिया। समाजजनों ने भाजपा से मांग की है कि राजकोट (गुजरात) से रूपाला का टिकट वापस ले और प्रत्याशी बदलें। क्षत्रिय समाज के आह्वान पर करणी सेना परिवार समेत अन्य सामाजिक संगठनों ने यह प्रदर्शन किया। करणी सेना परिवार के अध्यक्ष अजीत सिंह ने कहा कि भोपाल में केंद्रीय मंत्री का पुतला दहन कर केंद्र सरकार को संदेश दिया कि रूपाला ने क्षत्रिय समाज का अपमान किया है। ऐसे व्यक्ति का लोकसभा टिकट काटा जाना चाहिए। अध्यक्ष सिंह ने बताया, क्षत्रिय समाज बीजेपी का स्थायी वोटर रहा है। यदि बीजेपी का केंद्रीय नेतृत्व केंद्रीय मंत्री का टिकट नहीं काटता हैं तो पूरे देश में क्षत्रिय समाज प्रदर्शन करेगा। इस दौरान वोट नहीं देने की बात भी कही जाएगी। प्रदर्शन में क्षत्रिय समाज की महिलाएं भी शामिल हुईं। कृष्णा बुंदेला, सोनू राजपूत समेत कई समाजजन मौजूद थे।

अब अपने घर पर पार्टी का झंडा लगा सकेंगे कार्यकर्ता

आयोग ने बताए प्रावधान, जुलूस या सभा में चुनावी खर्च में जोड़कर बांट सकेंगे स्कार्फ, टोपी

भोपाल। राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता या समर्थक अपने घर पर अपनी इच्छा से पार्टी का झंडा, बैनर या कट-आउट लगा सकेंगे। चुनाव आयोग ने कहा है कि ऐसा करने पर आचार संहिता का उल्लंघन नहीं माना जाएगा लेकिन यदि किसी पार्टी का कार्यकर्ता या समर्थक झंडे, बैनर या कट-आउट के माध्यम से किसी प्रत्याशी विशेष या पार्टी के पक्ष में वोट मांगता है तो इसे आचार संहिता का उल्लंघन माना जाएगा और भारतीय दण्ड संहिता की धारा 171 (एच) के तहत अपराध मानकर कार्यवाही की जा सकेगी। चुनाव आयोग के निर्देशों के आधार पर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने कलेक्टर और जिला निर्वाचन अधिकारियों को इस पर अमल के निर्देश दिए हैं। आयोग ने कहा है कि अगर झंडे, बैनर पर उम्मीदवार का नाम या फोटो लगा होगा तो उसे उम्मीदवार के चुनाव खर्च में भी जोड़ा जाएगा। आयोग ने यह भी कहा है कि अगर किसी पार्टी उम्मीदवार के कार्यकर्ता एवं समर्थकों द्वारा अपने घरों पर झंडे-बैनर लगाने या प्रदर्शन करने से किसी व्यक्ति या जनसामान्य को असुविधा होती है तो इसे भी आईपीसी की धारा 171 (एच) का उल्लंघन माना जाएगा। निर्वाचन आयोग ने स्पष्ट किया है कि कार्यकर्ता या समर्थक अपने घर पर एक राजनैतिक दल के केवल तीन झंडे ही लगा सकेगा।

एक से अधिक दल का झंडा लगाना है तो यह करना होगा- आयोग ने कहा है कि अगर कोई व्यक्ति एक से अधिक पार्टी या उम्मीदवार का झंडा अपने घर पर लगाना चाहता है तो वह हर पार्टी या उम्मीदवार का एक-एक झंडा ही लगा सकेगा। उसे इस प्रकार के झंडे स्थानीय कानूनों के दायरे में ही लगाने होंगे और इस पर होने वाले खर्च का हिसाब निर्वाचन आयोग के निर्देशों के मुताबिक रखना होगा। आयोग ने पार्टी कार्यकर्ता के लिए दो पहिया, तीन पहिया और चार पहिया वाहनों पर झंडे और स्टीकर लगाने के बारे में भी निर्देश दिये हैं। आयोग ने कहा है कि पार्टी के कार्यकर्ता अपने निजी दो पहिया वाहन पर एक बाय आधा फिट का झंडा तथा एक या दो छोटे आकार के स्टीकर लगा सकता है। इसे आचार संहिता का उल्लंघन नहीं माना जाएगा लेकिन यदि वह किसी अन्य के समर्थन में ध्वज को लगाए हुए है तो इस आईपीसी के प्रावधान लागू होंगे।

कमर्शियल वाहन के लिए लेना होगी परमीशन

आयोग ने कहा है कि व्यावसायिक वाहन की स्थिति में स्वयं का वाहन होने पर भी ध्वज लगाने की अनुमति रिटर्निंग अधिकारी से लेनी होगी। आयोग ने दो पहिया वाहनों पर बैनर लगाने पर रोक लगाई है। कार्यकर्ता को अपने तीन पहिया अथवा चार पहिया वाहन एवं ई-रिक्शा पर भी एक बाय आधा फिट का झंडा लगाने की ही अनुमति दी है। कार्यकर्ता तीन पहिया अथवा चार पहिया वाहन या ई-रिक्शा पर भी दो छोटे आकार के स्टीकर ही लगा सकेगा। आयोग के मुताबिक वाहनों पर लगाए जाने वाले झंडे की स्टिक या पोल तीन फिट से अधिक की नहीं होनी चाहिए। निर्वाचन आयोग ने रोड-शो में केवल एक प्रचार वाहन पर वो भी रिटर्निंग अधिकारी की अनुमति से एक फिट बाय आधा फिट के इण्डे का इस्तेमाल करने की इजाजत दी है। आयोग के मुताबिक यदि किसी पार्टी का अन्य पार्टी से चुनाव पूर्व गठबंधन है तो उस स्थिति में दोनों पार्टियों का एक-एक झंडा प्रचार वाहन में लगाया जा सकता है। आयोग ने रोड शो के दौरान छह बाय चार फिट आकार का एक बैनर हाथ में लेकर चलने की अनुमति दी है। वाहनों में झंडे या स्टीकर का उपयोग इस तरह से किया जाना चाहिए कि उससे वाहन चलाने वाले को देखने में दिक्कत न हो और न ही सड़क पर चलने वाले किसी अन्य वाहन चालक अथवा यात्रियों को किसी तरह की कठिनाई हो। आयोग ने प्रचार वाहनों पर स्पॉट, फोकस, फ्लेशिंग एवं सर्च लाइट तथा हूटर के इस्तेमाल पर भी रोक लगाई है। आयोग ने साफ किया है कि कोई भी व्यक्ति सक्षम अधिकारी की अनुमति के बिना वाहनों पर बड़े आकार के झंडे, स्टीकर और बैनर का इस्तेमाल नहीं कर सकेगा।

सभा में बांट सकते हैं स्कार्फ, टोपी

आयोग के मुताबिक सभा या जुलूस में टोपी, मास्क या स्कार्फ जैसी चीजों के वितरण की इजाजत उम्मीदवार या दल को दी जा सकती है। इसे भी आचार संहिता का उल्लंघन नहीं माना जाएगा बशर्ते इस हेतु उम्मीदवार द्वारा इसके लिए खर्च के संबंध में सूचना दे दी गई हो लेकिन यदि उम्मीदवार या पार्टी द्वारा जुलूस या सभाओं में साड़ी, शर्ट जैसे वस्त्रों का वितरण किया जाता है तो इसे आचार संहिता का उल्लंघन माना जाएगा।

दीपक जोशी बोले-अब मैं बीजेपी में नहीं जाऊंगा

कहा-वीडी और नरोत्तम ने 2 नेताओं से घर जाकर माफी मांगने को कहा, मैंने मना कर दिया

भोपाल। बीजेपी की न्यू जॉइनिंग टोली के चीफ डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने दावा किया कि 6 अप्रैल को स्थापना दिवस पर 2 लाख 82 हजार नए सदस्य बने हैं। नरोत्तम मिश्रा ने पूर्व सीएम कैलाश जोशी के बेटे दीपक जोशी की घर वापसी के सवाल पर कहा कि पार्टी में सबकी सहमति से जॉइनिंग होती है। दीपक कहा- बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा और पूर्व मंत्री नरोत्तम मिश्रा का कॉल आया था। उन्होंने 2 नेताओं से घर जाकर माफी मांगने को कहा तो मैंने मना कर दिया। मेरे मामले को कुछ लोगों ने पर्सनल इश्यू बना लिया है। अब मैं बीजेपी में नहीं जाऊंगा। पूर्व गृहमंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने सोमवार को पीसीसी चीफ जीतू पटवारी के उन दावों को लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस की, जिसमें बीजेपी में जॉइनिंग के फर्जी आंकड़े पेश करने की बात कही थी। नरोत्तम मिश्रा से पूछा गया कि आपने कांग्रेस के दीपक को तो ले लिया, लेकिन बीजेपी के दीपक के लिए दरवाजे बंद क्यों हैं। इसके जवाब में नरोत्तम मिश्रा ने कहा- दरवाजे किसी के लिए बंद नहीं हैं। जॉइनिंग के लिए पार्टी की प्रक्रिया है। हमने कोई भी जॉइनिंग सीधे नहीं की है। जिला स्तर, मंडल स्तर पर जनप्रतिनिधियों से बातचीत करके ही निर्णय लिया है। उसका परिणाम है कि हमारी पार्टी में कहीं नाराजगी, बगावत या बिखराव नहीं है। पूरी पार्टी संगठित होकर चुनाव लड़ रही है। पूर्व मंत्री दीपक जोशी ने कहा- कुछ लोगों ने मेरे मामले को पर्सनल इश्यू बना लिया है। मैं उन लोगों के नाम नहीं लेना चाहता, लेकिन इतना जरूर कहना चाहता हूं कि मैं कांग्रेस में हूं। अब और मजबूती से कांग्रेस के उम्मीदवारों के लिए चुनाव प्रचार कर रहा हूं। अभी छिंदवाड़ा में नकुलनाथ के प्रचार में आया हूं। मेरे पास 9 मार्च को बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा और पूर्व गृहमंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा का फोन आया था। उन्होंने 2 नेताओं के नाम लिए। कहा कि आप इनसे माफी मांग लो। मैंने कहा कि पार्टी से माफी मांगनी हो, तो मैं तैयार हूं, लेकिन घर जाकर किसी व्यक्ति विशेष से माफी नहीं मांगूंगा। चूंकि मेरे ऊपर करीबियों की ओर से घरवापसी का दबाव था, इसलिए मैंने सहमति दे दी थी, लेकिन मैंने पहल नहीं की। पहल बीजेपी की ओर से की गई थी। सूत्रों की मानें तो मप्र भाजपा ने विधानसभा चुनाव में अधिकृत उम्मीदवार के खिलाफ बागी होकर चुनाव लड़ने वालों की घरवापसी के लिए दिल्ली राष्ट्रीय नेतृत्व से सहमति मांगी है। एमपी बीजेपी ने करीब 22 बागियों का प्रस्ताव दिल्ली भेजा है। दिल्ली की मंजूरी मिलने के बाद एक साथ इनकी जॉइनिंग कराई जा सकती है। इन नेताओं में दीपक जोशी, भिंड के अटेर से पूर्व विधायक मुन्ना सिंह भदौरिया, भिंड के पूर्व विधायक संजीव सिंह कुशवाह, सतना के शिवा चतुर्वेदी, सागर के पूर्व सांसद लक्ष्मीनारायण यादव के बेटे सुधीर यादव, सागर से आम आदमी पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ चुके मुकेश जैन ढाना भी शामिल हैं।

बीजेपी नेताओं को तेज रफ्तार कार ने रौंदा, 2 की मौत

● केंद्रीय मंत्री सिंधिया ने निरस्त किए सभी चुनावी कार्यक्रम

भोपाल। मध्य प्रदेश के गुना में एक तेज रफ्तार कार ने सड़क किनारे खड़े तीन लोगों को बुरी तरह रौंद दिया। जिसके बाद दो लोगों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई तो वहीं 2 अन्य व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हुए हैं। इन्हें जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। घटना के बाद क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। घटना को लेकर केंद्रीय मंत्री और भाजपा प्रत्याशी ज्योतिरादित्य सिंधिया ने अपने सभी चुनावी कार्यक्रम निरस्त कर दिए हैं।

मामला गुना के एचडीएफसी बैंक के पास नानाखेड़ी रोड का है। रात 12:00 बजे करीब बीजेपी नेता आनंद रघुवंशी, सरपंच कमलेश यादव और मनोज धाकड़ सड़क किनारे खड़े हुए थे। तभी काले कलर की तेज रफ्तार कार आई और तीनों को बुरी तरह टक्कर मार दी और फिर जाकर डिवाइडर में टकरा गई। प्रत्यक्षदर्शियों ने तुरंत घायलों को उठाकर जिला अस्पताल उपचार के लिए पहुंचाया और फिर गंभीर हालत देखते हुए भोपाल रेफर किया। यहां रास्ते में आनंद रघुवंशी और कमलेश यादव की मौत हो गई। मनोज धाकड़ को उपचार के लिए भर्ती कराया गया है। सड़क दुर्घटना में बीजेपी कार्यकर्ताओं के निधन और एक कार्यकर्ता की गंभीर स्थिति को देखते हुए केंद्रीय मंत्री सिंधिया ने अपने सभी कार्यक्रम कैंसिल कर दिए। उन्हें गुना और बामोरी के पोलिंग बूथ पर कार्यकर्ता बैठक लेनी थी। इसके अलावा ओझा समाज की बैठक और गुना विधानसभा चुनाव कार्यालय का उद्घाटन भी करना था। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मृतकों को शोक संवेदनाएं व्यक्त की हैं। सिंधिया ने कहा कि विपत्ति की घड़ी में, मैं उनके परिजनों के साथ उनके पुत्रों की भांति ही अडिग खड़ा हूं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वो दिवंगत आत्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान दें और उनके परिजनों को इस विकट परिस्थिति का सामना करने की शक्ति दें।

शहर में मेट्रो के दूसरे फेज का काम जून में

8.77 किमी लाइन बिछाने में खर्च होंगे 1540 करोड़, 2 स्टेशन अंडरग्राउंड रहेंगे

भोपाल। भोपाल मेट्रो के दूसरे फेज का काम जून में शुरू होगा। सुभाष नगर से करोंद के बीच 8.77 किमी लाइन को बिछाने में कुल 1540 करोड़ रुपए खर्च होंगे। इनमें 3.39 किमी लंबा अंडरग्राउंड रूट रहेगा। जिसमें 2 मेट्रो स्टेशन भी बनेंगे। मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन के एमडी सीबी चक्रवर्ती भी प्लान को देख चुके हैं। मार्च में सीएम डॉ. मोहन यादव ने दोनों काम का वर्चुअली भूमिपूजन किया था। मेट्रो की ऑरेंज लाइन यानी एम्स से करोंद तक का रूट कुल 14.99 किमी लंबा है। इसमें सुभाष नगर से एम्स के बीच 6.22 किमी का प्रायोरिटी कॉरिडोर है। 8 में से 5 स्टेशनों के बीच अक्टूबर 2023 में ट्रायल रन हुआ था। रानी कमलापति, सुभाष नगर, केंद्रीय स्कूल, डीबी के सामने और एमपी नगर के स्टेशनों का काम 90 प्रतिशत से ज्यादा पूरा हो चुका है, जबकि एम्स, अलकापुरी और डीआरएम ऑफिस स्टेशनों का सिविल वर्क पूरा हो चुका है, जबकि फिनिशिंग से जुड़े काम निपटाए जा रहे हैं। वहीं, डीआरएम ऑफिस चौराहे पर स्टील ब्रिज का निर्माण हो रहा है। रेलवे ट्रैक के ऊपर से भी ब्रिज गुजरेगा। इसके लिए रेलवे से ब्लॉक मांगा गया है। अंडरग्राउंड रूट के लिए मेट्रो कॉर्पोरेशन के एमडी सीबी चक्रवर्ती ने सोमवार को मीटिंग भी की है। जिसमें निर्माण एजेंसी, एक्सपर्ट और अफसर शामिल हुए। एमडी ने अंडरग्राउंड रूट के पूरे प्लान को भी समझा। लोकसभा चुनाव की आचार संहिता खत्म होने के बाद काम की शुरुआत किए जाने की बात भी कही है। सुभाष नगर डिपो से करोंद तक के रूट में कुल 2 फेज में काम होगा। कुल 8.77 किमी में से 5.38 किमी हिस्से में 6 एलिवेटेड मेट्रो स्टेशन बनेंगे। इसमें 650 करोड़ रुपए खर्च होंगे। यूआरसी कंस्ट्रक्शन यह काम करेगी। यही कंपनी सुभाष नगर, डीबी मॉल, एमपी नगर, केंद्रीय स्कूल, आरकेएमपी, अलकापुरी, डीआरएम ऑफिस और एम्स स्टेशनों का काम भी कर रही है।